

Initial

ओ३य ॥

स्वामीजी

संस्कृत-भाषा-प्रथमं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (जि०मेरठ) निवासि-स्वामि-

तुलसीराम-शर्म-विरचितम् ॥

—+*+—

निर्मात्रा तुलसीराम स्वामिना स्वप्रवन्धेन स्वकीये
स्वामियन्त्रालये मुद्रितम् प्रकाशितम् ॥

मेरठ

संवत् १९५३ ता० २१-२-५३

इसकी रजिस्टरी कराई गई और किसीको
छापनेका अधिकार नहीं है ॥

“ऋगादिभाष्यभूमिकेन्द्रपरागे द्वितीयोऽशः”

ऐसा और इतना संक्षेपसे अथ तक कोई नहीं छपा ! शब्दप्रमाण
द्वारा “मन्त्रब्राह्मण दोनों वेद हैं वा क्या” ? इत्यादिका निर्णय
७१ प्रमाणोंसे किया है । इसमें अथर्ववेद, तैत्तिरीय, शतपथब्रा०,
साङ्ख्य, आंगुलसूत्र, प्रातिशाल्ह्य, कात्यायन, बौधायन, पणिनि,
मीमांसा, मनुस्मृति, ऐतरेयब्रा०, अथर्वशास्त्र, महाभाष्य, शौशिकसूत्र,
अमरकोश, लघुशब्ददेन्दुशेखर, निरुक्तभूषणनेकोषभाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद,
वेदान्तसूत्र, न्यायदर्शन, तैत्तिरीयआरण्यक, पितृलसूत्र, चरणव्यूह,
न्यायविस्तर इन २७ ग्रन्थोंसे बहुत से प्रमाण संकलित करके (संनै)
तुलसीराम स्वामीने बनाया ॥

भूमिका ॥

मैंने इस पुस्तकको इसलिये लिखा है कि भारतके ऋषि महर्षियोंने यद्यपि पुराने समयके अनुगार संस्कृतभाषाके उत्तम २ ग्रन्थ रचे, परन्तु समयके हेर फेरसे आज कलके समयमें नई शिक्षाप्रणाली के समान हुगम प्रतीत नहीं होते । हां, पूर्ण परिश्रम करने पर तो पूर्ण फलदायक हैं, परन्तु जिस प्रकार आज कल छोटे २ विद्यार्थी "प्राइमर" पढ़ते २ ही परस्पर "अंगरेजी" शब्द बोल २ कर प्रतिदिन उत्साहको बढ़ाते हैं, जब तक इसी प्रकार हमारी देववाणी की पुस्तकें प्रचरित न की जायें तब तक देववाणीका जीर्णोद्धार दुर्घट है ।

द्वितीय कारण पुस्तक लिखनेका यह भी है कि आज कल प्रायः शिक्षित पुरुष संस्कृतमें रुचि करते हैं परन्तु न तो उनको कोई अध्यापक ही सुलभतासे मिलता न अब तक संस्कृतमें कोई ऐसी पुस्तक निर्मित हुई कि जिससे बिना अध्यापकके स्वयम् कुछ सीख सकें । उनको ये पुस्तकें स्वयम् संस्कृत सिखावेंगी ॥

पांच बारकी छपी ६००० प्रथम पुस्तकोंके शीघ्र चूक जानेसे छठी बार छपी है इससे मैंने अपना श्रम सफल समझा । द्वितीय भाग ३ बार और तृतीय भाग दो बार छप चुके हैं । चतुर्थ भाग छप रहा है ॥

तुलसीराम स्वामी

ज्ञापन ॥

हमारे यहांसे "वेदप्रकाश" नामक मासिक पत्र प्रतिमास मनोहर वैदिक-सिद्धान्तोंकी व्याख्यासे विभूषित प्रकाशित होता है जिसके द्वारा वैदिकधर्मका गौरव देश देशान्तरमें प्रचरित होता है । वार्षिक मूल्य केवल १) मात्र ॥

तुलसीराम स्वामी-सम्पादक "वेदप्रकाश"-मेरठ

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-प्रथमं पुस्तकम् ॥

स्वर

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ अं अः* ॥

व्यञ्जन

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण ।

त थ द ध न । प फ व भ म । य र ल व ।

श ष स ह ॥

बारह अक्षरी

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ।

इसी प्रकार, ख खा खि खी खु खू खे खै खो इत्यादि जानो ॥

ज के नीचे बिन्दी लगानेसे ज़ होता है । ऐसे ही ख क ग इ ङ ऋ जानो ॥

कर । भर । अब । तब । जब । हम । तुम । वह । केवल । पाठक । पू-
जक । शोभन । संवत् । बैठक । श्रीभाराम । जयदेव । अंगरेज़ ॥ आओ । जा-
ओ । बैठो । चलो । ठहरो । साओ ॥ काम कर । जल भर । अब घर जा ।
तब सत पढ़ना । जब हम जायेंगे । तुम कहां जाते हो । वह नहीं जाता । तुम
केवल बैठ रहते हो । अद्वालीसवां संवत् है । अपने पाठकसे पढ़ो ॥

संयुक्त अक्षर-उदाहरण सहित ॥

न+त+र=नर, यन्त्रालय लाइब्रेरियेका नाम है । क+र=कर, कालचक्रका
हेर फेर है । ज+य=जय, अंगरेज़का राज्य है । स+त=स्त, हमारी पुस्तक लाओ ।
न+द=न्द, मन्दिरमें बैठो । ण+ड=ण्ड, पण्डितका कहना जानो । द+द=द्व,
यह रूढ़ी कागज़ है । द+य=द्य, र+य=र्य, विद्यार्थी पढ़ते हैं । र+व=र्व, गर्व
मत करो । व+य=वय, ख+य=ख्य, व्याख्यान सुननेको चलो । स+क=स्क, त-
स्कर चोरका नाम है । ग+र=ग्र, यह छोटा ग्राम है । न+त=न्त, सबका अन्त है ।

*यद्यपि स्वरोंमें अ इ उ ऋ लृ ह्रस्व, और आ ई ऊ ऋ ए ऐ ओ औ दीर्घ,
तथा अ३ इ३ उ३ ऋ३ लृ३ ए३ ऐ३ ओ३ औ३ मृत हैं इस कारण ९ स्वरोंके २२
भेद हैं तथा “अं, अः” ये दो स्वर नहीं किन्तु अ के साथ अनुस्वार और विसर्ग
का स्वरूप है परन्तु सम्प्रति भाषामें ऐसा ही प्रचार हो रहा है ॥

प र-प्र, प्रथम पुस्तक पढ़ो । द ऋ-दू, दूढ़का अर्थ समझत है । र रा-रं, कर्ण कालको कहते हैं । श व-श्व, श र-त्र, द ध-दु, ईश्वरमें अर्पण करो । द व-द्व, यह द्वितीय पुस्तक है । त स-त्स, कुत्ता बुराई कहाती है । र ध-र्ध, अर्ध हाथ धोनेकेलिये जलको कहते हैं । त ऋ-तृ, तृतीय पुस्तक पढ़ । म य-भ्य, य छ-च्छ, कम्बल अच्छा है । प न-प्र, स व-स्व, स्वप्न देखता था । क ऋ-कृ, प रा-प्रा, कृष्ण बड़े योगी थे । म स-स्म, गुम्मत ऊंची है । त व-त्व, त्वम् का अर्थ तू है । क य-क्य, क्या करते हो । ष ठ-ष्ठ, षष्ठ छठेका मास है । कुष्ठ रोगका नाम है । ष ट-ष्ट, दुष्ट बुरेको कहते हैं । ग ऋ-गृ, गृह की जाओ । त त-त, मत्त पागलको कहते हैं । श य-श्य, श्याम कम्बल है । व द-वद, शब्द सुनो । क त-क्त, रक्त बहता है । भ य-भ्य, पड़नेका अभ्यास करो । म य-ह्य, त य-त्य, आलस्य त्यागदो । ल द-लद, जल्दी मत करो । क स-स्म, ड क-डू, रुक्मका कङ्कण है । न द-न्द, र य य-र्य, इन्द्र सूर्यको कहते हैं । स त र-स्व, शास्त्रके अनुसार चलो । र ध व-ध्व, ग न-ग्न, अग्निशिखा सदा ऊर्ध्वगामिनी रहती है । क ष-क्ष, क्षमा करो । ज ञ-ज्ञ, ज्ञानसे सुख मिलता है ॥

संख्या एक से सौ तक ॥

१	११	२१	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१
२	१२	२२	३२	४२	५२	६२	७२	८२	९२
३	१३	२३	३३	४३	५३	६३	७३	८३	९३
४	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४
५	१५	२५	३५	४५	५५	६५	७५	८५	९५
६	१६	२६	३६	४६	५६	६६	७६	८६	९६
७	१७	२७	३७	४७	५७	६७	७७	८७	९७
८	१८	२८	३८	४८	५८	६८	७८	८८	९८
९	१९	२९	३९	४९	५९				
१०	२०	३०	४०	५०	६०				

प्रथमः पाठः १ ॥

सः-वह
तौ-वे दोनों
ते-वे (सब)

त्वम्-तू
युवाम्-तुम दोनों
यूयम्-तुम (सब)

अहम्-मैं
आवाम्-हम दोनों
वयम्-हम (सब)

गम् (लृ) (धातु)-जाना

सः गच्छति-वह जाता है
तौ गच्छतः-वे दोनों जाते हैं
ते गच्छन्ति-वे (सब*) जाते हैं
त्वम् गच्छसि-तू जाता है
युवाम् गच्छथः-तुम दोनों जाते हो
यूयम् गच्छथ-तुम (सब) जाते हो
अहम् गच्छामि-मैं जाता हूँ
आवाम् गच्छावः-हम दोनों जाते हैं
वयम् गच्छामः-हम (सब) जाते हैं

आगम् (धातु) आना

सः आगच्छति-वह आता है
तौ आगच्छतः-वे दोनों आते हैं
ते आगच्छन्ति-वे (सब) आते हैं
त्वम् आगच्छसि-तू आता है
युवाम् आगच्छथः-तुम दोनों आते हो
यूयम् आगच्छथ-तुम (सब) आते हो
अहम् आगच्छामि-मैं आता हूँ
आवाम् आगच्छावः-हम दोनों आते हैं
वयम् आगच्छामः-हम (सब) आते हैं

द्वितीयः पाठः २ ॥

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

हम जाते हैं । वे जाते हैं । तुम जाते हो । वह आता है । तू जाता है ।
हम दोनों आते हैं । तुम दोनों जाते हो । वे दोनों जाते हैं । देवदत्त आता
है । शोभाराम आता है । विष्णुदत्त आता है ॥

तृतीयः पाठः ३ ॥

तिष्ठति-ठहरता है ।

पश्यति-देखता है ।

पठति-पढ़ता है ।

धावति-दौड़ता है ।

क्रीडति-खेलता है ।

लिखति-लिखता है ।

(नीचे लिखे वाक्योंका संस्कृत बनाओ)

मैं ठहरता हूँ । वे पढ़ते हैं । तुम खेलते हो । हम देखते हैं । वह दौड़ता
है । तू लिखता है । वे दोनों पढ़ते हैं । तुम दोनों खेलते हो । हम दोनों

*“सब” कहनेसे बहुवचन समझो अर्थात् दो से अधिकका अर्थ समझो ।

ति. तः, न्ति, सि, यः, थ, त्ति, त्वः, त्वम्, ये नौ प्रत्यय लगाकर “ पठ ”

आ. नी नी २ रूप “गच्छति” आदि के समान बना लो ॥

लिखते हैं। वे दोनों जाते हैं। विष्णुमित्र लिखता है। यज्ञदत्त पढ़ता है।
शोभाराम खेलता है ॥

चतुर्थः पाठः ४ ॥

गृह शब्दकी सात विभक्तियां—

- | | | |
|---|-----------------------------------|--|
| १ | { गृहम् = घर | { गृहात्-घरसे |
| | { गृहे = दोनों घर | { गृहाभ्याम्-दोनों घरोंसे |
| | { गृहाणि = (सब) घर | { गृहेभ्यः(सब) घरोंसे |
| २ | { गृहम् = घरकी | { गृहस्य-घरका, के, की |
| | { गृहे = दोनों घरोंकी | { गृहयोः-दोनों घरोंका, के, की |
| | { गृहाणि = (सब) घरोंकी | { गृहाणाम्-(सब) घरोंका, के, की |
| ३ | { गृहेण=घरसे, के साथ | { गृहे-घरमें, पै, पर |
| | { गृहाभ्याम्=दोनों घरोंसे, के साथ | { गृहयोः-दोनों घरोंमें, पै, पर |
| | { गृहेः=(सब) घरोंमें, के साथ | { गृहेषु-(सब) घरोंमें, पै, पर |
| ४ | { गृहाय=घरके लिये | इसी प्रकार मन्दिर, पुस्तक, धन,
वन, पुष्प, फल, स्थान आदि शब्दोंकी
विभक्तियां जानो ॥ |
| | { गृहाभ्याम्=दोनों घरोंके लिये | |
| | { गृहेभ्यः=(सब) घरोंके लिये | |

(संस्कृत वनाओ)

तुम घरको जाते हो। हम मन्दिरमें आते हैं। तुम घरसे आते हो।
वह घरकेलिये दौड़ता है। वे पुस्तकको लिखते हैं। वह पुस्तक के साथ खे-
लता है। हम मन्दिरमें जाते हैं। तुम मन्दिरमें पढ़ते हो। वे दोनों पुस्तक
को लिखते हैं। तुम दोनों घरकेलिये दौड़ते हो। हम (सब) मन्दिरमें आते
हैं। वे (सब) पुस्तकोंको पढ़ते हैं। वह धनमें खेलता है। हम वनमें पुष्पों
को देखते हैं। यज्ञदत्त फलोंकेलिये दौड़ता है ॥

पञ्चमः पाठः ५ ॥

न=नहीं। सुष्ठु=अच्छे। वरम्=अच्छे। नितान्तम्=बिल्कुल। त्वरया=जल्दीसे ॥

सः न पठति=वह नहीं पढ़ता। ते त्वरया धावन्ति=वे जल्दीसे दौड़ते
हैं। यूयम् सुष्ठु पठथ=तुम (सब) अच्छे पढ़ते हो। वयम् नितान्तम् न क्रीडामः=
हम बिल्कुल नहीं खेलते। सः त्वरया पठति=वह जल्दीसे पढ़ता है। ते वरम्
लिखन्ति=वे अच्छे लिखते हैं। यूयम् त्वरया गच्छथ=तुम जल्दीसे जाते
वयम् त्वरया न धावामः=हम जल्दीसे नहीं दौड़ते
तुम दोनों घरमें नहीं पढ़ते ॥

घष्ठः पाठः ६

कः=(पुंलिङ्ग) कौन । का=(स्त्रीलिङ्ग) कौन । किम्=(नपुंसक) क्या ।
अस्ति=है । भवति=है । ददाति=देता है, देती है ॥

कः गच्छति=कौन जाता है । का गच्छति=कौन जाती है । विष्णुमित्रः
किम् ददाति=विष्णुमित्र क्या देता है । सः कः अस्ति=वह कौन है । यशोदा
का भवति=यशोदा कौन है । त्वम् कः=तू कौन ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

विष्णुशर्मा क्या पढ़ता है । रुक्मिणी क्या देती है । मैं क्या पढ़ता हूँ ।
तुम क्या लिखते हो । यह कौन दौड़ता है । मैं क्या लिखता हूँ । कौन नहीं
पढ़ता । घरसे कौन आता है । मन्दिरमें कौन पढ़ता है । घरमें कौन दौ-
ड़ता है । कौन अच्छा लिखता है । कौन नहीं लिखता । कौन घरसे नहीं
आता । धर्मदत्त क्या पढ़ता है । विष्णुमित्र क्या लिखता है ॥

सप्तमः पाठः ७ ॥

कुत्र=कहाँ । तत्र=वहाँ । अत्र=यहाँ । उपरि=ऊपर । नीचे=नीचे ॥

तत्र कः पठति=वहाँ कौन पढ़ता है । अत्र अहम् लिखामि=यहाँ मैं लिखता
हूँ । कृष्णचन्द्रः उपरि गच्छति=कृष्णचन्द्र ऊपर जाता है । अहम् नीचे न पठा-
मि=मैं नीचे नहीं पढ़ता । सः उपरि किम् पठति=वह ऊपर क्या पढ़ता है ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वह नीचे नहीं जाता । तुम वहाँ क्या पढ़ते हो । हम यहाँ नहीं आते ।
वे नीचे जाते हैं । ऊपर कौन है । वे (सब) वहाँ क्या लिखते हैं । मैं वहाँ
बिस्मिल नहीं जाता । वहाँ कौन नहीं पढ़ता । ऊपर कौन खेलता है । हम
नीचे नहीं जाते । तुम घरमें क्या पढ़ते हो । वे वहाँ नहीं खेलते । हम ऊपर
पढ़ते हैं । वे (सब) वहाँ मन्दिरमें क्या पढ़ते हैं । हम (सब) घरको नहीं
जाते । तुम दोनों नीचे क्या पढ़ते हो ॥

अष्टमः पाठः ८ ॥

दूरम्=दूर । अत्र=और । तदनु=उसके बाद । एवम्=ऐसा । एषः=(पुंलिङ्ग)
यह । एषा=(स्त्रीलिङ्ग) यह । एतत्=(नपुंसक) यह । यः=(पुं०) जो ।
या=(स्त्री०) जो । यत्=(नपुं०) जो । यथा=जैसे । तथा=वैसे । सा=(स्त्री०)
वह । तत्=(नपुंसक) वह ॥

ते दूरम् गच्छन्ति—वे दूर जाते हैं । एषा का अस्ति—यह (स्त्री) कौन है । या गच्छति सा पठति—जो जाती है वह पढ़ती है । एषः यथा पठति तथा लिखति—यह जैसे पढ़ता है, वैसे लिखता है । वयम् तदनु गच्छामः—हम (सब) उसके बाद जाते हैं । सः यूयम् च कुत्र गच्छथ—वह और तुम कहां जाते हो । यूयम् वयम् च तत्र न पठामः—तुम (सब) और हम (सब) वहां नहीं पढ़ते । अहम् युवाम् च न क्रीडामः—मैं और तुम दोनों नहीं खेलते । अत्र तत्र च वयम् एतत् न पठामः—यहां और वहां हम यह नहीं पढ़ते ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वे और तुम (सब) कहां जाते हो । हम दोनों और तुम दोनों ऐसे नहीं पढ़ते जैसे वह पढ़ता है । वह जो (नपुंसक) पढ़ता है सो नहीं लिखता । विष्णु-मित्र कहां जाता है और उसके बाद क्या पढ़ता है । हम दूर नहीं जाते ॥

नवमः पाठः ९ ।

मम—मेरा, मेरी, तव—तेरा, तेरी । तस्य—उसका, के, की । अस्माकम्—हमारा, रे, री । युष्माकम्—तुम्हारा, रे, री । तेषाम्—उनका, के, की । यस्य—जिस का, के, की । येषाम्—जिनका, के, की ॥

पुस्तकम्—पोथी । लेखनी—कलम । वस्त्रम्—कपड़ा । मसीपात्रम्—दायात । पत्रम्—कागज । उपानत्—जूता । उपवस्त्रम्—रुमाल । पाषाणपट्टिका—स्लेट ॥

मम पुस्तकम्—मेरी पोथी । तव वस्त्रम्—तेरा कपड़ा । तस्य लेखनी—उसका कलम । तेषाम् पुस्तकम्—उनका पुस्तक । येषाम् पुस्तकम्—जिनका पुस्तक । मम उपानत् कुत्र अस्ति—मेरा जूता कहां है । तव मसीपात्रम् कुत्र अस्ति—तेरी दायात कहां है । सः मम पुस्तकम् न ददाति—वह मेरी पोथी नहीं देता । विष्णुमित्रः तेषाम् गृहं गच्छति—विष्णुमित्र उनके घरको जाता है । एतत् युष्माकम् उपवस्त्रम् अस्ति—यह तुम्हारा रुमाल है । एतत् कस्य अस्ति ?—यह किसका है ? । मम पाषाणपट्टिका—मेरी स्लेट ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वह मेरी दायात नहीं देता । तुम (सब) मेरा पुस्तक पढ़ते हो । मैं तुम्हारा पुस्तक नहीं पढ़ता । वे सब हमारे घरको जाते हैं । मेरा जूता कहां है । यह (नपुंसक) तुम्हारा पुस्तक है । तुम्हारी स्लेट घरमें है ॥

दशमः पाठः १० ॥

माम्-मुझको । त्वाम्-तुझको । तम्-उसको । आयाम्-हम दोनोंको । युवाम्-तुम दोनोंको । तौ-(पु०) उन दोनोंको । अस्मान्-हम (सबों) को । युष्मान्-तुम (सबों) को । तान्-(पु०) उन (सबों) को । मारयति--मारता है । क्रीडयति--खेलाता है । भर्त्सयति--घुड़कता है । भोजयति--खिलाता है । हारयति--हंसाता है । पाठयति--पढ़ाता है । जानाति--जानता है । जानीतः--वे दोनों जानते हैं । जानन्ति--वे (सब) जातते हैं ॥

सः माम् मारयति--वह मुझको मारता है । तौ सां जानीतः--वे दोनों मुझको जानते हैं । सः अस्मान् जानाति--वह हम (सबों) को जानता है । नन्दकिशोरः माम् क्रीडयति--नन्दकिशोर मुझको खेलाता है । विष्णुशर्मा अस्मान् हारयति--विष्णुशर्मा हम (सबों) को हंसाता है । प्रियदर्शनः आयाम् भोजयति--प्रियदर्शन हम दोनोंको खिलाता है । शम्भुशर्मा अस्मान् भर्त्सयति--शम्भुशर्मा हम (सब) को घुड़कता है । अहम् त्वाम् पाठयामि--मैं तुझको पढ़ाता हूँ । आयाम् युवाम् भोजयावः--हम दोनों तुम दोनोंको खिलाते हैं । ते युष्मान् जानन्ति--वे (सब) तुम (सबों) को जानते हैं । तौ त्वाम् मारयतः--वे दोनों तुझको मारते हैं । अहम् तम् पाठयामि--मैं उस (पु०) को पढ़ाता हूँ । त्वम् तौ (पु०) भर्त्सयसि--तू उन दोनोंको घुड़कता है । सः तान् (पु०) क्रीडयति--वह उन सबोंको खेलाता है ।

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वे (सब) मुझको मारते हैं । हम (सब) उसको जानते हैं । मैं उसको नहीं जानता हूँ । मैं तुझको नहीं जानता । तू मुझको जानता है ॥

एकादशः पाठः ११ ॥ एकादशः

मया-मैंने । त्वया-तूने । तेन-उसने । आयाम्याम्-हम दोनोंने । युवाम्याम्-तुम दोनोंने । ताभ्याम्-उन दोनोंने । अस्माभिः--हम (सबों) ने । युष्माभिः--तुम (सबों) ने । तैः--उन (सबों) ने । कृतम्--(नपुंसक) किया । पठितम्--(नपुंसक) पढ़लिया । भुक्तम्--(नपुंसक) खालिया । मारितः--(पुरुष) मारा । पाठितः--(पुरुष) पढ़ाया । अलङ्कृतम्--(नपुंसक) सजायदिया । स्थानम्-मकान ॥ मया भुक्तम्-मैंने खालिया । त्वया स्थानम् अलङ्कृतम्-तूने मकान सजायदिया । मया धर्मदत्तः पाठितः--मैंने धर्मदत्त पढ़ाया । तेन अहं मारितः--उसने मुझे मारा । मया सः मारितः--मैंने उसे मारा ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

हम (सबों) ने पढ़ लिया । तुम (सबों) ने नहीं पढ़ा । उन दोनोंने अरुआ पढ़ा । हम दोनोंने स्थान सजाय दिया । उसने बिलकुल नहीं पढ़ा । उन दोनोंने मकान सजाय दिया । हम (सबों) ने नहीं पढ़ा ॥

भुक्ता=खाय ली । मारिता=मारी, पीटी । पाठिता=पढ़ा दी । अलङ्कृता=सजाय दी ॥ मया पाठशाला अलङ्कृता=मैंने पाठशाला सजाय दी । तेन यशोदा पाठिता=उसने यशोदा पढ़ा दी । युवाभ्याम् यशोदा मारिता=तुम दोनोंने यशोदा मारी, पीटी ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

सत्तने सुभद्रा पढ़ाई । यह उसने पढ़ाई है । मैंने वह (स्त्री) नहीं पीटी । वह (स्त्री) क्या देती है । तुम कहां जाते हो ॥

द्वादशः पाठः १२०

किं त्वया देवनागरीपाठशाला दृष्टा=क्या तूने देवनागरीपाठशाला देखी । दृष्टा=देखी । तत्र कति छात्राः पठन्ति=वहां कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं ? । सया दशतम्=सबासौ । तत्र कीदृशी पाठनव्यवस्थाऽस्ति=वहां कैसी पढ़ाने की रीति है ? । किं कथयामि अत्युत्तमाऽस्ति=क्या कहूँ अत्युत्तम है । छात्राणां भोजनादि-प्रबन्धस्य का व्यवस्थाऽस्ति=विद्यार्थियोंके भोजनादि प्रबन्धकी क्या व्यवस्था है । वासार्थं छात्रालयो वर्तते भोजनादिप्रबन्धोऽपि देवनागरीप्रचारिण्याः सभायाः सकाशात् सज्जायते=रहनेको छात्रालय (बोर्डिंगहाउस) है, और भोजनादि प्रबन्ध भी देवनागरीप्रचारिणी सभाकी ओरसे हो जाता है । परन्तु केवल संस्कृतार्थतृणामेव नियमः प्रायो दृश्यते=परन्तु केवल संस्कृत पढ़ने वालोंका ही यह नियम प्रायः देखा जाता है । तत्र मत्वा तावत् भवता किं कृतम् ?=वहां जाकर पहिले आपने क्या किया ? तावत् छात्राणां पाठः श्रुतः=पहिले विद्यार्थियोंका पाठ सुना । तदनु योग्यतानुसारतः पारितोषिकं दत्तम्=उसके बाद योग्यतानुसार इनाम दिया ॥

त्रयोदशः पाठः १३ ॥

हरिवर्षस्थं प्रति पातालस्थ उवाच ।

हरिवर्षस्य । (इंग्लिशमैनसे पातालस्थ (अमेरिकन) बोला ।

प्रिय मित्र ! इदानीमायावर्त कस्य राज्यमस्ति ?=प्यारे मित्र ! आज कल आयावर्त (हिन्दुस्तान) में किसका राज्य है ? महाराष्ट्राः=महाराणीका । तत्र किमपि “कण्टकादि,, तु नास्ति ?=वहां कुछ “भंगड़ा बखेड़ा,, तो नहीं है ? नहि नहि निष्कण्टकं राज्यं वर्तते=नहीं २ निष्कण्टक राज्य वर्त रहा है । इदानीं भवान् कुत आयाति =अब आप कहांसे आते हैं ? गान्धारतः=कन्यारसे । तत्र कस्य राज्यमस्ति ?=वहां किसका राज्य है । तत्रापि महाराष्ट्राः ?=वहां भी महाराणीका । अहो ! अत्यानन्दम्=अहो ! बड़ी आनन्दकी बात है ।

चतुर्दशः पाठः १४ ॥

(चिट्ठी लिखनेकी रीति)

महाशय !

अयं ममात्मज उत्तमचन्द्रनामा संस्कृतविद्याध्ययनार्थं मया प्रेषितः सन् आगच्छति तन्ममोपरि महतीं कृपां कृत्वाऽध्यापनीयोऽयम् । अलं विद्वत्सु ॥

आपाठशुक्ला १३
सं० ४४ रविः

भवता कृपाकाङ्क्षी
चन्द्रदत्तः

यह मेरा पुत्र उत्तमचन्द्र नाम संस्कृत विद्या पढ़नेके लिये मेरा भेजा हुआ आता है सो मेरे ऊपर बड़ी कृपा करके इसे पढ़ाइये विद्वानोंके लिये अधिक क्या लिखू ॥

इति तुलसीराम स्वामिकृतं प्रथमं पुस्तकम् ॥

—:X:X:—

इति

ये पुस्तक स्वामियन्त्रालय मेरठ से मिलेंगे ।

*तोप बन्दूक का आविष्कार) ॥ लघुकौमुदी भाषाटीका सहित २) सुश्रुत मूल १॥॥ न्यायदर्शनवात्स्यायन भाष्य सहित १) भर्तृहरिशतक तीनों भाषा-टीकासहित १=॥ दशोपनिषद् बड़े मूल मोटाअक्षर काशी के छपे १) सीताचरित्र नावल (प्रथमभाग हिन्दीभाषा) ॥॥ पं० गुरुदत्त एम० ए० का ईशोपनिषद्भाष्य १) कात्यायनसूत्र पूर्वार्ध ॥॥ वेश्यानाटक १) ॥ आर्यसमाजके नियम मोटे अक्षर पुष्टकागज पर १) सैंकड़ा, २॥ हजार । सामान्य कागज पर ३) सैंकड़ा, २) हजार । व्याख्यानका विज्ञापन ३) सैंकड़ा १) हजार वेदप्रकाश मासिकपत्र मूल्य १) वार्षिक दसपन्तीस्वयंवरनाटक ३) धर्मप्रचार ॥ वायुमण्डल ॥ हारमोनियमगाइड १=) वैदिकद्वैत अंग्रेजी १ नं० ॥ २ नं० ॥ ३ नं० ॥ सत्यदर्पण ३) ज्योतिषदर्शन ३) व्याख्यानसागर ॥ योगानुसार सन्ध्याविधि ३) बालोपकारी शिक्षा ३) दानकरणविधि ३) पदार्थविद्या ॥ सभाप्रसन्न १) स्वामीजीका चित्र (रङ्गीन) - ॥ पं० गुरुदत्त का चित्र (रङ्गीन) - ॥ सादेचित्र दोनों प्रत्येक -) खेतीकी विद्याके मुख्य सिद्धान्त ॥=) रामायणका आल्लखण्ड ॥

विना गुरुके संस्कृत व्याकरणमें प्रवेश और संस्कृत बोलने लिखनेका सामान्य बोध कराने वाली—संस्कृतभाषा प्रथम पुस्तक ॥॥ द्वितीय -) तृतीय पु० ३) ॥ चतुर्थ छपरहा है । चाणक्यनीतिसार भाषा टीका १=) ॥ प्रश्नोत्तररत्नमाला भाषाटीका सहित इसमें आर्यविवाहमङ्गलाष्टक -) आर्यवर्षटपञ्चरी ॥ भजनेन्दु -) महन्त ब्रह्मकुशलके उत्तरमें—ऋगादि भाष्य ४० उपराग प्रथम -) ॥ द्वितीय -) ॥ शास्त्रार्थकिराणा -) अक्षरप्रदीप (बालकोंकी) १) में १०० एकप्रति ॥

नालिकाविष्कार ॥

अर्थात् तोप बन्दूक बाण्ड (गतग्री भुगुण्डी अग्निचूर्ण) का आविष्कार (ईजाद) प्राचीन आर्यवर्तमें ही ऋषि मुनियोंने किया था और “इसको जर्मनीके सांख्यारथोलडम् शवाटरनने सन् १३२० में सबसे प्रथम आविष्कृत किया,, यह विचार तब तक ही है जब तक इस पुस्तक द्वारा सर्वसाधारण ने शुक्नीति, नीतिप्रकाशिका और महाभारत तथा डाक्टर गस्टैनओपर्टे, वेकन साहयके “ विन्नीसीड्यूडस् आफ् थिंगज़ ” मेजर जेनेरल वार्डल आदि के प्रमाणोंसे विभूषित इस पुस्तकको नहीं देखा है । मूल्य ॥॥

पता—पं० तुलसीरामस्वामी—सम्पादक वेदप्रकाश मेरठ

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-द्वितीयं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (जिला मेरठ) निवासि-
स्वामि-तुलसीराम-शर्म्भणा विरचितम्

प्रकाशितञ्च

हृदाबानगरे सरस्वतीयन्त्रालये-तुलसीराम स्वामिनः

प्रथम्येन मुद्रितम् ॥

संवत् १९५३ । १२ । ४ । ९६

इस की रजिस्टरी कराई गई किसी को छापने का

अधिकार नहीं है ।

सुनीयवार १००० प्रति]

[मूल्य -)।

भूमिका ॥

जिस उद्देश्य से मैंने यह पुस्तक बनाया था वह उद्देश्य सफल होते देख कर (जो कि गुणग्राहकों ने ५००० प्रथम ३००० द्वितीय तथा २५०० तृतीय पुस्तकें हाथों हाथ ले लीं) मुझे उत्साह होता है कि अब की बार इस द्वितीय पुस्तक में कुछ और आवश्यक संशोधन करके अत्यन्त शुद्ध छपाई से इस बार शुद्ध क-पने का विशेष उद्योग किया है इतने पर भी यदि मेरी समझ की भूल वा छापे की अशुद्धि कोई पाई जावे तो पाठकगण क्षमापूर्वक शुद्ध कर के मुझे सूचना दें जिस से अगले मुद्रण में वह न्यूनता न रहे और मैं उन का कृतज्ञ होऊँ इति ॥

वै० क० सं० १९५३]

तुलसीराम स्वामी

पवित्र यज्ञोपवीत कार्यालय ॥

उत्तम शुद्ध बने बनाये न मिलने से बहुतों को कष्ट उठाना पड़ता है, भट्टे मिलते हैं, अशुद्ध, विधिविरुद्ध सूत्र धारण करने पड़ते हैं क्योंकि कोई कार्यालय ऐसा नहीं जहाँ शास्त्रोक्त विधि से शुद्ध पूर्वक विप्रवास्य यज्ञोपवीत बनते हों । इसी अभाव के दूर करने को उपरोक्त कार्यालय में शुद्ध ब्राह्मण जो कम से कम मन्थ्यामात्र करते होंगे पूरना, बटना, ग्रन्थि लगाना आदि सब काम उन्हीं से कराये जायेंगे । (धीम २० का नाम कोड़ी है)

उत्तम रेशम के यज्ञोपवीत ५) कोड़ी महाराजों लायक । दूसरे दर्जा रेशम का ३) कोड़ी ।

मृत के दर्जा प्रथम १) कोड़ी } धर्मार्थ बांटने वालों की
 " दर्जा दूसरा ॥१) कोड़ी } अर्घ्य मोल, विशेष लेने वालों
 " दर्जा तीसरा ॥२) कोड़ी } को कर्णेशन भी दिया जायगा पत्र व्यवहार करो पसन्द न आवे वापिस कर दो केवल हाक व्यय का टोटा ग्राहक को होगा । अवश्य देखिये ॥ छट्ठनलाल स्वामी परीक्षितगढ़, जि० मेरठ

संस्कृत-भाषा-द्वितीयं पुस्तकम् ॥

प्रथमः पाठः १ ॥

(गम धातु के भूत भविष्यत् वर्तमान और विधि काल के रूप)

कर्त्ता भूतक्रिया

सः	अगच्छत्=वह गया है
ती	अगच्छताम्=वे दोनों गये हैं
ते	अगच्छन्=वे सब गये हैं
त्वं	अगच्छ=तू गया है
युवाम्	अगच्छतम्=तुम दोनों गये हो
यूयम्	अगच्छत=तुम सब गये हो
अहम्	अगच्छाम्=मैं गया हूँ
आवाम्	अगच्छाव=हम दोनों गये हैं
वयम्	अगच्छाम=हम सब गये हैं

कर्त्ता भविष्यक्रिया

सः	गमिष्यति=वह जायगा
ती	गमिष्यतः=वे दोनों जायेंगे
ते	गमिष्यन्ति=वे सब जायेंगे
त्वं	गमिष्यसि=तू जायगा
युवाम्	गमिष्यथः=तुम दोनों जाओगे
यूयम्	गमिष्यथ=तुम सब जाओगे
अहम्	गमिष्यामि=मैं जाऊँगा
आवाम्	गमिष्यावः=हम दोनों जायेंगे
वयम्	गमिष्यामः=हम सब जायेंगे

द्वितीयः पाठः २ ॥

कर्त्ता वर्तमानक्रिया

सः	गच्छति=वह जाता है
ती	गच्छतः=वे दोनों जाते हैं
ते	गच्छन्ति=वे सब जाते हैं
त्वं	गच्छसि=तू जाता है
युवाम्	गच्छथः=तुम दोनों जाते हो
यूयम्	गच्छथ=तुम सब जाते हो
अहम्	गच्छामि=मैं जाता हूँ
आवाम्	गच्छावः=हम दोनों जाते हैं
वयम्	गच्छामः=हम सब जाते हैं

कर्त्ता विधिक्रिया

सः	गच्छतु, गच्छतात्=वह जावे
ती	गच्छताम्=वे दोनों जावें
ते	गच्छन्तु=वे सब जावें
*त्वं	गच्छ, गच्छात्=तू जा
युवां	गच्छतम्=तुम दोनों जाओ
यूयं	गच्छत=तुम सब जाओ
अहम्	गच्छानि=मैं जाऊँ
आवां	गच्छावः=हम दोनों जावें
वयं	गच्छामः=हम सब जावें

* «त्वं» इत्यादि में 'म्' को (') अनुस्वार भी रहता है जब कि व्यञ्जन परे हो ।

जिस प्रकार गम (जाना) धातु के रूप हुये इसी प्रकार आगम (आना) धातु के भी जानने चाहिये केवल गम के पूर्व "आ" लगाने से बनते हैं जैसे:-

आगच्छति=आता है । आगच्छत्=आया है । आगमिष्यति=आवेगा । आगच्छ=आव ॥

तृतीयः पाठः ३ ॥

कृत्वा=करके । भुक्त्वा=खा के । गत्वा=जा के । मत्वा=मान के । श्रुत्वा=सुन के । मिलित्वा, मिलित्वा=मिल के । आगत्य=आ के । प्रणश्य=प्रणाम करके । पृष्ट्वा=पूछ के । आदाय=ले कर । दत्वा=दे कर ॥

किं विष्णुमित्रः गृहं गमिष्यति ?=क्या विष्णुमित्र घर को जायगा ? । किं त्वं मन्दिरात् आगमिष्यसि ?=क्या तू मन्दिर से आवेगा ? । अहं मन्दिरात् न आगमिष्यामि=मैं मन्दिर से नहीं आऊंगा । किं तौ मां पृष्ट्वा गमिष्यतः=क्या वे दोनों मुझ को पूछ के जायेंगे ? । नो=नहीं । ते पुस्तकं दत्वा गमिष्यन्ति=वे सब पुस्तक को देकर जायेंगे । अहं पाठं श्रुत्वा आगमिष्यामि=मैं पाठ को सुन के आऊंगा । किं युवां पठित्वा न गमिष्यथः=क्या तुम दोनों पढ़ के नहीं जाओगे ? । महाशय ! आवां पठित्वा एव गमिष्यावः=महाशय ! हम दोनों पढ़ के ही जायेंगे । मया गत्वा भुक्तम्=मैंने जा के खालिया । किं सः भुक्त्वा गमिष्यति=क्या वह खा के जायगा ? । यूयं कदा गमिष्यथः=तुम सब कब जाओगे । विष्णुमित्रः पुस्तकम् आदाय अगच्छत्=विष्णुमित्र पुस्तक को लेकर गया है । ते मम पुस्तकम् आदाय अगच्छन्=वे सब मेरी पुस्तक को लेकर गये हैं । तौ श्रावयोः पाषाणपट्टिकाम् आदाय अगच्छताम्=वे दोनों हम दं नों की सलेट् को लेकर गये हैं । अहं भुक्त्वा अगच्छम्=मैं खा कर गया हूं । त्वं पठित्वा अगच्छः=तू पढ़ के गया है । युवां मिलित्वा अगच्छतम्=तुम दोनों मिल के गये हो । वयं मिलित्वा न अगच्छामः=हम सब मिल के नहीं गये हैं । यूयम् श्रावयोः उपवस्त्रम् आदाय अगच्छतः=तुम सब हम दोनों के रूमाल को लेकर गये हो । वयं युवयोः उपवस्त्रम् आदाय न अगच्छामः=हम सब तुम दोनों का रूमाल लेकर नहीं गये हैं । त्वं श्रुत्वा आगच्छः=तू सुन के आ । अहं पठित्वा गच्छानि=मैं पढ़ के जाऊं । † स मम वस्त्राणि आदाय गच्छतु=वह मेरे कपड़े लेकर जावे । युवां

† सः के आगे जो (:) विसर्ग है वह व्यञ्जन परे हो तो लुप्त कर दिया जाता है ।

पठित्वा गच्छतम्=तुम दोनों पढ़ के जाओ। आवां न गच्छाव=हम दोनों न जावें। सौ श्रुत्वा न आगच्छताम्=वे दोनों सुन के न आवें। ते गच्छन्तु=वे सब जावें। यूयं न गच्छत=तुम सब मत जाओ। वयं न गच्छाम=हम सब न जावें। यूयं मम उपानहम् आदाय न गच्छत=तुम सब मेरा जूता लेकर मत जाओ। त्वं तत्र न गच्छतात्=तू वहां मत जा। वयं पठित्वा न गच्छाम=हम सब पढ़ के न जावें। यदा अहं गमिष्यामि तदा त्वम् आगमिष्यसि=जब मैं जाऊंगा तब तू आवेगा ॥

चतुर्थः पाठः ४ ॥

(नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत बनाओ)

वह वहां न जावे। तुम यहां मत आओ। हम वहां जायेंगे। तुम वहां आओगे। वे दोनों वहां न जावें। तुम दोनों वहां जाओगे। हम वहां नहीं जायेंगे। यहां आओ। वहां मत जाओ। हम सब वहां गये हैं। तुम दोनों यहां नहीं आये हो। वे वहां गये हैं। तुम सब वहां नहीं गये हो। तुम सब पढ़ कर जाओ। हम दोनों मिल के जायेंगे। तुम सब खाके जाओ। तुम सब मेरी पुस्तक लेकर मत जाओ। हम दोनों तुम दोनों की स्लेट लेकर जायेंगे। क्या तुम व्याख्यान को सुन के नहीं आओगे ? ॥

(संस्कृत से भाषा बनाओ)

अहं पठित्वा गमिष्यामि। त्वं मम वस्त्रम् आदाय गच्छतात्। मम कथनं श्रुत्वा आगच्छ। अहं पुस्तकम् आदाय अगच्छम्। यूयं कुत्र गत्वा आगच्छत। किं स गृहात् न आगमिष्यति ? अहं वेदं श्रुत्वा गमिष्यामि। स तत्र किं कृत्वा अगच्छत्। किं युवां मम पुस्तके आदाय अगच्छतम् ? किं स मन्दिरात् आगमिष्यति ? वयं तत्र न अगच्छाम। किं स उपरि अगच्छत्। आवां नीचैः न अगच्छाव। किं स न पठति। अहं तत्र गत्वा न पठिष्यामि। स गच्छतु तत्र ॥

पञ्चमः पाठः ५ ॥

(स्या=ठहरना)

कर्त्ता, भूतकालिक क्रिया

सः	अतिष्ठत्=वह ठहरा है
तौ	अतिष्ठताम्=वे दोनों ठहरे हैं
ते	अतिष्ठन्=वे सब ठहरे हैं
त्वम्	अतिष्ठः=तू ठहरा है
युवाम्	अतिष्ठतम्=तुम दोनों ठहरे हो
यूयम्	अतिष्ठत=तुम सब ठहरे हो
अहम्	अतिष्ठम्=मैं ठहरा हूँ
आवाम्	अतिष्ठाव=हम सब ठहरे हैं
वयम्	अतिष्ठाम=हम सब ठहरे हैं

कर्त्ता, भविष्यत्कालिकक्रिया

सः	स्यास्यति=वह ठहरेगा
तौ	स्यास्यतः=वे २ ठहरेंगे
ते	स्यास्यन्ति=वे ३ ठहरेंगे
त्वं	स्यास्यसि=तू ठहरेगा
युवां	स्यास्यथः=तुम २ ठहरोगे
यूयं	स्यास्यथ=तुम ३ ठहरोगे
अहं	स्यास्यामि=मैं ठहरूंगा
आवां	स्यास्यावः=हम २ ठहरेंगे
वयं	स्यास्यामः=हम ३ ठहरेंगे

कर्त्ता, वर्तमानकालिक क्रिया

सः	तिष्ठति=वह ठहरता है
तौ	तिष्ठतः=वे २ ठहरते हैं
ते	तिष्ठन्ति=वे ३ ठहरते हैं
त्वं	तिष्ठसि=तू ठहरता है
युवां	तिष्ठथः=तुम २ ठहरते हो
यूयं	तिष्ठथ=तुम ३ ठहरते हो
अहं	तिष्ठामि=मैं ठहरता हूँ
आवां	तिष्ठावः=हम २ ठहरते हैं
वयं	तिष्ठामः=हम ३ ठहरते हैं

कर्त्ता, विधिक्रिया

सः	तिष्ठतु, तिष्ठतात्=वह ठहरे
तौ	तिष्ठताम्=वे २ ठहरें
ते	तिष्ठन्तु=वे ३ ठहरें
त्वम्	तिष्ठ, तिष्ठतात्=तू ठहर
युवाम्	तिष्ठन्तम्=तुम २ ठहरो
यूयम्	तिष्ठत=तुम ३ ठहरो
अहम्	तिष्ठानि=मैं ठहरूँ
आवाम्	तिष्ठाव=हम २ ठहरें
वयम्	तिष्ठाम=हम ३ ठहरें

षष्ठः पाठः ॥

सः तत्र न तिष्ठति=वह वहाँ नहीं ठहरता । अहम् कुत्र तिष्ठानि=मैं कहाँ ठहरूँ । यूयम् तत्र न तिष्ठत=तुम ३ वहाँ मत ठहरो । ते गृहे तिष्ठन्ति=वे ३ घर में ठहरते हैं । वयम् उपरि स्थास्यामः=हम ३ ऊपर ठहरेंगे । किं यूयम्

* २ अङ्क से द्विवचन ३ अङ्क से बहुवचन समझना चाहिये ।

नीचे: स्यास्यथ ?=क्या तुम सब नीचे ठहरोगे ? । युवां तत्र न अतिष्ठतम्=तुम दोनों वहाँ नहीं ठहरे हो । त्वम् दूरम् तिष्ठ=तू दूर ठहर । किं वयम् तत्र न तिष्ठाम ?=क्या हम ३ वहाँ न ठहरें ? । यूयम् तत्र आगत्य तिष्ठत=तुम ३ वहाँ आकर ठहरो । वयम् उपरि गत्वा अतिष्ठाम=हम ३ ऊपर जाके ठहरे हैं । त्वं तं प्रणम्य तिष्ठतात्=तू उस को प्रणाम करके ठहर । तौ श्रुत्वा न अतिष्ठताम्=वे २ सुन के नहीं ठहरे हैं । अहं सरयं मत्वा अतिष्ठम्=मैं सत्य मान के ठहरा हूँ । अहं भुक्त्वा स्यास्यामि=मैं खाके ठहरूँगा । विद्यार्थी पृष्ट्वा अगच्छत्=विद्यार्थी पूछ के गया है । सः पठित्वा तिष्ठतु=वह पढ़ के ठहरे । वयं पठित्वा न स्यास्यामः=हम ३ पढ़ के नहीं ठहरेंगे । ते प्रणम्य अतिष्ठन्=वे प्रणाम करके ठहरे हैं । यूयं श्रुत्वा तिष्ठत=तुम ३ सुनके ठहरो । तौ आगत्य तिष्ठताम्=वे २ आके ठहरें । किं त्वं भुक्त्वा न स्यास्यासि ?=क्या तू खाके नहीं ठहरेगा ? । अहं पठित्वा न स्यास्यामि=मैं पढ़ के नहीं ठहरूँगा ॥

सप्तमः पाठः ७ ॥

कर्त्ता भूतक्रिया,

सः अपठत्=उस ने पढ़ा है
तौ अपठताम्=दोनों ने पढ़ा है
ते अपठन्=उन्होंने ने पढ़ा है
त्वम् अपठः=तू ने पढ़ा है
युवाम् अपठतम्=तुम २ ने पढ़ा है
यूयम् अपठत=तुम ३ ने पढ़ा है
अहम् अपठम्=मैं ने पढ़ा है
आवाम् अपठाव=हम २ ने पढ़ा है
वयम् अपठाम=हम ३ ने पढ़ा है

कर्त्ता, भविष्यक्रिया,

सः पठिष्यति=वह पढ़ेगा
तौ पठिष्यतः=वे २ पढ़ेंगे
ते पठिष्यन्ति=वे ३ पढ़ेंगे
त्वम् पठिष्यसि=तू पढ़ेगा

कर्त्ता, वर्तमानक्रिया,

सः पठति=वह पढ़ता है
तौ पठतः=वे २ पढ़ते हैं
ते पठन्ति=वे ३ पढ़ते हैं
त्वम् पठसि=तू पढ़ता है
युवाम् पठथः=तुम दोनों पढ़ते हो
यूयम् पठथ=तुम ३ पढ़ते हो
अहम् पठामि=मैं पढ़ता हूँ
आवाम् पठावः=हम २ पढ़ते हैं
वयम् पठामः=हम ३ पढ़ते हैं

कर्त्ता, विधिक्रिया,

सः पठतु, पठतात्=वह पढ़े
तौ पठताम्=वे २ पढ़ें
ते पठन्तु=वे ३ पढ़ें
त्वम् पठ, पठतात्=तू पढ़

युवाम् पठिष्यथः=तुम २ पढ़ो गे
यूयम् पठिष्यथः=तुम ३ पढ़ोगे
अहम् पठिष्यामि=मैं पढ़ूँगा
आवाम् पठिष्यावः=हम दोनों पढ़ेंगे
वयम् पठिष्यामः=हम ३ पढ़ेंगे

युवाम् पठतम्=तुम २ पढ़ो
यूयम् पठतम्=तुम ३ पढ़ो
अहम् पठानि=मैं पढ़ूँ ?
आवाम् पठावः=हम २ पढ़ें ?
वयम् पठामः=हम ३ पढ़ें ?

अष्टमः पाठः ८ ॥

भोक्तुम्=खाने को । मार्ष्टुम्=बुहारने को । पातुम्=पीने को । गन्तुम्=जाने को । चिन्तयितुम्=याद करने को । स्वप्नुम्=सोने को । पठितुम्=पढ़ने को । जागरितुम्=जागने को । ज्ञातुम्=जानने को । सङ्गन्तुम्=मिलने को । हन्तुम्=मारने को । प्रष्टुम्=पूछने को । आगन्तुम्=आने को । हसितुम्=हँसने को । संमन्तुम्=सलाह देने को । आस्तुम्=बैठने को । जेतुम्=जीतने को । स्यातुम्=ठहरने को । उत्थातुम्=उठने को । पराजितुम्=हारने को । कर्तुम्=करने को । मर्तुम्=मरने को । हत्तुम्=मल त्यागने को । मन्तुम्=मानने को । मारयितुम्=मारने को । जीयितुम्=जीने को । सीयितुम्=सीने को । क्षीरयितुम्=चुराने को ॥

नवमः पाठः ९ ॥

[रामशब्द (पुल्लिङ्ग) की सात विभक्तियां]

१ { राम.=राम, ने
रामी= २ रामों, ने
रामाः=सब रामों, ने

२ { रामम्=राम को
रामी=२ रामों को
रामान्=३ रामों को

३ { रामेण=राम ने, से, के साथ
रामाभ्याम्=२ रामों ने, से, के साथ
रामैः=सब रामों ने, से, के साथ

४ { रामाय=राम के लिये
रामाभ्याम्=२ रामों के लिये
रामेभ्यः=३ रामों के लिये

५ { रामात्, ह्=राम से
रामाभ्याम्=२ रामों से
रामेभ्यः=सब रामों से

६ { रामस्य=राम का, के, की,
रामयोः=२ रामों का, के, की
रामाणाम्=३ रामों का, के, की

७ { रामे=राम में, पै, पर
रामयोः=२ रामों में, पै, पर
रामेषु=३ रामों में, पै, पर

८ { हे राम= ओ राम
हे रामी=२ " "
हे रामाः=३ " "

जिस प्रकार राम शब्द की ७ विभक्तियां हैं वही प्रकार कदम्ब, मुकुन्द, देव, पुत्र, यज्ञदत्त, देवदत्त, विष्णुमित्र आदि अकारान्त (पुंलिङ्ग) शब्दों की विभक्तियां जानी ।

दशमः पाठः १० ॥

[तद् शब्द (पुंलिङ्ग) की ७ विभक्तियां]

१ {	सः=वह, उस ने	५ {	तस्मात्=उस से
	तौ=वे २, उन्होंने		ताभ्याम्=उन २ से
	ते=वे ३, उन्होंने		तेभ्यः=उन ३ से
२ {	तम्=उस को	६ {	तस्य=उस का, के, की
	तौ=उन २, को		तयोः=उन २ का, के, की
	तान्=उन ३ को		तेषाम्=उन ३ का, के, की
३ {	तेन=उस से, ने, के, साथ	७ {	तस्मिन्=उस में, पै, पर
	ताभ्याम्=उन २ से, ने, के साथ		तयोः=उन २ में, पै, पर
	तैः=उन ३ से, ने, के साथ		तेषु=उन ३ में, पै, पर
४ {	तस्मै=उस के लिये		
	ताभ्याम्=उन २ के लिये		सम्बोधन इस का नहीं होता
	तेभ्यः=उन ३ के लिये		

इसी प्रकार यद् (जा) शब्द के भी रूप हैं किन्तु इतना भेद है कि प्रथमा विभक्ति के एक वचन में «यः» ऐसा रूप होता है आगे «यी, ये, यम्, यौ, यान्, येन, याभ्याम्, यैः» इत्यादि सब तद् शब्द के समान हैं सो पढ़ने वालों को बुद्धि से समझने और समझाने चाहिये ॥

एकादशः पाठः ११ ॥

विष्णुमित्रः भं.क्तुं गच्छति=विष्णुमित्र खाने को जाता है । यज्ञदत्तः ग्रामं गन्तुम् आगच्छतु=यज्ञदत्त ग्राम को जाने को आवे । त्वं पठितुं गच्छ-तू पढ़ने को जा । त्वं वेदान् ज्ञातुं पठसि-तू वेदों को जानने को पढ़ता है । किं त्वं प्रष्टुम् अगच्छः ?=क्या तू पूछने को गया है ? । देवदत्तः सम्मन्तुम् गत्वा आगच्छ-तु=देवदत्त सलाह करने को जाके आया है । किं स तस्मिन् गृहे स्यातुं अगच्छ-तु ?=क्या वह उस घर में ठहरने को गया है ? । स किं कर्त्तुम् पठतु ?=वह क्या करने को पढ़े ? । अहं वेदं मन्तु अपठम्=मैं ने वेद को मानने का पढ़ा है । स वस्त्रं सीवितुं गच्छति किम् ?=वह कपड़ा (नपुं) सीने को जाता

है क्या ? । शोभारामः गृहं माष्टुं गच्छतु=शोभाराम घर खुहारने को जावे । ती पाठं चिन्तयितुम् अगच्छताम्=वे दोनों पाठ (को) याद करने को गये हैं । सः गृहम् आगन्तुं यावति=वह घर आने को दीड़ता है । स आसने आस्तुं गच्छतु=वह आसन पै बैठने को जावे । आवां आसनात् उरयातुं न इच्छायः=हम २ आसन से उठने को नहीं चाहते । किं स तेन मर्तुम् इच्छति ?=क्या वह उस के साथ मरने को चाहता है ? । त्वं तं मारयितुं गच्छसि=तू उस को मारने को जाता है ॥

द्वादशः पाठः १२ ॥

सः धनं दत्त्वा अपठत्=वह धन देकर पढ़ा । किं युवां धनाय पठथः=क्या तुम २ धन के लिये पढ़ते हो ? । वयं धनाय न अपठाम=हम धन के लिये नहीं पढ़े हैं । ती धर्माय पठतः=वे दोनों धर्म के लिये पढ़ते हैं । विद्यार्थी नियमं कृत्वा पठतु=विद्यार्थी नियम करके पढ़े । अहं भुक्त्वा पठिष्यामि=मैं खाके पढ़ूंगा । किं त्वं ग्रामं गत्वा पठिष्यसि ?=क्या तू ग्राम को जाकर पढ़ेगा ? । आवां सत्यं मत्वा अपठाम=हम २ सत्य मान के पढ़े हैं । वेदं चोरयितुं पठति=वेद चुराने को पढ़ता है । यूयं जलं पातुं गच्छथ=तुम ३ जल पाने को जाते हो । त्वं स्वपतुं गच्छ=तू सोने को जा । किम् अहं जागरितुम् तिष्ठानि ?=क्या मैं जागने को ठहरूँ ? । अहं विष्णुमित्रं हन्तुं न गमिष्यामि=मैं विष्णुमित्र को मारने को नहीं जाऊंगा । ती हस्मितुम् अगच्छताम्=वे २ हंसने को गये हैं । यज्ञदत्तः देवदत्तं जेतुम् अगच्छत्=यज्ञदत्त देवदत्त को जीतने गया है । युवां पराजितुं गमिष्यथः=तुम २ हारने को जाओगे । देवदत्तविष्णुमित्रौ हन्तुं गच्छताम्=देवदत्त विष्णुमित्र २ मलत्यागने को जावें । दशरथः जीवितुं न इच्छति=दशरथ जीने को नहीं चाहता । अहं ग्रामं गन्तुम् इच्छामि=मैं ग्राम को जाना चाहता हूँ । ती सुदर्शनेन सङ्गन्तुं आगच्छताम्=वे २ सुदर्शन से मिलने को आवें । अहं यज्ञदत्तविष्णुमित्राभ्यां पुस्तकं दातुं न इच्छामि=मैं यज्ञदत्त विष्णुमित्रों २ के लिये पुस्तक देने को नहीं चाहता ॥

त्रयोदशः पाठः १३ ॥

(संस्कृत से भाषा बनाओ)

स रामाय वस्त्रं ददातु । अहं रामात् उपानहम् आदातुम् इच्छामि । आवां रामस्य उपवस्त्रम् आदाय गमिष्यावः । वयं रामे

विश्वासं कृत्वा आगच्छामः । हे राम ! किं त्वं पठिष्यसि ? । अहं
तं पृष्ट्वा गच्छानि ? । त्वं ताभ्याम् मिलित्वा न आगच्छः । युवां
तेभ्यः पुस्तकं दत्वा गमिष्यथः किम् ? । अहं तस्मात् न पठि-
ष्यामि । त्वं तयोः पुस्तकं न पठ । स तेपु विश्वासं कृत्वा न आ-
गच्छति । ये पठन्ति ते गमिष्यन्ति । यत् जानामि तत् पठामि ।
येन सङ्गन्तुम् अगच्छाम् स न मिलितः । यस्मै धनं दत्तं स नास्ति ।
यस्मात् भयं भवति तस्य समीपे न गच्छ ॥

चतुर्दशः पाठः १४ ॥

[भाषा से संस्कृत वाक्य बनाओ]

उम ने क्या पढ़ा है ? । तुम पुस्तक नहीं पढ़ोगे ? । हम ने पुस्तक नहीं
पढ़ा है । तुम दुष्ट पुस्तक मत पढ़ो । विद्यार्थी श्रेष्ठ पुस्तक को पढ़े । क्या तुम
उम का पुस्तक लेकर गये हो ? । हम ने उन २ का पुस्तक नहीं पढ़ा है । वे २
मेरा पुस्तक पढ़ते हैं । तुम वेद को पढ़ो । तू विद्यार्थी नहीं है । तू विद्याध्य-
यन के लिये जायेंगे । क्या तू हमारा पुस्तक लेकर जायेंगे ? । यदि तू यहां
आवे गा तब हम तुझ को नहीं पढ़ावेंगे (१ पाठ्यव्यासः) ॥

पञ्चदशः पाठः १५ ॥

सुष्मद् (अर्थात् तू, तुम) शब्द की ७ विभक्तियां ।

तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं ॥

१ {	त्वम्=तू, तूने	४ {	तुभ्यम्, ते=तेरे लिये
	युवाम्=तुम २, तुम २ ने		युवाभ्याम्, वाम्=तुम्हारे २ लिये
	यूयम्=तुम ३, तुम ३ ने		युष्मभ्यम्, वः=तुम्हारे ३ लिये
२ {	त्वाम्, त्वा=तुझ को	५ {	त्वत्=तुझ से
	युवाम्, वाम्=तुम २ को		युवाभ्याम्=तुम २ से
	युष्मान्, वः=तुम ३ को		युष्मत=तुम ३ से
३ {	त्वया=तूने, तुझ से, तेरे साथ	६ {	तव, ते=तेरा, रे, री
	युवाभ्याम्=तुम २ ने, से, तुम्हारे साथ		युवयोः वाम्=तुम दोनों का, के, की
	युष्माभिः=तुम ३ ने, से, तुम्हारे साथ		युष्माकम्, तः=३ तुम्हारा, रे, री

- ७ { त्वयि=तुझ में, तै, पर
युवयोः=तुम २ में तै, पर
युष्मासु=तुम ३ में, तै, पर

- { युष्मद् और अस्मद् शब्द के सम्बोधन के रूप नहीं होते ॥

षोडशः पाठः १६ ॥

अस्मद् (अर्थात् मैं हम) शब्द की ७ विभक्तियां ।
इस के भी ३ लिङ्गों में समान ही रूप होते हैं ॥

- १ { अहम्=मैं वा मैंने
आवाम्=हम वा हम दोनों ने
वयम्=हम ३ वा हम ३ ने

- { मत्=मुझ से
आवाभ्याम्=हम २ से
अस्मत्=हम ३ से

- २ { माम्, मा=मुझ को
आवाम्, नी=हम २ को
अस्मान्, नः=हम ३ को

- ६ { मम, मे=मेरा, रे, री
आवयोः, नी=हमारा २ रे, री
अस्माकम्, नः=हमारा ३, रे, री

- ३ { मया=मैंने, मुझ से, मेरे साथ
आवाभ्याम्=हम २ ने, मे, हमारे साथ ७
अस्माभिः=हम ३ ने, मे, हमारे साथ

- { मयि=मुझ में, तै, पर
आवयोः=हम २ में, तै, पर
अस्मासु=हम ३ में, तै, पर

- ४ { मच्चम्, मे=मेरे लिये
आवाभ्याम्, नी=हमारे २ के लिये
अस्मभ्यम्, नः=हमारे ३ के लिये

- { सम्बोधन नहीं होता ॥

सप्तदशः पाठः १७ ॥

दा धातु=देना के भूत, भविष्यत्, वर्तमान, विधि,
कर्ता, भूतकालिकक्रिया, कर्ता, भविष्यक्रिया,

- सः अददात्=उस ने दिया, दी है
तौ अदत्ताम्=उन २ ने दिया, दी है
ते अददुः=उन ३ ने दिया, दी है
त्वम् अददाः=तू ने दिया, दी है
युवाम् अदत्तम्=तुम २ ने दिया, दी है
यूयम् अदत्त=तुम ३ ने दिया, दी है
अहम् अददाम्=मैंने दिया, दी है
आवाम् अदद्व=हम २ ने दिया, दी है
वयम् अदद्व=हम ३ ने दिया, दी है

- सः दास्यति=वह देगा
तौ दास्यतः=वे २ देंगे
ते दास्यन्ति=वे ३ देंगे
त्वम् दास्यसि=तू देगा
युवाम् दास्यथः=तुम २ दोगे
यूयम् दास्यथ=तुम ३ दोगे
अहम् दास्यामि=मैं दूंगा
आवाम् दास्यावः=हम २ देंगे
वयम् दास्यामः=हम ३ देंगे

कर्त्ता,	वर्तमानक्रिया,
सः	ददाति=वह देता है
ती	ददाति=वे २ देते हैं
ते	ददति=वे ३ देते हैं
त्वम्	ददासि=तू देता है
युवाम्	ददथः=तुम २ देते हो
यूयम्	ददथः=तुम ३ देते हो
अहम्	ददामि=मैं देता हूँ
आवाम्	ददामः=हम २ देते हैं
वयम्	ददामः=हम ३ देते हैं

कर्त्ता,	विधिक्रिया,
सः	ददातु, दत्तातु=वह देवे
ती	दत्ताम्=वे २ देवें
ते	ददतु=वे ३ देवें
त्वम्	देहि, दत्तातु=तू दे
युवाम्	दत्ताम्=तुम २ दो
यूयम्	दत्तु=तुम ३ दो
अहम्	ददानि=मैं दूँ
आवाम्	ददावः=हम २ दें
वयम्	ददामः=हम ३ दें

इस दा धातु=देना, से पहिले आ लगाने से “लेना” अर्थ हो जाना है परन्तु उस दशा में आत्मनेपद के रूप होते हैं जैसे:-

कर्त्ता भूतक्रिया ।

सः	आदत्त
ती	आददाताम्
ते	आददत
त्वम्	आदत्थाः
युवाम्	आददाथाम्
यूयम्	आददध्वम्
अहम्	आददि
आवाम्	आदद्वहि
वयम्	आदद्वहि

कर्त्ता वर्तमानक्रिया ।

सः	आदत्ते
ती	आददाते
ते	आददते
त्वम्	आदत्से
युवाम्	आददथे

कर्त्ता भविष्यक्रिया

सः	आदास्यते
ती	आदास्येते
ते	आदास्यन्ते
त्वम्	आदास्यसे
युवाम्	आदास्येथे
यूयम्	आदास्यध्वे
अहम्	आदास्ये
आवाम्	आदास्यावहे
वयम्	आदास्यामहे

कर्त्ता वर्तमानक्रिया

यूयम्	आदद्वे
अहम्	आददे
आवाम्	आदद्वहे
वयम्	आदद्वहे

कर्त्ता विधिक्रिया

सः	आदत्ताम्
तौ	आददाताम्
ते	आददताम्
त्वम्	आदत्स्व

युवाम्	आददाथाम्
यूयम्	आददुम्
अहम्	आददे
आवाम्	आददावहे
वधम्	आददामहे

अर्थ परस्मैपद के तुल्य ही है ॥

अष्टादशः पाठः १८ ॥

नरसिंहः मर्त्यां किं ददाति?—नरसिंह मुक्त को क्या देता है? । विष्णुशर्मा
आवाभ्याम् भोजनं दास्यति=विष्णुशर्मा हम २ दो को भोजन देगा । अहम्
युष्मभ्यं वस्त्रं न दास्यामि=मैं तुम ३ को वस्त्र नहीं दूंगा । किं स त्वत् पुस्तकम्
आदास्यते?—क्या वह तुझ से पुस्तक लेगा? । अहम् तव उपवस्त्रं न ददामि=
मैं तेरा रूमाल न दूँ । त्वम् तस्य उपानहम् देहि=तू उस का जूता दे । अहम्
त्वयि भारं न ददामि=मैं तुझ पर भार नहीं देता । कस्य अपि वस्तु न आद-
त्ताम्=किसी का भी वस्तु न ले । त्वम् मर्त्यां पुस्तकं दत्तात्=तू मुक्त को पुस्तक
दे । स आवाभ्याम् सङ्गन्तुम् आगच्छति=वह हम २ से मिलने को आता है ।
स स्वकीयं पुस्तकं मर्त्याम् अददात्=उस ने अपना पुस्तक मेरे लिये दिया है ।
त्वम् तस्मै किमपि अददाः?—तूने उस के लिये कुछ दिया है? । अहम् युवाभ्यां
किमपि न अददाम्=मैंने तुम २ को कुछ नहीं दिया है । तौ आवाभ्यां किम्
अदत्ताम्?—उन दोनोंने हम २ को क्या दिया है? । युवां तभ्यः स्वं पुस्तकम्
आददाथाम्=तुम २ उन से अपना पुस्तक ले लो । आवां तुभ्यं वस्त्रं न दास्यावः=
हम २ तुझ को कपड़ा नहीं देंगे । त्वं मोहनसिंहस्य पुस्तकम् आदत्स्व=तू मोह-
नसिंह का पुस्तक ले ले । अहं तव समीपे न आगमिष्यामि=मैं तेरे समीप में
नहीं आऊंगा । त्वं मम पुस्तकं लेखनीं च कदा दास्यासि?—तू मेरा पुस्तक और
कलम कब देगा? । सः अस्मत् लेखनीं आदत्त=उस ने हम से कलम लिया है ॥

अनविंशः पाठः १९

(भाषा से संस्कृत बनाओ)

वह तुम्हारे लिये कुछ देने को आया है । सहायक बल देगा । हम उसके
समीप में पढ़ने को नहीं आयेंगे । वे सब हमारे समीप में पढ़ने को नहीं आये

हैं । क्या तुम उन का पुस्तक नहीं दोगे ? । हम स्वकीय (अपनी) पुस्तक उस के लिये नहीं देंगे । क्या तुम उस के साथ मिलने को जाओगे ? । हम उन से मिलने को नहीं गये । तुम्हारा सुहृद् कब आवेगा । हम मित्र में मिलने को गये । तुम्हारा सुहृद् कौन है ? । वह हमारे साथ नहीं जायगा । उस ने सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा है । वह उस के साथ मिलने को नहीं गया है । क्या तुम ने सत्यार्थप्रकाश को नहीं पढ़ा है ? ।

विंशः पाठः ॥

“क्रीड” धातु=“खेलना” के भूत, भविष्यत्, वर्तमान और विधि ॥

कर्त्ता,	भूतक्रिया,
सः	अक्रीडत्=वह खेला है
तौ	अक्रीडताम्=वे २ खेलते हैं
ते	अक्रीडन्=वे ३ खेलते हैं
त्वम्	अक्रीडः=तू खेला है
युवाम्	अक्रीडतम्=तुम २ खेलते हो
यूयम्	अक्रीडत=तुम ३ खेलते हो
अहम्	अक्रीडम्=मैं खेला हूँ
आवाम्	अक्रीडाव=हम २ खेलते हैं
वयम्	अक्रीडाम=हम ३ खेलते हैं

कर्त्ता	भविष्यत् क्रिया,
सः	क्रीडिष्यति=वह खेलेंगा
तौ	क्रीडिष्यतः=वे २ खेलेंगे
ते	क्रीडिष्यन्ति=वे ३ खेलेंगे
त्वम्	क्रीडिष्यसि=तू खेलेंगा
युवाम्	क्रीडिष्यथः=तुम २ खेलेंगे
यूयम्	क्रीडिष्यथ=तुम ३ खेलेंगे
अहम्	क्रीडिष्यामि=मैं खेलूंगा
आवाम्	क्रीडिष्यावः=हम २ खेलेंगे
वयम्	क्रीडिष्यामः=हम ३ खेलेंगे

कर्त्ता	वर्तमान क्रिया,
सः	क्रीडति=वह खेलता है
तौ	क्रीडतः=वे २ खेलते हैं
ते	क्रीडन्ति=वे ३ खेलते हैं
	इत्यादि,

कर्त्ता	विधिक्रिया,
सः	क्रीडतु, क्रीडतात्=वह खेले
तौ	क्रीडताम्=वे २ खेलें
ते	क्रीडन्तु=वे ३ खेलें
त्वम्	क्रीड, क्रीडनात्=तू खेल
युवाम्	क्रीडतम्=तुम २ खेलो,
यूयम्	क्रीडत=तुम ३ खेलो
अहम्	क्रीडानि=मैं खेलूँ,
आवाम्	क्रीडाव=हम २ खेलें
वयम्	क्रीडाम=हम ३ खेलें

इसी प्रकार “हस” धातु “हँसना” के भी रूप, भूत, भविष्यत्, वर्तमान और विधि क्रियाओं के जानने चाहिये । जैसे:—

सः	अहसत्=वह हँसा है
	इत्यादि

एकविंशः पाठः ॥

“पश्य (दृश्)” धातु=“देखना ” के भूतक्रिया आदि ॥

कर्त्ता भूतक्रिया,
 सः अपश्यत्=उमने देखा,
 तौ अपश्यताम्=उन २ ने देखा
 ते अपश्यन्=उन ३ ने देखा
 इत्यादि

कर्त्ता विधिक्रिया
 सः पश्यतु, पश्यतात्=वह देखे
 तौ पश्यताम्=वे २ देखें,
 ते पश्यन्तु=वे ३ देखें,
 त्वम् पश्य, पश्यतात्=तू देख,
 युवाम् पश्यतम्=तुम २ देखो इत्यादि।

कर्त्ता भविष्यत् क्रिया
 सः द्रक्ष्यति=वह देखेगा
 तौ द्रक्ष्यतः=वे २ देखेंगे
 ते द्रक्ष्यन्ति=वे ३ देखेंगे
 त्वम् द्रक्ष्यसि=तू देखेगा,
 युवाम् द्रक्ष्यथः=तुम २ देखोगे,
 यूयम् द्रक्ष्यथ=तुम ३ देखोगे,
 अहम् द्रक्ष्यामि=मैं देखूंगा,
 आवाम् द्रक्ष्यावः=हम २ देखेंगे
 वयम् द्रक्ष्यामः=हम ३ देखेंगे,

वर्तमानक्रिया-सः पश्यति इत्यादि ।

संस्कृत से भाषा बनाओ ॥

नेत्राभ्यां स न पश्यति । अहम् तैः न क्रीडिष्यामि, । त्वं
 तत्र मां विष्णुमित्रेण सह अपश्यः । अहं त्वा तत्र गत्वा द्रक्ष्या-
 मि । युवाम् बालकैः अक्रीडतम् ? । अहं तु न अक्रीडम् । स
 अक्रीडत् । यूयं राजगृहं द्रक्ष्यथ न वा ? । स मया क्रीडिष्यति ।
 त्वं मह्यं लेखनीं दास्यसि ? । न अहं तुभ्यं किञ्चित् अपि दा-
 स्यामि । पश्य मे ऐश्वर्यम् । पश्यत मृगम् ॥

द्वाविंशः पाठः २२ ॥

“लिख” धातु=“लिखना” के भू० भ० वर्त्त० विधि ॥

कर्त्ता भूतक्रिया
 सः अलिखत्=उमने लिखा है इत्यादि
 कर्त्ता वर्तमानक्रिया
 सः लिखति=वह लिखता है इत्यादि ।

कर्त्ता, भविष्यत् क्रिया
 सः लेखिष्यति=वह लिखेगा इत्यादि ।
 कर्त्ता विधिक्रिया
 सः लिखतु, लिखतात्=वह लिखे इत्यादि ।

त्रयोविंशः पाठः २३ ॥

“स्मृ” धातु=“यादकरना” के भू० भ० वर्त० विधि ॥

कर्त्ता, भूतक्रिया, कर्त्ता, भविष्यक्रिया

सः अस्मरत्=उस ने याद किया है इत्यादि । सः स्मरिष्यति=वह याद करेगा इत्यादि

कर्त्ता, वर्तमानक्रिया, कर्त्ता, विधिक्रिया

सः स्मरति=वह याद करता है इत्यादि । सः स्मरतु, स्मरतात्=वह याद करे इत्यादि

चतुर्विंशः पाठः २४ ॥

मः सूक्ष्माणि अक्षराणि पश्यति=वह बारीक अक्षरों को देखता है । तौ वृथा क्रीडतः=वे २ वृथा खेलते हैं । ते किं लिखन्ति ?=वे क्या लिखते हैं ? । एवं मातरं स्मरति=तू माता को याद करता है । युवाम् किं पश्यथः ?=तुम २ क्या देखते हो ? । यूयम् वृथा क्रीडथ=तुम वृथा खेलते हो । अहम् सारस्वतम् लिखामि=मैं सारस्वत लिखता हूँ । आवाम् स्वं पाठं स्मरावः=हम २ अपने पाठ को याद करते हैं । वयम् त्वाम् न पश्यामः=हम तुम को नहीं देखते हैं । सः न अक्रीडत्=वह नहीं खेला है । तौ लिखतः=वे २ लिखते हैं । ते पिताम् न स्मरन्ति=वे पिता को नहीं याद करते । त्वम् तं न अपश्यः=तूने उस को नहीं देखा है । युवाम् न अक्रीडतम्=तुम २ नहीं खेले हो । यूयम् किम् अलिखतः=तुम ने क्या लिखा है ? । अहम् आचार्यम् अस्मरम्=मैंने गुरु को याद किया है । आवाम् इन्द्रप्रस्थम् अपश्यावः=हम २ ने दिल्ली को देखा है । वयम् न अक्रीडामः=हम नहीं खेले हैं ॥

संस्कृत से भाषा बनाओ ॥

स सायं लेखिष्यति । तौ पाठं न स्मरिष्यतः । ते उत्सवं द्रक्ष्यन्ति । किं त्वं न क्रीडिष्यसि ? । युवाम् मध्याह्ने किं लेखिष्यथः ? । यूयम् भ्रातरं न स्मरिष्यथ ? । अहं समाजं द्रक्ष्यामि । आवाम् न क्रीडिष्यावः । वयम् अप्राध्यायीं लेखिष्यामः ॥

भाषा से संस्कृत बनाओ ॥

वह पाठ को याद करे । वे २ पुस्तक को देखें । वे न खेलें । तू अप्राध्यायी

को लिख । तुम २ अपने पाठ को याद करो । तुम ३ उत्सव न देखो । अब मैं न खेलूँ । हम २ पुस्तक लिखें । हम ३ पाठ को याद करें ॥

पञ्चविंशः पाठः २५ ॥

निम्नलिखित संस्कृत चिट्ठी, ऐसी रीति से लिखी है कि इस पुस्तक के समस्त आशय वाले पद आजायें ॥

मित्रवर्य !

अस्माकं भृत्यः युष्माकं समीपे अगच्छतु न वा ? अहम् तुभ्यम् प्रणामं कृत्वा तव यशः श्रुत्वा धन्यवादं दत्वा त्वया प्रेषितं पत्रं पठित्वा आनन्दं मत्वा हर्षम् आदाय तुभ्यं किञ्चित्कष्टं दातुं लिखामि; त्वया सह व्याकरणं पठितुम् आगत्य कञ्चित्कालं तव पार्श्वे स्थास्यामि तदा वर्षचतुष्टयं व्याकरणं पठिष्यामि; अहं च वेदपर्यन्तं पठितुं, तेषां पारं गन्तुं, तेन ब्रह्म ज्ञातुं, गुरुकुले स्थातुं, पण्डितैः शास्त्रार्थं कर्तुं, सत्यं मन्तुम्, अविद्यां मार्ष्टुं, ब्रह्म लोकहितं च चिन्तयितुं, धार्मिकैः सङ्गन्तुं, सत्पुरुषेषु आस्तुं, दुर्जनेभ्यः दूरे स्थातुं, अधार्मिकान् जेतुम्, इच्छामि; यदि यूषं आशिषो दास्यथ तर्हि स्वनेत्राभ्यां तत्सर्वं द्रक्ष्यामि, वेदार्थान् लेखिष्यामि, शास्त्रविचारे क्रीडिष्यामि, परं ब्रह्म स्मरिष्यामि— इति -आश्विनकृष्णाष्टम्यां सोमे संवत् १९४७ वि० ॥

भवन्मित्रवर्यः

भवदत्तः

पुस्तकों की सूची ॥

ऐसा और कतना संक्षेप से अब तक कोई नहीं छपा !

“ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दूपरागे द्वितीयोऽंशः”

शब्दप्रमाण द्वारा «सत्र ब्राह्मण दोनों वेद हैं वा क्या» ? इत्यादि का निर्णय ७१ प्रमाणों से किया है । इस में अथर्ववेद, तैत्तिरीय, शतपथब्रा०, साङ्ख्य, आपस्तम्ब, प्रातिशाख्य, कात्यायन, बौधायन, परिशिष्ट, मीमांसा, मनुस्मृति, ऐतरेय ब्रा०, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, कौशिकसूत्र, अमरकोश, लघुशब्देन्दुशेखर, निरुक्त, सायणभाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, वेदान्तसूत्र, न्यायदर्शन, तैत्तिरीय आरण्यक, पिङ्गलसूत्र, अरण्यक, न्यायविस्तर इन २७ ग्रन्थों से बहुत से प्रमाण संग्रह करके पं० तुलसीराम स्वामी ने बनाया -)॥ प्रथमोऽंशः -)॥

संस्कृत ग्रैमेटिकल प्राइमर ॥

बिना गुरु के संस्कृत सिखाती हैं—संस्कृत का प्रथम पुस्तक ॥। द्वितीय -)। तृतीय में अब की बार छपाने में सन्धि का विषय बढ़ाया गया है मूल्य घटाया -)॥ चतुर्थ भी तैयार हो रहा है ॥ प्रश्नोत्तरशतक (आर्यधर्म पर) -) प्रबन्धाकीर्ण -) शिक्षाध्याय ॥। आयुर्वेदशब्दार्णवकोष ॥२) यमयमीसूक्त पादरी विनियम आदि के दिये रूपों से उद्धारपूर्वक अर्थ संस्कृत तथा भाषा -) भजनेन्दु -) शास्त्रार्थ किराणा -) रामायण का आलहा पहली लड़ाई ॥ अष्टाध्यायी ॥ भर्तृहरिनीतिशतक भाषाटीका ॥ गणरत्नमहोदधि कोष ॥। मनुभाष्यभूमिका ॥। « तारीखदुनियां » (नागरी) संसार की उत्पत्ति को कितने वर्ष हुये ज्ञात होता है -) यज्ञोपवीतश० -) फने समाशवीनी (उर्दू) (विश्यागामियों की दुर्दशा दिखाई है -)॥ यही नागरी में ॥। कुमारीभूषण -) उपनिषद् संस्कृत और भाषाटीका ईश ॥ केन ॥ कठ ॥। प्रश्न ॥२) सुखक ॥। भागदूष्य ॥। तैत्तिरीय ॥। ये सात उपनिषद् भिन्न २ ती ३॥ के हैं परन्तु सत्ताई इकट्ठे ३) में । विदुरनीति -) दशोपनिषद् ॥। जीवनयात्रा ५ आश्रमों के धर्म हैं ॥ सीताचरित्र नावल नागरी (प्रथम भाग) ॥। उर्दू में चारों भाग १॥। प्रति भाग ॥। दमयन्तीस्वयंवरनाटक ॥। ये दोनों नये छपे हैं ॥

इकट्ठे पुस्तक लेने वालों को ४) में ५) के, ७) में १०) के, २०) में ३०) के और ५०) में १००) के पुस्तक मिलेंगे ।

पता—पं० छुट्टनलाल स्वामी परीक्षितगढ़ (ज़ि० मेरठ)

स्वामी औषधालय परीक्षितगढ़ जि० मेरठ

१ ज्वरघ्न भस्म १) तोला ।

नित्य ज्वर तथा तेव्या में रामबाण है चातुर्थक में भी कुछ २ काम देती है

२ “मतीसारारि चूर्ण”

यह चूर्ण सब प्रकार के दस्तों में जख २ दिशा से आओ हाथ पांख धो कर ९ मासे की फांकी करलो ॥) छिड़की ।

३ ददुघ्न

दाद को धो कर नित्य लगा दो तीन दिन में आराम होगा ॥) छिड़की ।

४ अर्क प्रनूतारि

यह अर्क सभी वैद्य जानते हैं सूख नहीं, आधी छटांक प्रातः सायं पीये ।
सौभाग्य शुंठोपाक इसके साथ बड़ा उपकारी है १) बीतल १

५ खांसी की गोली

मुख में गेर घुनती रहेगी आठ घड़ी तक रखने से आराम भाग होता है
१०८ का दाम १)

६ सुरमा सुधाञ्जन

इसे नेत्रों में लगाने से सब नेत्र रोग नष्ट होते हैं कुछ दिन सेवन से फुझी
तक जाती रहती है । नेत्र साफ होते हैं ॥) तोला ।

७-योगगजगुगुलवटी-गोली ।

प्रसिद्ध औषध है । भिन्न २ अनुपानों से अनेक रोगों पर काम देती है और नि-
र्यप्रति की बद्धजमी जो प्रायः लिखने पढ़ने आदि बैठने का काम करने वालों को
रहती है १ गोली सायंकाल निर्य खाने से सर्वथा दूर रहेगी १०८ गोली का मूल्य १)

१-हाक व्यय पुस्तकादि सब वस्तुओं का मूल्य के अतिरिक्त ग्राहक को देना
होगा ॥

२-कसीशम-४) में ५) तथा ७) में १०) और २०) में ३०) का माल मिलेगा

पता-छुटनलाल स्वामी

परीक्षितगढ़-झिना, मेरठ

ओ३म् ॥

संस्कृत-भाषा-तृतीयं पुस्तकम् ॥

परीक्षितगढ़ (जिला मेरठ) निवासि—
स्वामि-तुलसीराम-शर्मा-विरचितम् ॥

A

SANSKRIT- GRAMMATICAL PRIMER.

THIRD PART, III

BY

Pundit Tulsī Ram Sharma, Parichatgarh District Meerut

Printed at the Saraswati Press Allahabad.

संवत् १९५२ ता० ७ । ९ । ९५

इसकी रजिस्टरी कराई गई और किसी को छापने का

अधिकार नहीं है ॥

Second Edition
1000 Copies.

द्वितीयवार १०००
मूल्य ३/॥

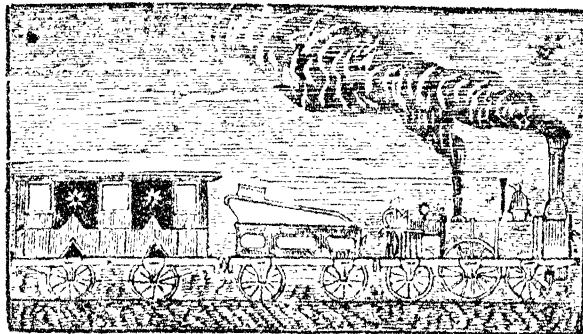
ओ३म्

भूमिका

इस पुस्तक में सामान्यतया व्याकरण का सुवन्तप्रकरण इसलिये पूरा कर दिया है कि अब केवल कारक समास और तद्धित तथा बड़ा प्रकरण तिङन्त रहा है सो चतुर्थपुस्तक में संक्षेप से उस को भी लिख देने का विचार है। प्रथमवार सन्धि विषय में कई सन्धि छूट गई थीं इस बार वे भी सम्मिलित कर दी हैं। जब कि चारों भाग छपकर तैयार हो जावेंगे तब एक खंडाभा संस्कृतव्याकरण पूरा हो जायगा। प्रथमवार की छपी १५०० पुस्तकों के इतना शीघ्र बिक जाने के कारण मैंने अपने परिश्रम को सफल समझा और विदित हुआ कि पाठकवर्ग इस पुस्तक को उपयोगी समझते हैं। सो चारों भाग पढ़ने पर निश्चय है कि उन को घर बैठे संस्कृत समझने और लिखने तथा बोलने की शक्ति हो जावेगी। चतुर्थभाग छपना आरम्भ होगया ॥

और प्रथम पुस्तक ४००० कापी छपी थीं सो सब समाप्त हुई अब चतुर्थवार छपी है ॥ इति ॥

तुलसीराम स्वामी



रेलगाडी

संस्कृत-भाषा-तृतीय-पुस्तकम् ॥

(१) जब इ, उ, ऋ, लृ, वर्णों से कोई स्वर परे होता है तो उक्त चारों वर्णों के स्थान में क्रम से य् व् र् और ल् ये आदेश किये जाते हैं ॥

(२) जो किसी वर्ण के स्थान में दूसरा वर्ण बनाया जाता है तो उसे "आदेश" कहते हैं ॥ उदाहरण, जैसे:-दधि+ओदनम्=दध्योदनम् यहां इ को य् । और मधु+अन्न=मध्वन्न यहां उ को व् । और पितृ+अर्थः=पित्रर्थः यहां ऋ को र् । और लृ+इत्=लित् यहां लृ को ल् होता है ॥

(३) जब ए ओ ऐ औ से परे कोई स्वर होता है तब उक्त चारों वर्णों को अय् अव् आय् और आव् ये आदेश क्रम से होते हैं । जैसे:-ने+अनम्=नयनम् । भो+अति=भवति । नै+अकः=नायकः । पौ+अकः=पावकः ॥

(४) परन्तु जब एक पद के अन्त में ए या ओ होते हैं और इन से आगे ह्रस्व अ होता है तब अ का लोप हो जाता है ॥

(५) जिस शब्द के अन्त में विभक्ति हो उस (विभक्तिसहित) को पद कहते हैं ॥

(६) ई-अ इ उ ऋ लृ ह्रस्व, और आ ई ऊ ऋ ए ओ ऐ औ दीर्घ और अ ३, इ ३, उ ३, ऋ ३, लृ ३, ए ३, ओ ३, ऐ ३, औ ३, ये सुत कहाते हैं ॥

उदाहरण (देखो संख्या ४) जैसे:-ते+अन्न=तेन्न । पटो+अन्न=पटोन्न ॥

(७) अ वर्ण से इ वर्ण मिल के दोनों को ए होता है और अ वर्ण से उ वर्ण मिल के दोनों को ओ आदेश होता है । जैसे:-उप+इन्द्र=उपेन्द्रः । सूर्य+उदयः=सूर्योदयः ॥

(८) परन्तु जहां २ हमने वर्ण शब्द कहा है वहां २ ह्रस्व, दीर्घ और सुत तीनों सम्भक्तने चाहिये । जैसे:-संख्या ७ में अ वर्ण कहने से अ, आ अ ३, और इ वर्ण कहने से इ, ई, इ ३, सम्भक्ते जाते हैं और संख्या १ में भी इ, उ, ऋ, लृ कहने से ह्रस्व दीर्घ सुत तीनों सम्भक्ते जाते हैं । उदाहरण संख्या ७ का जैसे:-गङ्गा+उद-

कम्=गङ्गोदकम् । ईश्वर+ऊतिः=ईश्वरोतिः । अम्बा+इन्द्रः=अम्बेन्द्रः । देव+ईशः=देवेशः । उदाहरण संख्या १ में जैसे:-लक्ष्मी+आगमनम्=लक्ष्म्यागमनम् । वधू+आसनम्=वध्वासनम् इत्यादि जानो । सुत को ११ नियम से सन्धि का निषेध है॥
९-अ, आ, ञ ३, ये तीनों आपस में सवर्ण कहाने हैं और इ, ई, उ ३ इत्यादि समस्त स्वरों के ह्रस्व, दीर्घ, सुत तीनों भेद सवर्ण कहाने हैं ॥

१०-जब अ इ उ ऋ वर्णों से कोई इन का ही सवर्ण स्वर परे हो तब दोनों को मिल के एक दीर्घ आदेश होता है जैसे:-दैत्य+अरिः=दैत्यारिः श्री+ईशः=श्रीशः । भानु+उदयः=भानूदयः । होतृ+ऋकारः=होतृकारः ॥

११-जब किसी सम्बोधनान्त (दूर से बुलाने) में स्वर हों तो वह सुत होता है और सुत को अगले स्वर से सन्धि नहीं होती । जैसे-देवदत्त ३ एहि । यहां अ ३+ए को मिल कर ऐ नहीं होता इसी प्रकार पुत्र ३ इति इत्यादि ॥

१२-स और तवर्ग के श और चवर्ग क्रम से होता है यदि श और चवर्ग से मेल हो तो । जैसे-रामस्+चिनोति=रामश्चिनोति । सत्+चित्=सच्चित् । राजन्+जय=राजज्जय । समिध्+चीयते=समिच्चीयते इत्यादि ॥

१३-स और तवर्ग के क्रम से ष और टवर्ग आदेश होते हैं यदि ष और टवर्ग से मेल हो तो । जैसे-तत्+टीका=तट्टीका । तत्+टीकते=तट्टीकते । अग्नि-मध्+टङ्कारः=अग्निमट्टङ्कारः । उद्+टङ्कनम्=उट्टङ्कनम् । टित्+ढाणञ्=टिड्ढाणञ् । पेष्+ता=पेष्टा । शिष्+तः=शिष्टः इत्यादि ॥

१४-पद के अन्त में य व ल ऋ भ घ ढ ध ज ष ग ङ द ख फ च ट त क प आदि से परे ङ ज, ष, न, म, हों तो पूर्वोक्त अक्षरों में जो जिस वर्ग का हो उस को उसी वर्ग का अनुनासिक* अक्षर प्रायः आदेश होता है । जैसे-एतद्+मुरारिः=एतन्मुरारिः । यहां तवर्ग के द् को म परे है इसलिये तवर्ग के अनुनासिक न् होता है । तत्+मात्रम्=तन्मात्रम् । चित्+मयम्=चिन्मयम् इत्यादि ॥

१५-तवर्ग से लकार परे हो तो उस को भी लकार ही हो जाता है । जैसे-तत्+लयः=तल्लयः । विद्वान्+लिखति=विद्वौलिखति न् को अनुनासिक ल् हुवा ॥

१६-च ट त क प को ज ङ द ग ब आदेश होते हैं यदि स्वर वा हयवरल ऋ ढ ध घ भ ज ङ द ग ब परे हों । जैसे-अच्+अन्तः=अजन्तः । पट्+अत्र=पहत्र । तत्+अत्र=तदत्र । वाक्+यथा=वाग्यथा । ककुप्+ऐन्त्री=ककुवैन्त्री । वाक्+वज्रम्=वाग्वज्रम् इत्यादि ॥

* जो नाक में ओले जाते हैं जैसे ङ, ज, ष, न, म, आदि ।

१७—किसी वर्ग के दूसरे तीसरे चौथे अक्षरों को उन २ का पहला अक्षर आदेश होता है यदि ख फ छ ठ थ घ ट ल क प परे हों तो । जैसे—उद्+थानम्=उत्थानम् । यहां लवर्ग का तीसरा ३ वर्ण है उस को पहिला त् आदेश हुआ । त्वग्+तत्र=त्वक्तत्र । इत्यादि ॥

१८—यदि किसी वर्ग के प्रथम द्वितीय तृतीय वा चतुर्थ वर्ण से ह् परे हो तो ह् को उसी वर्ग का चतुर्थ अक्षर आदेश होता है । जैसे वाक्+हासः=वाग्भासः । यहां ह् को कवर्ग का चतुर्थ घ् आदेश होकर १६ नियम के अनुसार क् को ग् होगया । ऐसे ही—त्वच्+हीनः=त्वज्जीनः । पट्+हमन्ति=पट्सन्ति । तत्+हविः=तद्विः । ककुप्+हासः=ककुब्भासः । इत्यादि ॥

१९—ऊ भ घ ङ ध ज व इत्यादि से परे श् को छ आदेश होता है यदि कोई स्वर वा ह य व र ल न ङ म परे हों । जैसे—तच्+शिवः=तच्छिवः इत्यादि ॥

२०—यदि अनुस्वार से पाँचों वर्गों में से किसी वर्ग का अक्षर परे हो तो उस अनुस्वार को उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर आदेश होता है । जैसे—त्यं+करोपि=त्यङ्करोपि । यहां अनुस्वार को कवर्ग परे है इसलिये कवर्ग का पञ्चम ङ् होकर ककार में मिल गया । इसी प्रकार त्वं+तनोपि=त्वत्तनोपि । इत्यादि ॥

२१—यदि ह्रस्व स्वर से परे ङ् ण् न् हों और इन से परे स्वर हो तो इन को द्विरव होता है । जैसे सुगण्+इह=सुगण्हिह । राजन्+इह=राजन्निह । प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा इत्यादि ॥

२२—जघ थ, त और स परे हों तथ विसर्ग (:) को स् होता है । जैसे—रामः+थं वदति=रामस्थं वदति । देवः+तिष्ठति=देवस्तिष्ठति । यज्ञदत्तः+सन्नेति=यज्ञदत्तस्सन्नेति । इत्यादि ॥

२३—यदि विसर्ग से ट ठ और ष परे हों तो विसर्ग को ष् आदेश होता है । जैसे—रामः+टीकते=रामष्टीकते । बालः+ठं पठति=बालष्ठं पठति । कः+षण्डः=कषण्डः । कः+षष्ठः=कषष्ठः इत्यादि ॥

२४—यदि ष ङ और श परे हों तो विसर्ग को श् होता है । जैसे—हरिः+चन्द्रः=हरिश्चन्द्रः । धनुः+छत्रे=धनुश्छत्रे । शंभुः+शङ्कते=शंभुश्शङ्कते । इत्यादि ।

२५—यदि व्यञ्जन परे हो तो म् को अनुस्वार () होता है । जैसे—

त्वम्+तिष्ठसि=त्वं तिष्ठसि । आषाम्+गच्छावः=आषां गच्छावः । यूयम्+क्रीड-
थ=यूयं क्रीडथ । वयम्+दास्यामः । वयं दास्यामः । धर्मानुकूलम्+धनम्+देहि=
धर्मानुकूलं धनं देहि । हरिम्+वन्दे=हरिं वन्दे इत्यादि ॥

२६-यदि अकार से परे के विसर्ग को अ ही परे हो तो उ होता है । जैसे:-
रामः+अर्च्यः=राम+उ+अर्च्यः, इस में संख्या ७ से अ+उ को ओ होकर रामो+
अर्च्यः, फिर संख्या ४ से अ का लोप होकर रामोर्च्यः ॥

२७-यदि ह, य, व, र, ल, न, म, ऋ, ढ, घ, च, भ, ज, ङ, द, ग, ञ, परे
हों तो अः को ओ होता है । जैसे:-चौरः+हरति=चौरो हरति । नरः+याति=
नरो याति । अश्वः+रंहति=अश्वो रंहति । वायवः+वान्ति=वायवो वान्ति ।
कः+लोकः=को लोकः । शिष्यः+नमति=शिष्यो नमति । रुग्णः+स्त्रियते=रुग्णो
स्त्रियते । वातः+क्लनक्लनायति=वातो क्लनक्लनायति । कः+ढीकते=को ढीकते ।
धर्मः+धरति=धर्मो धरति । इन्द्रः+घटते=इन्द्रो घटते । पण्डितः+भवति=प-
ण्डितो भवति । परमेश्वरः+जानाति=परमेश्वरो जानाति । शोभनः+डमरुः=
शोभनो डमरुः । देवदत्तः+दास्यति=देवदत्तो दास्यति । दूतः+गमिष्यति=दूतो
गमिष्यति । दुष्टः+बाधते=दुष्टो बाधते । इत्यादि ॥

२८-यदि इ, उ, ए, ओ, ऐ, औ, वर्णों से परे विसर्ग हो और विसर्ग से कोई स्वर
वा ह, य, व, ल, न, म, ऋ, ढ, घ, च, भ, ज, ङ, द, ग, ञ, ये वर्ण परे हों तो विसर्ग
को र होता है । जैसे-शत्रुः+हतः=शत्रुर्हतः । हरिः+याति=हरिर्याति । हरेः+
वचनम्=हरेर्वचनम् । बाह्वोः+लम्बः=बाह्वोर्लम्बः । देवैः+नमस्यः=देवैर्नमस्यः ।
गौः+गच्छति=गौर्गच्छति । कपिः+मृतः=कपिर्मृतः । वायुः+क्लञ्जः=वायुर्क्ल-
ञ्जः । शंभुः+ढीकते=शंभुर्ढीकते । वायुः+धरति=वायुर्धरति । इन्दुः+उदेति=
इन्दुरुदेति । पत्युः+भार्य्या=पत्युर्भार्य्या । विष्णुः+जागर्ति=विष्णुर्जागर्ति । शंभोः+
डमरुः=शंभोर्डमरुः । पत्युः+दयिता=पत्युर्दयिता । कपेः+गर्जनम्=कपेर्गर्जनम् ।
पादयोः+बन्धः=पादयोर्बन्धः । इत्यादि ।

२९-यदि सः और एषः से व्यञ्जन परे हो तो विसर्ग का लोप होजाता है ।
जैसे-सः+गच्छति=स गच्छति । एषः+क्रीडति=एष क्रीडति । इत्यादि ॥

३०-सन्धि उस को कहते हैं जो वर्ण वा पद आपस में मिलकर बोले जाते
और उन में जो आदेशादि होते हैं । और वह सन्धि इस नियम से होता है-

संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः ॥

नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥ १ ॥

अर्थः—एक पद में और धातु+उपसर्ग में और समास में सन्धि नित्य अर्थात् अवश्य होता है। और जब पद २ मिलकर वाक्य बनता है तब वक्ता के आधीन है। यह संक्षेप से सन्धि का प्रकरण पूरा हुआ ॥

अब अकारान्तादि क्रम से पुँसिङ्गाचक शब्दों के सात विभक्तियों और सम्बोधन के रूप दिखलाने हैं—

३१—जिस शब्द का कुछ अर्थ हो परन्तु वह केवल धातु वा प्रत्यय न हो वह प्रातिपदिक कहलाता है ॥

३२—प्रातिपदिक से आगे सात विभक्तियाँ होती हैं। अकारान्त «राम» शब्द की सात विभक्तियों का वर्णन «संस्कृत भाषा द्वितीय पुस्तक» में निम्न आये हैं उसी रीति से समस्त अकारान्त शब्दों के रूप होते हैं। परन्तु सर्वनाम संज्ञक शब्दों के रूपों में भेद हैः—

३३—सर्व, विप्रव, उभ, उभय, अन्य, अन्यतः, इतर, इतरप्रत्ययान्त, इतम-प्रत्ययान्त, मम, मिम, नेम, एक, पूर्व, पर, अधर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, द्वि, किम्, युष्मद्, अस्मद्, भवत् । ये ३३ प्रातिपदिक सर्वनाम कहाते हैं। इन में से सर्व (सब)ः—

प्रथमा विभक्ति	{	एकवचन-सर्वः=सब सब ने
		द्विवचन-सर्वौ=* २ सब, २ सबों ने
		बहुवचन-सर्वे=* ३ सब, ३ सबों ने
द्वितीया वि०	{	एकवचन-सर्वम्=सब का
		द्विवचन-सर्वौ=२ सबों का
		बहुवचन-सर्वान्=३ सबों का
तृतीया वि०	{	एकवचन-सर्वेण=सब ने, से, के साथ
		द्विवचन-सर्वाभ्याम्=२ सबों ने, से, "
		बहुवचन-सर्वैः=३ सबों ने, से, "

* आगे २ अङ्क से द्विवचन और ३ अङ्क से दो से अधिक समझो ॥

चतुर्थी वि०	{	१ व०-सर्वस्मै=सब के लिये	
	{	२ व०-सर्वाभ्याम्=२ सबों के लिये	
	{	३ बहुवच०-सर्वेभ्यः=३ सबों के लिये	
पञ्चमी वि०	{	१ व०-सर्वस्मात्=सब से	
	{	२ व०-सर्वाभ्याम्=२ सबों से	
	{	३ व०-सर्वेभ्यः=३ सबों से	
षष्ठी वि०	{	१ व०-सर्वेभ्यः=सब का, के, की	
	{	२ व०-सर्वयोः=२ सबों का, के, की	
	{	३ व०-सर्वेषाम्=३ सबों का, के, की	
सप्तमी वि०	{	१ व०-सर्वस्मिन्=सब में, पै, पर	
	{	२ व०-सर्वयोः=२ सबों में, पै, पर	
	{	३ व०-सर्वेषु=३ सबों में, पै, पर	
सम्बोधन में प्रथमा वि०	{	१ हे सर्व=हे सब	सम्बोधन हे शब्द के बिना भी होता है ॥
	{	२ हे सर्वो=२ सबो	
	{	३ हे सर्वे=३ हे सबो	

अकारान्त सर्वनाम "विश्व=सब शब्द"

१*	{	१ विश्वः	४	{	विश्वस्मै	७	{	विश्वस्मिन्
	{	२ विश्वी		{	विश्वोभ्याम्		{	विश्वयोः
	{	३ विश्वे		{	विश्वेभ्यः		{	विश्वेषु
२	{	१ विश्वम्	५	{	विश्वस्मात्	सम्बो-	{	हे विश्व
	{	२ विश्वी		{	विश्वोभ्याम्	धन १	{	हे विश्वी
	{	३ विश्वान्		{	विश्वेभ्यः		{	हे विश्वे
३	{	१ विश्वेन	६	{	विश्वस्य			अर्थ-सर्व शब्द के
	{	२ विश्वोभ्याम्		{	विश्वयोः			समान जानो ।
	{	३ विश्वैः		{	विश्वेषाम्			

“उभ=दोनों” सर्वनाम से सब विभक्तियों के केवल द्विवचन ही आते हैं। जैसे:-

१ उभौ=दोनों, ने	५ उभोभ्याम्=दोनों से
२ उभौ=दोनों को	६ उभयोः=दोनों का, के, की
३ उभोभ्याम्=दोनों ने, से, के साथ	७ उभयोः=दोनों में, पै, पर
४ उभोभ्याम्=दोनों के लिये	सम्बो- धन १ { हे उभौ=हे दोनों

*१,२,३,४,५,६,७ ये अङ्क पुस्तक भर में प्रथमा द्वितीयादि विभक्तियों के हैं ॥

अन्य शब्द (और वा दूसरा)

१ {	अन्यः=और वा दूसरा अन्या= २ और वा दूसरे अन्ये= ३ और वा दूसरे	५ {	अन्यस्मात् अन्याभ्याम् अन्येभ्यः
२ {	अन्यम्=और को, वा दूसरे को अन्या=और दोनों को, वा दूसरों को अन्यान्=और सब को, वा दूसरों को	६ {	अन्यस्य अन्ययोः अन्येषाम्
३ {	अन्येन=और से, के साथ अन्याभ्याम्=और दोनों से, के साथ अन्यैः=और सबों से, के साथ	७ {	अन्यस्मिन् अन्ययोः अन्येषु
४ {	अन्यस्मै अन्याभ्याम् अन्येभ्यः	८ {	हे अन्य हे अन्या हे अन्ये

उभय शब्द (बहुतों वा एक के दो भाग) सर्वनाम से सब विभक्तियों के केवल एकवचन और बहुवचन होते हैं, द्विवचन नहीं होता । जैसे:—

१ {	१-उभयः ३-उभये	४ {	१-उभयस्मै ३-उभयेभ्यः	७ {	१-उभयस्मिन् ३-उभयेषु
२ {	१-उभयम् ३-उभयान्	५ {	१-उभयस्मात् ३-उभयेभ्यः	८ {	१-हे उभय ३-हे उभये
३ {	१-उभयेन ३-उभयैः	६ {	१-उभयस्य ३-उभयेषाम्	सम्बोधन प्रथमा विभक्ति के तुल्य जानो ॥	

अन्यतर शब्द (कोई एक) —

१ {	अन्यतरः=कोई एक अन्यतरौ=कोई दो अन्यतरे=कोई सब	२ {	अन्यतरम्=किसी एक को अन्यतरौ=किन्हीं दो को अन्यतरान्=किन्हीं सब को		
३ {	अन्यतरेण=किसी एक ने, के साथ अन्यतराभ्याम्=किन्हीं दो ने, के साथ अन्यतरेः=किन्हीं सब ने, के साथ	४ {	अन्यतरस्मै=किसी एक के लिये अन्यतराभ्याम्=किन्हीं दो के लिये अन्यतरेभ्यः=किन्हीं सब के लिये		
५ {	अन्यतरस्मात् वही प्रकार पञ्चमी अन्यतराभ्याम् षष्ठी वा सप्तमी के अन्यतरेभ्यः रूपों के अर्थ जानो	६ {	अन्यतरस्य अन्यतरयोः अन्यतरेषाम्	७ {	अन्यतरस्मिन् अन्यतरयोः अन्यतरेषु

इसी प्रकार «इतर» (दूसरा) «कतर», «कतम» (कौनसा) «सम» (सब) और «एक» शब्द के रूप तथा अर्थ, जानो ॥

उदाहरण, जैसे:-

सर्वो जनः चन्द्रं पश्यति=सब लोग चांद को देखता है । मया सर्वे गमि-
ष्यन्ति=मेरे साथ सब जायेंगे । अहं सर्वान् पाठयामि=मैं सब को पढ़ाता हूं ।
तैः सर्वैरध्ययनं कृतम्=उन सबों ने पढ़लिया । यज्ञमानः सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो
धनं ददाति=यज्ञमान सब ब्राह्मणों के लिये धन देता है । सर्वेभ्यो याचनं वरं
नास्ति=सब से मांगना अच्छा नहीं है । सर्वेषां पश्य पराक्रमम्=सबों का
पराक्रम देख । सर्वस्मिन् ग्रामे मूर्खा वसन्ति=सब ग्राम में मूर्ख वसते हैं । हे
सर्वे यूयं नाट्यं न पश्यत=हे सबों तुम नाच मत देखो । विश्वे देवाः पश्यत यू-
यम्=हे सब देवताओं तुम देखो । विश्वेभ्यो जनेभ्यः शुभं चिन्तनीयम्=सब लोगों
के लिये भलाई सोचनी चाहिये । विश्वे भद्राणि पश्यन्तु=मद्य, सुखों को देखें ।
उभौ विद्यामप्यन्त्रौ भवतः=दोनों विद्यायुक्त हैं । इदम् अन्येषां गृहम्=यह औरों
का घर । द्वयोरन्यतरः पण्डितोऽस्ति=दोनों में कोई एक पण्डित है । युष्मास्व-
न्यतरेण भुक्तम्=तुम सब में किसी एक ने खालिया । सोऽस्मदितरः पुरुषोऽस्ति=वह
हम से दूसरा पुरुष है । युष्मासु कतमः शूरोऽस्ति=तुम में कौनसा शूर है । अ-
स्मासु कतरस्मै दास्यसि द्रव्यम्=तू हम में कौन से के लिये द्रव्य देगा । यः प-
ण्डितोऽस्ति तस्मै दास्यामि=जो पण्डित है उस के लिये दूंगा ॥

३४-पूर्व, पर, अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर इन ९ सर्व-
नामों के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन और पञ्चमी तथा सप्तमी के एकवचन में
दो दो रूप होते हैं । अन्य सब रूप सर्व शब्द के तुल्य हैं । जैसे:-

प्रथमा बहुवचन ।	उत्तरे, उत्तराः=वायें सब
पूर्वे, पूर्वाः=पहिले सब	अपरे, अपराः=दूसरे सब
परे, पराः=अगले सब	अधरे, अधराः=नीचे के सब
अवरे, अवराः=उरले सब	स्वे, स्वाः=अपने सब
दक्षिणे, दक्षिणाः=दहिने सब	अन्तरे, अन्तराः=भीतर वा बाहर के सब

स पूर्वेषां कीर्त्तिं श्रुत्वा हृष्टो भवति=वह पहलों की कीर्त्ति को सुन कर प्रसन्न
होता है । तेऽस्मत् परे भवन्ति=वे हम से अगले हैं । अवरस्य वाक्यं न श्रूयते=
उरले का वचन नहीं सुना जाता है ।

पञ्चमी का एक वचन—

पूर्वस्मात्, पूर्वात्=पहिले से
 परस्मात्, परात्=परले से
 अवरस्मात्, अवरात्=उरले से
 दक्षिणस्मात्, दक्षिणात्=दहिने से
 उत्तरस्मात्, उत्तरात्=बायें से
 अपरस्मात्, अपरात्=दूसरे से
 अधरस्मात्, अधरात्=नीचे के से
 स्वस्मात्, स्वात्=अपने से
 अन्तरस्मात्, अन्तरात्=बाहरी वा
 भीतरी से

सप्तमी का एक वचन—

पूर्वस्मिन्, पूर्वे=पहिले में
 परस्मिन्, परे=परले में
 अवरस्मिन्, अवरे=उरले में
 दक्षिणस्मिन्, दक्षिणे=दहिने में
 उत्तरस्मिन्, उत्तरे=बायें में
 अपरस्मिन्, अपरे=दूसरे में
 अधरस्मिन्, अधरे=नीचे के में
 स्वस्मिन्, स्वे=अपने में
 अन्तरस्मिन्, अन्तरे=बाहरी वा
 भीतरी में

३५-प्रथम, चरम, तय, अल्प, अर्द्ध, कतिपय, और नेम शब्द के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में दो २ रूप होते हैं। जैसे:—

- | | |
|-------------------------------------|-----------------------------|
| १-प्रथमाः, प्रथमे=पहिले सब। | १-अर्द्धाः, अर्द्धे=आधे सब। |
| १-चरमाः, चरमे=पिछिले सब। | १-कतिपयाः, कतिपये=कुछ |
| १-द्वितयाः, द्वितये=दो प्रकार के सब | या कितने ही सब। |
| १-अल्पाः, अल्पे=थोड़े सब। | |

शेष रूप राम शब्द के सदृश होते हैं ॥

नेमाः, नेमे=आधे सब।

शेष नेम शब्द के रूप सर्व शब्द के तुल्य जानो क्योंकि नेम शब्द की सर्वनाम संज्ञा कह चुके हैं ॥

३६-जिन शब्दों के अन्त में तीय (प्रत्यय) है उन के चतुर्थी पञ्चमी और सप्तमी के एकवचनों में दो २ रूप होते हैं। जैसे:—

- | | |
|---|--|
| ४ | { द्वितीयस्मै, द्वितीयाय=दूसरे के लिये
तृतीयस्मै, तृतीयाय=तीसरे के लिये |
| ५ | { द्वितीयस्मात्, द्वितीयात्=दूसरे से
तृतीयस्मात्, तृतीयात्=तीसरे से |

- ७ { द्वितीयस्मिन्, द्वितीये=दूसरे में
तृतीयस्मिन्, तृतीये=तीसरे में

३७-“निर्जर” (देवता) शब्द के रूपों में भी भेद है । जैसे:-

१ { १ निर्जरः=देवता । २ निर्जरौ, निर्जरसौ ३ निर्जराः, निर्जरसः	५ { १ निर्जरात्, निर्जरसः २ निर्जराभ्याम्=२ देवतां से ३ निर्जरेभ्यः=३ देवतां से
२ { १ निर्जरम्, निर्जरसम् २ निर्जरी, निर्जरसौ ३ निर्जरान्, निर्जरसः	६ { १ निर्जरस्य, निर्जरसः २ निर्जरायोः, निर्जरभ्योः ३ निर्जराणाम्, निर्जरसाम्
३ { १ निर्जरेण, निर्जरसा २ निर्जराभ्याम् ३ निर्जरैः=देवतां ने	७ { १ निर्जरे, निर्जरसि २ निर्जरायोः, निर्जरसोः ३ निर्जरेषु=३ देवतां में
४ { १ निर्जराय, निर्जरसे २ निर्जराभ्याम् ३ निर्जरेभ्यः=	८ { १ हे निर्जर=हे देवता २ निर्जरौ, हे निर्जरसौ ३ निर्जराः, हे निर्जरसः

उदाहरणानि:-

निर्जरसां मध्ये प्रथमः परमेश्वरोऽस्ति । युष्मासु कतमश्चरमोऽस्ति । द्वि-
तये युद्धाय गच्छन्ति । अल्पेन पुरुषार्थेन कार्य्याणां सिद्धिरपि अल्पा भवति । अर्द्धं
पण्डिताय दास्यामि । कतिपयाः वीराः युद्धाय समर्था भवन्ति । नेमं गच्छं देहि ।
द्वितीयस्माद् गृहात् आगच्छामि । तृतीयस्मिन् गृहे कोऽस्ति । कतिपये निर्जरसः
प्रत्यक्षाः न भवन्ति । वायुजलयोः निर्जरसोः कोऽधिकोऽस्ति । उभावपि तुल्यौ
भवतः ॥

(आकारान्ताः)

आकारान्त “विश्वपा” (सर्वरक्षक, सबकी रक्षा करने वाला) शब्द के रूप:-

१ { विश्वपाः विश्वपौ विश्वपाः	३ { विश्वपा विश्वपाभ्याम् विश्वपाभिः	५ { विश्वपः विश्वपाभ्याम् विश्वपाभ्यः
२ { विश्वपाम् विश्वपौ विश्वपः	४ { विश्वपे विश्वपाभ्याम् विश्वपाभ्यः	६ { विश्वपः विश्वपौः विश्वपाम्

७	{ विश्वपि विश्वपोः विश्वपासु	सं०	{ हे विश्वपाः हे विश्वपी हे विश्वपाः
---	------------------------------------	-----	--

इसी प्रकार "शङ्खधमा" (शङ्ख बजाने वाला) आदि शब्दों के रूप होते हैं। जैसे:-

१-शङ्खधमाः २-शङ्खध्मौ ३-शङ्खध्माः इत्यादि ॥

उदाहरणानि-

विश्वपां जगदीश्वरं स्तुत्या पाठः कार्यः=सर्वरक्षक परमेश्वर की स्तुति कर के पाठ करना। शङ्खधमाः युद्धे शङ्खान् धमन्ति=शङ्ख बजाने वाले युद्ध में शङ्खों को बजाते हैं। विश्वपा ईश्वरेण सर्वपां रक्षा कृता=सर्वरक्षक ईश्वर ने सब की रक्षा की। वयं विश्वपः प्रार्थनं कर्तुं गच्छामः=हम सर्वरक्षक की प्रार्थना करने को जाते हैं। विश्वपि विश्वे जनाः तिष्ठन्ति=सर्वरक्षक में सब जन ठहरते हैं। इत्यादि ॥

(इकारउकारान्त)

इकारान्त पुंलिङ्ग "कवि" शब्द के रूप जैसे:-

१	{ कविः=कवि "शाहू"	५	{ कवेः=कवि से कविभ्याम्=२ कवियों से कविभ्यः=३ कवियों से
२	{ कविम्=कवि को कवीं=२ कवियों को कवीन्=३ कवियों को	६	{ कवेः=का, के, की कवीः=२ का, के, की कवीनाम्=३ का, के, की,
३	{ कविना=कवि ने, के साथ कविभ्याम्=२ ने, के साथ कविभिः=३ ने, के साथ	७	{ कवीं=में, पै पर कवीः=२ में, पै, पर कविषु=३ " " "
४	{ कवये=कवि के लिये कविभ्याम्=२ कवियों के लिये कविभ्यः=३ " " "	सं०	{ हे कवेः=हे कवि हे कवीं=हे २ कवियों हे कविभ्यः=हे ३ कवियों

उकारान्त "भानु" शब्द के रूप जैसे:-

१	{ भानुः=सूर्य भानू=२ " भानवः=३ "	३	{ भानुना=सूर्य ने, के साथ भानुभ्याम्=२ " " भानुभिः=३ " "
२	{ भानुम्=सूर्य को भानू=२ " को भानून्=३ " को	४	{ भानवे=सूर्य के लिये भानुभ्याम्=२ " भानुभ्यः=३ "

५ {	भानोः=सूर्य से	७ {	भानी=सूर्य में, पै, पर
	भानुभ्याम्=२ "		भान्वोः=२ " " "
	भानुभ्यः=३ "		भानुषु=३ " " "
६ {	भानोः=सूर्य का, के, की	सं० {	हे भानो
	भान्वोः=२ " " "		हे भानू
	भानूनाम्=३ " " "		हे भानवः

३८-इसी प्रकार हरि, ऋषि, मुनि, गिरि, रवि, कलि, निधि, विधि आदि इकारान्तों और वायु, पायु, सायु, विष्णु, शरभु, प्रभु, विभु आदि उकारान्त पुं-ल्लिङ्ग शब्दों के रूप जानने चाहिये । केवल पाँच शब्द में इतना भेद है कि:-

तृतीया-एकवचन-पत्या=पति ने, के साथ

चतुर्थी-एकव०-पत्ये=पति के लिये

पञ्चमी, षष्ठी-एकव०-पत्युः-पति से, वा का, के, की

सप्तमी-एकवचन-पत्या=पति में, पै, पर

३९-शेष सब रूप कवि शब्द के सदृश होते हैं । हां, पति शब्द जब किसी शब्द से मिलकर समास में आता है तो यह भेद नहीं होता किन्तु सभी रूप "कवि", के तुल्य होते हैं । जैसे:-

भूपतिना (तृ०) प्रजापत्ये (चतु०) गोपतेः (षष्ठी) गोपती (सप्तमी)

इकारान्त "कति" शब्द (कितने) के रूप केवल बहुवचन में आते हैं । जैसे:-

१ कति=कितने

५ कतिभ्यः=कितनों से

२ कति=कितनों को

६ कतीनाम्= " का, के, की

३ कतिभिः=कितनों ने, के साथ

७ कतिषु= " में, पै, पर

४ कतिभ्यः=कितनों के लिये

उदाहरणानि:-

कविः काव्यं करोति=कवि काव्य को बनाता है । हरी क्रीडतः=२ हरि खेलते हैं । ऋषयस्तपश्चक्रुः=सब ऋषि तप करते थे । रामो विश्वामित्रं मुनिं पप्रच्छ=रामचन्द्र ने विश्वामित्र मुनि को पूछा था । द्वी गिरी कीदृशौ शोभेते=दो पर्वत कैसे सुहाते हैं । किं त्वं रवीन् बहून् मन्यसे? =क्या तू सूर्यों को बहुत से मानता है ? । कलिनाऽधर्मो धर्षितः=कलियुग ने अधर्म बढ़ाया है । न कलिरधर्महेतुरस्ति=कलियुग अधर्म—हेतु नहीं है । द्वौ निधी पर्याप्ती=दो

खजाने पूरे हैं। तैर्विधिभिः कार्यं करणीयम्=उन विधियों के साथ कार्य करना चाहिये। वायवे स्वाहा=वायु के लिये आहुति। शम्भुविष्णुभ्यां नमः=शम्भु और विष्णु दोनों के लिये नमस्कार। प्रभुभ्यो नमः=प्रभुओं के लिये नमस्कार। अशौं-रोगे पायोः रुधिरवर्षा भवति=बवासीर-रोग में गुदा से रुधिरवर्षा होती है। शम्भुविष्णुभ्यां धनुषी गृहाण=शम्भु और विष्णु से २ धनुषों को ग्रहण कर। वायूनां कोपः=वायुओं का क्रोध। उन्नरकारके मायौ पर्पटस्य क्वाथं पिबेत्=उन्नरकारक पित्त में पितपापड़े का क्वाथ (काढ़ा) पीवे। मायुशायवोर्महद्बलम्=पित्त वायुओं का बड़ा बल है। कविषु चातुर्यं भवति=कवियों में चतुराई होती है। हे हरे! मां रक्ष=हे हरि मुक्त को बचा। हे मुनयो! धर्मं ब्रूत=हे मुनियो! धर्म को बताओ। कति छात्राः पठन्ति?=कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं?। कतीनां छात्राणां पाठः श्रुतः?=कितने विद्यार्थियों का पाठ सुना। इत्यादि ॥

३९-“द्वि” शब्द केवल द्विवचन में आता है। जैसे:-

- | | |
|-----------------------------------|----------------------------|
| १ द्वौ=दो | ५ द्वाभ्याम्=दोनों में |
| २ द्वौ=दोनों को | ६ द्वयोः=दोनों का, के, की |
| ३ द्वाभ्याम्=दोनों ने, से, के साथ | ७ द्वयोः=दोनों में, पै, पर |
| ४ द्वाभ्याम्=दोनों के लिये | सम्बोधन नहीं होता ॥ |

४०-सखि शब्द में बहुत भेद हैं। जैसे:-

- | | | |
|---|---|--|
| १ { सखा=मित्र
सखायौ=२ "
सखायः=३ " | २ { सखायम्=मित्र को
सखायौ=२ "
सखीन्=३ " | ३ { सख्या=से, ने
सखिभ्याम्=२ "
सखिभिः=३ " |
| ४ { सख्ये=के लिये
सखिभ्याम्=२ "
सखिभ्यः=३ " | ५ { सख्युः=मे
सखिभ्याम्=२ "
सखिभ्यः=३ " | ६ { सख्युः=का, के, की
सख्योः=२ " "
सखीनाम्=३ " " |
| ७ { सख्यौ=में
सख्योः=२ "
सखिषु=३ " | सं० { हे सखे
हे सखायौ
हे सखायः | “त्रि” शब्द केवल बहुवचन में आता है
१-त्रयः। २-त्रीन्। ३-त्रिभिः।
४-त्रिभ्यः। ५-त्रिभ्यः। ६-त्रयाणाम्।
७-त्रिषु। |

उदाहरणानि-

कति छात्रान् पाठयसि=तू कितने विद्यार्थियों को पढ़ाता है। कतिभिः

सखिभिः क्रीडसि=तू कितने मित्रों के साथ खेलता है । सखिभ्यो हितं करणी-
यम्=मित्रों के लिये हित करना चाहिये । द्वौ सखायौ परस्परं हसतः=दो मित्र
आपस में हंसते हैं । सख्यौ विश्वसिहि=मित्र में विश्वास कर । सखीनां वचनं
हितकारि भवति=मित्रों का वचन हितकारी होता है । सख्युर्मा विभीतः=मित्र
से मत डरो । त्रयाणां भागः=तीनों का भाग ॥

४१-ईकारान्त पपी (सूर्य) शब्द के रूप । जैसे:-

१ { पपीः पप्यौ पप्यः	३ { पप्या पपीभ्याम् पपीभिः	५ { पप्यः पपीभ्याम् पपीभ्यः	७ { पपी पप्योः पपीषु
२ { पपीम् पप्यौ पपीन्	४ { पप्ये पपीभ्याम् पपीभ्यः	६ { पप्यः पप्योः पप्याम्	सं० { हे पपीः हे पप्यौ हे पप्यः

इसी प्रकार "वातप्रसी" आदि शब्दों के रूप हैं ॥

पपीः उदेति=सूर्य उदय होता है । वातप्रसीं पश्य=वायुमापने वाले को
देख । पप्या शुक्रः उदेति=सूर्य के साथ शुक्र उदय होता है । वातप्रस्यो
पारितोषिकं देयम्=वायुमापक के लिये इनाम देना चाहिये । पप्यः अर्चिषो
निस्सरन्ति=सूर्य से किरणें निकलती हैं । वातप्रस्यो बुद्धिं पश्य=वायुमापक की
बुद्धि को देख ॥

१ { बहुश्रेयसी बहुश्रेयस्यौ बहुश्रेयस्यः	४ { बहुश्रेयस्यै बहुश्रेयसीभ्याम् बहुश्रेयसीभ्यः	७ { बहुश्रेयस्याम् बहुश्रेयस्योः बहुश्रेयसीषु
२ { बहुश्रेयसीम् बहुश्रेयस्यौ बहुश्रेयसीन्	५ { बहुश्रेयस्याः बहुश्रेयसीभ्याम् बहुश्रेयसीभ्यः	सं० { हे बहुश्रेयसि हे बहुश्रेयस्यौ हे बहुश्रेयस्यः
३ { बहुश्रेयस्या बहुश्रेयसीभ्याम् बहुश्रेयसीभिः	६ { बहुश्रेयस्याः बहुश्रेयस्योः बहुश्रेयसीनाम्	

४२-बहुलक्ष्मी शब्द में केवल प्रथमा विभक्ति के एकवचन में इतना भेद
है कि-"बहुलक्ष्मीः" यह विसर्गान्त रूप होता है । शेष सब रूप बहुश्रेयसी के
तुल्य होते हैं ॥

ईकारान्त «प्रधी» (पण्डित) शब्द के रूप । जैसे:-

१ {	प्रधीः प्रधयी प्रध्यः	३ {	प्रध्या प्रधीभ्याम् प्रधीभिः	५ {	प्रध्याः प्रधीभ्याम् प्रधीभ्यः	७ {	प्रधिय प्रधयोः प्रधीषु
२ {	प्रध्यम् प्रधयी प्रध्यः	४ {	प्रधयै प्रधीभ्याम् प्रधीभ्यः	६ {	प्रध्याः प्रध्योः प्रधीनाम्	सं० {	हे प्रधि हे प्रध्यौ हे प्रध्यः

४३-इसी प्रकार ग्रामणी और सेनानी शब्दों के रूप हैं । परन्तु मगनी के एकवचन में इतना भेद है कि:-ग्रामण्याम् । सेनान्याम् । शेष प्रधीवत् ॥

४४-जिन शब्दों में केवल एक स्वर है उन के रूप भिन्न हैं । जैसे:-

१ {	नीः नियौ नियः	२ {	नियम् नियौ नियः	३ {	निया नीभ्याम् नीभिः	४ {	नियै नीभ्याम् नीभ्यः
५ {	नियाः नीभ्याम् नीभ्यः	६ {	नियाः नियोः नीनाम्	७ {	नियाम् नियोः नीषु	सं० {	हे नीः हे नियौ हे नियः

४५-«सुश्री» और «यवक्री» आदि शब्दों के रूप भी «नी» शब्द के तुल्य जानो परन्तु «सुश्री» शब्द के सम्बोधन एकवचन में ह्रस्व इकार रहता है ।

जैसे:- हे सुश्री ॥

«सुधी» और «शुद्धधी» शब्द भी «सुश्री» शब्द के तुल्य हैं ॥

४६-«क्रौष्टु» शब्द उकारान्त है परन्तु «भानु» शब्द के तुल्य नहीं क्योंकि उस के रूपों में बहुत भेद है । जैसे:-

१ {	क्रौष्टा क्रौष्टारौ क्रौष्टारः	४ {	क्रौष्टे, क्रौष्टवे क्रौष्टुभ्याम् क्रौष्टुभ्यः	७ {	क्रौष्टरि, क्रौष्टौ क्रौष्टोः, क्रौष्टौः क्रौष्टुषु
२ {	क्रौष्टारम् क्रौष्टारौ क्रौष्टून्	५ {	क्रौष्टुः, क्रौष्टोः क्रौष्टुभ्याम् क्रौष्टुभ्यः	सं० {	हे क्रौष्टः हे क्रौष्टारौ हे क्रौष्टारः
३ {	क्रौष्ट्रा, क्रौष्टुना क्रौष्टुभ्याम् क्रौष्टुभिः	६ {	क्रौष्टुः, क्रौष्टोः क्रौष्टोः, क्रौष्टौः क्रौष्टूनाम्		

उदाहरणानि:-

पपी: उदेति=सूर्य्य उदय होता है । वातप्रम्यौ गच्छतः=दो वायुमापक जाते हैं । कलौ राजानः «बहुश्रेयस्यः» भवन्ति=कलियुग में राजे लोग «बहुत स्त्रियों वाले» हैं । बहुलक्ष्मीं नरं सर्वं चाटु वदन्ति=बहुभन वाले पुरुष को सब लोग खुशामद की कहते हैं । प्रम्यौ पश्य=२ विशेषबुद्धि वालों को देख । ग्रामशयः पश्य=ग्राम के नेताओं को देख । सेनान्या महायुद्धं कृतम्=सेनापति ने बड़ा युद्ध किया । नीभ्यां गच्छ=२ ले चलने वालों के साथ जा । सुश्रीभिः राजभिः महान् यज्ञः कृतः=उत्तम धन वाले राजों ने महान् (बड़ा) यज्ञ किया । यवक्रयः यवान् देहि=जौ खरीदने वाले के जौ दे । सुधीभ्यां दक्षिणां देहि=२ उत्तम बुद्धि वालों के लिये दक्षिणा दे । शुद्धधीभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः=पवित्रबुद्धि-ब्राह्मणों के लिये नमस्कार । क्रोष्टुः मा विभीत=शृगाल से मत डरो । वातप्रम्यौभ्यां तद्विद्यां गृहाण=२ वायुमापकों से उन की विद्या को ग्रहण कर । बहुश्रेयसीनां धातुः क्षीणो भवति=बहुत स्त्री वालों का धातु क्षीण होता है । बहुलक्ष्म्याः मान्यं सर्वं कुर्वन्ति=बहुधनी का मान्य सब करते हैं । प्रधीम्यः किं न सिध्यति=तीव्रबुद्धि वालों से क्या नहीं सिद्ध होता ? । ग्रामशयोर्धनं देहि=२ ग्राम के नेताओं का धन दे । सेनानीनां वलं पश्य=सेनापतियों के बल को देख । सुश्रियां «चाटुकाराः» मा भवत=बहुधनियों की «खुशामद करने वाले» मत होओ । यवक्रयोरस्ति धैर्यम्=२ जौ खरीदने वालों में धैर्य है । क्रोष्टुषु परस्परस्य रुतं शृणु=शृगालों में आपस के शब्द को सुन । हे बहुश्रेयसि ! बहु मा क्रीड=हे बहुस्त्रीक बहुत मत क्रीड़ा कर । हे बहुलक्ष्म्यौ गर्वं मा कुरुतम्=२ हे बहु धनियो ! गर्व मत करो । हे ग्रामशयः कृपकान् दुःखितान् मा कुरुत=हे ग्राम के नेताओ ! कृषकों को दुःखित मत करो । इत्यादि ॥

१ { अतिचमूः अतिचस्त्री अतिचस्वः	३ { अतिचस्वा अतिचमूभ्याम् अतिचमूभिः	५ { अतिचस्वाः अतिचमूभ्याम् अतिचमूभ्यः	७ { अतिचस्वाम् अतिचस्वोः अतिचमूषु
२ { अतिचमूम् अतिचस्वौ अतिचमन्	४ { अतिचस्वै अतिचमूभ्याम् अतिचमूभ्यः	६ { अतिचस्वाः अतिचस्वोः सं० अतिचमूनाम्	{ हेअतिचमू हेअतिचस्वौ हेअतिचस्वः

*द्विवचन का चिन्ह अङ्क २ है ॥

१ { खलपूः खलप्री खलपः	५ { खलपः खलपूभ्याम् खलपूभ्यः	१ { स्वभूः स्वभुवी स्वभुवः	५ { स्वभुवः स्वभूभ्याम् स्वभूभ्यः
२ { खलप्यम् खलप्री खलपः	६ { खलपः खलप्रीः खलपूनाम्	२ { स्वभुवम् स्वभुवी स्वभुवः	६ { स्वभुवः स्वभुवीः स्वभूनाम्
३ { खलप्या खलपूभ्याम् खलपूभिः	७ { खलपि खलप्रीः खलपूषु	३ { स्वभुवा स्वभूभ्याम् स्वभूभिः	७ { स्वभुवि स्वभुवीः स्वभूषु
४ { खलप्ये खलपूभ्याम् सं० खलपूभ्यः	{ हे खलपूः हे खलप्री हे खलपः	४ { स्वभुवे स्वभूभ्याम् सं० स्वभूभ्यः	{ हे स्वभूः हे स्वभुवी हे स्वभुवः

४७-“स्वयम्भू” शब्द भी “स्वभू” के तुल्य है। परन्तु “वर्षाभू” “पुनर्भू” “दृन्भू” “फारभू” ये चार शब्द “स्वभू” के तुल्य नहीं किन्तु “खलपू” शब्द के सदृश हैं। और “सुलू” “पवलू” आदि शब्द तो “खलपू” शब्द के तुल्य हैं ही। जैसे:-

अतिवमूर्खियते=अधिक सेना वाला जीतता है। खलप्या कीदृशी स्फूर्तिः आविष्टिक्रयते=बुहारने वाले ने कैसी फुरती प्रकट करी है। जीवात्मा परमात्मा च द्वावपि स्वभुवी स्तः=जीव और ब्रह्म दोनों ही अजन्मा (स्वभू) हैं। त्रयोऽपि स्वयम्भुवः सन्ति जीव ईश्वरः प्रकृतिश्च=तीनों ही अजन्मा हैं जीव, ईश्वर और प्रकृति। शब्दायमानं वर्षाभवं पश्य=बोलते मेंढक को देख। किं शास्त्रं पुनर्भुवं निन्दति=क्या शास्त्र दूसरे वर को निन्दा करता है। ? “य-यत्नः” “सुत्नः” सन्ति=“यवकाटने वाले” “अच्छे काटने वाले” हैं। स्वयम्भुवे नमः=स्वयम्भू के लिये नमस्कार। वर्षाभ्वः भयं मा कुरु=मेंढक से भय मत कर। यवलीः, हस्ती लूनौ=जव काटने वालों के, २ हाथ कट गये। हे स्वयम्भूः परमेश्वर ३ अस्मान् रक्ष=हे अजन्मा परमेश्वर हम को रक्षा कर। हे खलप्री तिष्ठतम्=ऐ बुहारने वाली ठहरो ॥

ऋकारान्त “विधातृ” शब्द ॥

१-विधाता २विधातारी ३विधातारः २-विधातारम् २विधातारी ३विधातारः ३-विधात्रा २विधातृभ्याम् ३विधातृभिः ४-विधात्रे २विधातृभ्याम् ३विधातृभ्यः

५-विधातुः रविधातुभ्याम् इविधातृभ्यः ६-विधातुः रविधात्रोः इविधातृणाम्
 ७-विधातरि रविधात्रोः इविधातृषु सं० हे विधातः हेविधातारौ हेविधातारः
 १-पिता रपितरी इपितरः २-पितरम् रपितरी इपितृन्
 आगे विधातृ शब्द के सदृश है ॥

४८-“धातृ” “नप्तृ” “त्वष्टृ” “क्षत्” “होतृ” “प्रशास्त्र” इत्यादि शब्दों के रूप तो “विधातृ” शब्द के तुल्य हैं परन्तु “जामातृ” “भ्रातृ” और “नृ” शब्द के रूप प्रथमा और द्वितीया के द्विवचन तक “पितृ” शब्द के तुल्य हैं ॥

४९-केवल “नृ” शब्द के षष्ठी बहुवचन में-नृणाम्, नृणाम् । ये दो रूप होते हैं ।

ओकारान्त “गो” शब्द के रूप ॥

१-गौः	रगावौ	इगावः ।	२-गाम्	रगावौ	इगाः ।
३-गवा	रगोभ्याम्	इगोभिः ।	४-गवे	रगोभ्याम्	इगोभ्यः ।
५-गोः	रगोभ्याम्	इगोभ्यः ।	६-गोः	रगवोः	इगवाम् ।
७-गवि	रगवोः	इगोषु ।	सं०-हे गौः	रहे गावौ	इहे गावः ।

“द्यो” आदि शब्दों के रूप “गो” शब्द के सदृश हैं ।

ऐकारान्त “रै” शब्द ॥

१-राः	ररावौ	इरायः ।	२-रायम्	ररावौ	इरायः ।
३-राया	रराभ्याम्	इराभिः ।	४-राये	रराभ्याम्	इराभ्यः ।
५-रायः	रराभ्याम्	इराभ्यः ।	६-रायः	ररायोः	इरायाम् ।
७-रायि	ररायोः	इरासु ।	सं०-हेराः	रहे रायौ	इहे रायः ॥

औकारान्त “ग्लौ” शब्द ॥

१-ग्लौः	रग्लावौ	इग्लावः ।	२-ग्लावम्	रग्लावौ	इग्लावः ।
३-ग्लावा	रग्लौभ्याम्	इग्लौभिः ।	४-ग्लावे	रग्लौभ्याम्	इग्लौभ्यः ।
५-ग्लावः	रग्लौभ्याम्	इग्लौभ्यः ।	६-ग्लावः	रग्लावोः	इग्लावाम् ।
७-ग्लावि	रग्लावोः	इग्लौषु ।	सं०-हेग्लौः	रहेग्लावौ	इहेग्लावः ॥

सब ऐकारान्त शब्द “रै” शब्द के तुल्य और सब औकारान्त शब्द “ग्लौ” शब्द के तुल्य हैं ॥

उदाहरण—

हे विधातः ! दयां कुरु=हे ईश्वर ! दया कर । पितरी मेवस्व=२ पितरों को सेवाकर । धात्रा जगत् रक्षितम्=प्रभु ने जगत् रखा । पितामही नप्ते मिष्टं

ददाति=दावा प्रोते के लिये मिठाई देना है । त्वष्टुः मञ्जूषामानय=बढ़ई से सिन्दूरकधी को ला । सेवा सत्तुः धर्मोऽस्ति=सेवा शूद्र का धर्म है । प्रशास्तृणा-
भाक्षा सन्तव्या=हाकिमों की आज्ञा माननी चाहिये । जामाते कन्यां ददाति=
जामाता के लिये कन्या का दान करता है । नृषु देवेषु च किमन्तरमस्ति=मनुष्यों
और देवतों में क्या अन्तर है । भ्रातरी रामलक्ष्मणी बभूवतुः=रामलक्ष्मण २ भाई
थे । गां देहि=गीको दे । द्यौः प्रकाशते=आकाश प्रकाशित हो रहा है । राया
सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति=धन के साथ सब कार्य सधते हैं । ग्लानः कराः
शीतलाः सन्ति=चन्द्रमा की किरणें ठण्डी हैं । इत्यादि ॥

हकारान्त “मधुलिह्” शब्द ॥

१-मधुलिह्, इ २ मधुलिहौ ३ मधुलिहः २-मधुलिहम् २ मधुलिहौ ३ मधुलिहः
३-मधुलिहा २मधुलिहभ्याम् ३मधुलिहभिः ४-मधुलिहे २मधुलिहभ्याम् ३मधुलिहभ्यः
५-मधुलिहः २मधुलिहभ्याम् ३मधुलिहभ्यः ६-मधुलिहः २मधुलिहोः ३मधुलिहाम्
७-मधुलिहि २ मधुलिहोः ३ मधुलिहत्सु, मधुलिहत्सु ॥

५०-प्रथमाविभक्ति में हे लगाने से सम्बोधन बनता है ॥

१-मित्रध्रुक्, मित्रध्रुग्, मित्रध्रुट्, मित्रध्रुङ् । २ मित्रद्रुहौ ३ मित्रद्रुहः ।
२-मित्रद्रुहम् २मित्रद्रुहौ ३मित्रद्रुहः । ३-मित्रद्रुहा २मित्रद्रुहभ्याम्, मित्रद्रुहभ्याम् ।
३मित्रद्रुभिः, मित्रद्रुभिः । ४-मित्रद्रुहे २मित्रद्रुहभ्याम्, मित्रद्रुहभ्याम् ३मित्र-
द्रुभ्यः, मित्रद्रुभ्यः । ५-मित्रद्रुहः २मित्रद्रुहभ्याम्, मित्रद्रुहभ्याम् ३मित्रद्रुहभ्यः,
मित्रद्रुभ्यः । ६-मित्रद्रुहः २मित्रद्रुहोः ३मित्रद्रुहाम् । ७-मित्रद्रुहि २मित्रद्रुहोः
३ मित्रद्रुहत्सु, मित्रद्रुहत्सु, मित्रद्रुहत्सु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है ॥

१-गोधुक्, गोधुग् २ गोदुहौ ३ गोदुहः । २-गोदुहम् २ गोदुहौ ३ गोदुहः ।
३-गोदुहा २ गोधुभ्याम् ३ गोधुभिः । ४-गोदुहे २ गोधुभ्याम् ३ गोधुभ्यः ।
५-गोदुहः २ गोधुभ्याम् ३ गोधुभ्यः । ६-गोदुहः २ गोदुहोः ३ गोदुहाम् ।
७-गोदुहि ३ गोदुहोः ३ गोधुक्षु । सं० प्रथमा के तुल्य है ॥

५१-“तत्त्वमुह्” “स्नुह्” और “स्निह्” शब्दों के रूप “मित्रद्रुह्” शब्द के तुल्य हैं ॥

१-भारवाट्, भारवाङ् २ भारवाहौ ३ भारवाहः । २-भारवाहम् २ भार-
वाहौ ३ भारीहः । ३-भारीहा २ भारवाहभ्याम् ३ भारवाहभिः । ४-भारीहे

२-भारवाङ्भ्याम् ३ भारवाङ्भ्यः । ५-भारीहः २ भारवाङ्भ्याम् ३ भारवाङ्भ्यः ।
 ६-भारीहः २ भारीहोः ३ भारीहाम् । ७-भारीहि २ भारीहोः ३ भारवाट्सु ।
 सम्बोधन प्रथमा के तुल्य जानो ॥

१-अनङ्गान् २ अनङ्गाही ३ अनङ्गाहः । २-अनङ्गाहम् २ अनङ्गाही ३ अ-
 नङ्गहः । ३-अनङ्गहा २ अनङ्गद्व्याम् ३ अनङ्गद्भिः । ४-अनङ्गहे २ अनङ्गद्व्याम् ।
 ३ अनङ्गद्व्यः ५-अनङ्गहः २ अनङ्गद्व्याम् ३ अनङ्गद्व्यः । ६-अनङ्गहः २ अन-
 ङ्गहीः । ३ अनङ्गहाम् । ७-अनङ्गहि २ अनङ्गहोः ३ अनङ्गरसु । सम्बो-हे अन-
 ङ्वन् २ हे अनङ्गाही ३ हे अनङ्गाहः ॥

५२-“तुराणाङ्” शब्द “मधुलिह्” के तुल्य है परन्तु इतना भेद है कि जहां २
 ह् को ङ् वा ट् होता है वहां २ सा को षा ऐना मूर्धन्य होता है । जैसे—
 तुराणाङ् । तुराणाट् । इत्यादि ॥

मधुलिह् रसं लेढि=मैरा रस को चाटता है । मित्रद्रुहः मुखं नाऽवलोक-
 नीयम्=मित्रद्रोही का मुंह न देखना चाहिये । गोदुहम् आह्वयस्व=गौदुहने वाले
 को बुलाता । तत्त्वमुहा भूमः कृतः=तत्त्वभूला ने भूम किया । स्नुहः दन्तधावनं
 मनीषीनं सम्पद्यते=सिंहोड़े की दतीन अच्छी बमतो है । स्निहे प्रियं वस्तु देहि=
 प्यारे के लिये प्यारी वस्तु दे । भारीहो भारम् उद्धर=शोक उठाने वाले से शोक
 उतार । अनङ्गहां बलं पश्य=बैलों का बल देख । तुराणाङ् जलवर्षाः करोति=
 इन्द्र जल वर्षाओं को करता है । इत्यादि ॥

रेफान्त-“चतुर्” शब्द केवल बहुवचन में है जैसे—

१-चत्वारः । २-चतुरः । ३-चतुर्भिः । ४-चतुर्भ्यः । ५-चतुर्भ्यः । ६-च-
 तुर्णाम् । ७-चतुर्षु ॥

मकारान्त “प्रशाम्” शब्द—

१-प्रशान् २ प्रशानी ३ प्रशानः । २-प्रशानम् २ प्रशानी ३ प्रशानः ।
 ३-प्रशामा २ प्रशान्त्याम् ३ प्रशान्तिः । ४-प्रशामे २ प्रशान्त्याम् ३ प्रशान्त्यः ।
 ५-प्रशानः २ प्रशान्त्याम् ३ प्रशान्त्यः । ६-प्रशानः २ प्रशानीः ३ प्रशामाम् ।
 ७-प्रशान्ति २ प्रशानीः ३ प्रशान्तु । हे प्रशान् । हे प्रशानी । हे प्रशानः ॥

५३-“किम्” शब्द सर्वनाम है और उस के रूप “सर्व” शब्द के तुल्य होते
 हैं । जैसे-कः की के । कम् की कान् । इत्यादि ॥

मकारान्त “इदम्” शब्द सर्वनाम । जैसे:-

- १-अयम् । इमी । इमे । २-इमम् । इमी । इमान्, एनान् ।
- ३-अनेन, एनेन । आभ्याम् । एभिः । ४-अस्मै । आभ्याम् । एभ्यः ।
- ५-अस्मात् । आभ्याम् । एभ्यः । ६-अस्य । अनयोः, एनयोः । एषाम् ।
- ७-अस्मिन् । अनयोः, एनयोः । एषु ॥

उदाहरण-

चतुर्थी देह=चारों के लिये दे । प्रथमं पश्य=प्रथाम् को देख । इमी कस्य पुत्री स्तः=ये २ किस के पुत्र हैं । अनेन व्याकरणम् अधीतम् एनम् न्यायमध्यापय=इस ने व्याकरण पढ़लिया इस को न्याय पढ़ाव । इत्यादि ॥

नकारान्त “राजन्” शब्द । जैसे:-

- १-राजा । २-राजानी । ३-राजानः । २-राजानम् । २-राजानी । ३-राज्ञः ।
- ३-राज्ञा । २-राजभ्याम् । ३-राजभिः । ४-राज्ञे । २-राजभ्याम् । ३-राजभ्यः ।
- ५-राज्ञः । २-राजभ्याम् । ३-राजभ्यः । ६-राज्ञः । २-राज्ञोः । ३-राज्ञाम् ।
- ७-राज्ञि, राजनि । २-राज्ञोः । ३-राजसु । सम्बोधन हेराजन् । २-हेराजानी । हेराजानः ॥
- १-यउवा । २-यउवानी । ३-यउवानः । २-यउवानम् । २-यउवानी । ३-यउवनः ।
- ३-यउवना । २-यउवभ्याम् । ३-यउवभिः । ४-यउवने । २-यउवभ्याम् । ३-यउवभ्यः ।
- ५-यउवनः । २-यउवभ्याम् । ३-यउवभ्यः । ६-यउवनः । २-यउवनोः । ३-यउवनाम् ।
- ७-यउवनि । २-यउवनोः । ३-यउवसु । सं०-हेयउवन् । २-हेयउवानी । ३-हेयउवानः ॥

५४-“ब्रह्मन्” शब्द भी “यउवन्” के तुल्य है परन्तु न कोण हो जाता है । जैसे-ब्रह्माणी । ब्रह्माणः । इत्यादि ॥

- १-ब्रह्महा । २-ब्रह्महणी । ३-ब्रह्महणः । २-ब्रह्महणम् । २-ब्रह्महणी । ३-ब्रह्मघ्नः ।
- ३-ब्रह्मघ्ना । २-ब्रह्महभ्याम् । ३-ब्रह्महभिः । ४-ब्रह्मघ्ने । २-ब्रह्महभ्याम् । ३-ब्रह्महभ्यः ।
- ५-ब्रह्मघ्नः । २-ब्रह्महभ्याम् । ३-ब्रह्महभ्यः । ६-ब्रह्मघ्नः । २-ब्रह्मघ्नोः । ३-ब्रह्मघ्नम् ।
- ७-ब्रह्मघ्नि, ब्रह्महणि । २-ब्रह्मघ्नोः । ३-ब्रह्महसु । सम्बोधन-हे ब्रह्महन् । २-हे ब्रह्महणी । ३-हे ब्रह्महणः ॥

- १-मघवा, मघवान् । २-मघवानी, मघवन्ती । ३-मघवानः, मघवन्तः ।
- २-मघवानम्, मघवन्तम् । २-मघवानी, मघवन्ती । ३-मघोनः, मघवन्तः ।
- ३-मघोना, मघवन्ता । २-मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । ३-मघवभिः, मघवद्भिः ।

- ४-मघोने, मघवते । मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । मघवभ्यः, मघवद्भ्यः ।
 ५-मघोनः, मघवतः । मघवभ्याम्, मघवद्भ्याम् । मघवभ्यः, मघवद्भ्यः ।
 ६-मघोनः, मघवतः । मघोनोः, मघवतोः । मघोनाम्, मघवताम् ।
 ७-मघोनि, मघवति । मघोनोः, मघवतोः । मघवसु, मघवत्सु ।
 सं० हे मघवन् । हे मघवानौ, हे मघवन्ती । हे मघवानः, हे मघवन्तः ॥
 १-श्व । श्वानी । श्वानः । २-श्वानम् । श्वानी । श्वनः ।
 ३-श्वना । श्वभ्याम् । श्वभिः । ४-श्वने । श्वभ्याम् । श्वभ्यः ।
 ५-श्वनः । श्वभ्याम् । श्वभ्यः । ६-श्वनः । श्वनोः । श्वनाम् ।
 ७-श्वनि । श्वनोः । श्वसु । सं० हे श्वन् । हे श्वानी । हे श्वानः ॥
 १-युवा । युवानी । युवानः । २-युवानम् । युवानी । यूनः ।
 ३-यूना । युवभ्याम् । युवभिः । ४-यूने । युवभ्याम् । युवभ्यः ।
 ५-यूनः । युवभ्याम् । युवभ्यः । ६-यूनः । यूनोः । यूनाम् ।
 ७-यूनि । यूनोः । युवसु । सं० हे युवन् । हे युवानी । हे युवानः ॥

उदाहरण-

राजा प्रजाः पालयति=राजा प्रजाओं को पालता है । यजमानः यजन्ति=यज्ञकर्त्ता लोग यज्ञ करते हैं । ब्रह्मणे नमः=ब्रह्मा के लिये नमस्कार । ब्रह्मघ्नः दण्डय=ब्रह्महत्याओं को दण्ड दे । मघवतो भागः=इन्द्र का भाग । श्वभिर्भुक्तः=कुत्तों ने खालिया । यूनां विवाहः कार्यः=जवानों का विवाह करना चाहिये । राजानं पश्य=राजा को देख । ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते=ब्रह्म से प्रजा उत्पन्न होती हैं । ब्रह्महणो नरकं यान्ति=ब्रह्महत्यारे नरक को जाते हैं । राक्षसाः शुनो भुञ्जते=राक्षस लोग कुत्तों को खाते हैं । हे राजन् पाहि माम्=हे राजा बचा मुझे । हे युवानी कुत्र गच्छथः=हे २ जवानो कहां जाते हो । हे ब्रह्महणः धिक् युष्मान्=हे ब्रह्महत्यारो धिक्कार है तुम को । इत्यादि ॥

“ पथिन् ” शब्द ॥

- १-पन्थाः । पन्थानी । पन्थानः । २-पन्थानम् । पन्थानी । पथः ।
 ३-पथा । पथिभ्याम् । पथिभिः । ४-पथे । पथिभ्याम् । पथिभ्यः ।
 ५-पथः । पथिभ्याम् । पथिभ्यः । ६-पथः । पथोः । पथाम् ।
 ७-पथि । पथोः । पथिषु । सं० हे पन्थाः । हे पन्थानी । हे पन्थानः ॥
 पथिन् शब्द के तुल्य ही “मथिन्” शब्द है ॥

- १-ऋभुक्षाः । ऋभुक्षाणी । ऋभुक्षाणः । २-ऋभुक्षाणम् । ऋभुक्षाणौ । ऋभुक्षः ।
 ३-ऋभुक्षा । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभिः । ४-ऋभुक्षे । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभ्यः ।
 ५-ऋभुक्षः । ऋभुक्षिभ्याम् । ऋभुक्षिभ्यः । ६-ऋभुक्षः । ऋभुक्षोः । ऋभुक्षाम् ।
 ७-ऋभुक्षि । ऋभुक्षोः । ऋभुक्षिषु । सं० हे ऋभुक्षाः । हे ऋभुक्षाणौ । हे ऋभुक्षाणः ॥

“पञ्चन्” शब्द केवल बहुवचनान्त है । जैसे—

- १-पञ्च २-पञ्च ३-पञ्चभिः ४-पञ्चभ्यः ५-पञ्चभ्यः ६-पञ्चानाम् ७-पञ्चसु ॥

“अष्टन्” शब्द भी बहुवचनान्त है । जैसे—

- १-अष्टौ, अष्ट । २-अष्टौ, अष्ट । ३-अष्टभिः, अष्टाभिः । ४-अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः ।
 ५-अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः । ६-अष्टानाम् । ७-अष्टसु, अष्टासु ॥

“सप्तन्” और “नवन्” तथा “दशन्” शब्द भी “पञ्चन्” के तुल्य हैं ॥

उदाहरण—

कस्य ग्रामस्य पन्थानं गच्छसि=किस ग्राम के मार्ग को जाता है (तू) । सधा दधि मन्थति=मथनी से दही बिलोता है । ऋभुक्षे भागः=इन्द्र के लिये भाग । पञ्च पुरुषा आगताः=पांच पुरुष आये । सप्तानां सिन्धूनां पारे=सात समुद्रों के पार में । अष्टासु ग्रामेषु भ्रान्तः=आठ ग्रामों में भ्रमा । हे ऋभुक्षाः=हे इन्द्र ॥

जकारान्त “ऋत्विज्” शब्द । जैसे—

- १-ऋत्विक्, ऋत्विग् । ऋत्विजौ । ऋत्विजः । २-ऋत्विजम् । ऋत्विजौ । ऋत्विजः ।
 ३-ऋत्विजा । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भिः । ४-ऋत्विजे । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भ्यः ।
 ५-ऋत्विजः । ऋत्विग्भ्याम् । ऋत्विग्भ्यः । ६-ऋत्विजः । ऋत्विजोः । ऋत्विजाम् ।
 ७-ऋत्विजि । ऋत्विजोः । ऋत्विक्षु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है ॥

इसी प्रकार “रथयुज्” आदि जकारान्त शब्दों के रूप हैं ॥

५५-परन्तु “सम्राज्” “देवेज्” “विश्वसृज्” “पात्रसृज्” आदि कई शब्द “सम्राज्” के तुल्य हैं । यथा—

- १-सम्राट्, सम्राड् । सम्राजौ । सम्राजः । २-सम्राजम् । सम्राजौ । सम्राजः ।
 ३-सम्राजा । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भिः । ४-सम्राजे । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भ्यः ।
 ५-सम्राजः । सम्राड्भ्याम् । सम्राड्भ्यः । ६-सम्राजः । सम्राजोः । सम्राजाम् ।

* इन शब्दों को भाष्यकार “रथयुज्” के सदृश मानते हैं ॥

७-सम्राजि । सम्राजोः । सम्राट्सु । सम्बोधन प्रथमा के तुल्य है ॥

ऐसे ही परिव्राट् । परिव्राजो । इत्यादि जानो ॥

१-विश्वाराड्, ट् । विश्वराजो । विश्वराजः ।

२-विश्वराजम् । विश्वराजौ । विश्वराजः ।

३-विश्वराजा । विश्वाराड्भ्याम् । विश्वाराड्भिः ।

४-विश्वराजे । विश्वाराड्भ्याम् । विश्वाराड्भ्यः । इत्यादि ॥

५६-जहां २ ज् को ड् वा ट् होता है वहां २ विश्व को विश्वा होजाता है ॥

उदाहरण-

वेद्याः समन्तात् ऋत्विजः शोभन्ते=वेदी के चारों ओर ऋत्विज् (हवन कर्त्ता) सुहाते हैं । रथयुजम् आहूय=रथजोता को बुला । तेन सम्राजा को योत्स्यति=उस सम्राट् (शहंशाह) के साथ कौन युद्ध करेगा । देवेजे नमः=देव पूजक के लिये नमस्कार । विश्वसृजः प्रजाः प्रजायन्ते=विधाता से प्रजा उत्पन्न होती हैं । पश्य पात्रमृजो हस्तौ=देख बरतन सांजने वाले के, हाथों को । अयं विश्वाराड्स्ति=यह विश्वाराट् है ॥

दकारान्त “तद्” शब्द सर्वनाम द्वितीयपुस्तक में लिख चुके हैं । और “त्यक्” शब्द भी उस के तुल्य ही है । जैने-स्यः त्यौ त्ये । स्यम् त्यौ त्यान् । स्येन त्याभ्याम् इत्यादि जानो ॥

और “यद्” शब्द भी तद् के ही सदृश है । जैसे-

१-यः । यौ । ये । २-यम् । यौ । यान् । ३-येन । याभ्याम् । इत्यादि ॥

५७-“एतद्” शब्द के रूपों में कुछ ही भेद है । जैसे:-

१-एपः । एतौ । एते । २-एतम्, एनम् । एतौ, एनौ । एतान्, एनान् ।

३-एतेन, एनेन । एताभ्याम् । एतैः । ४-एतस्मै, एताभ्याम् । एतेभ्यः ।

५-एतस्मात् । एताभ्याम् । एतेभ्यः । ६-एतस्य । एतयोः, एनयोः । एतेषाम् ।

६-एतस्मिन् । एतयोः, एनयोः । एतेषु ॥

दकारान्त “युष्मद्” और “अस्मद्” शब्द के रूप द्वितीय पुस्तक में आ-
चुके हैं और वे दोनों लिङ्ग अर्थात् पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में एक
से ही रहते हैं ॥

उदाहरण—

स गच्छति=वह जाता है । त्वं पश्य=तुस को देख । येन दूषितं तं मारय=जिस ने बिगाड़ किया उस को मार । एतस्मै किं दास्यसि=इस के लिये क्या देगा (तू) । तव गृहं कास्ति=तेरा घर कहां है । मयि पापं नास्ति=मुझ में पाप नहीं है ॥

- १-द्विपात्, द्विपाद् । द्विपादी । द्विपादः । २-द्विपादम् । द्विपादी । द्विपदः ।
३-द्विपदा । द्विपाद्भ्याम् । द्विपाद्भिः । ४-द्विपदे । द्विपाद्भ्याम् । द्विपाद्भ्यः ।
५-द्विपदः । द्विपाद्भ्याम् । द्विपाद्भ्यः । ६-द्विपदः । द्विपदोः । द्विपदाम् ।
७-द्विपदि । द्विपदोः । द्विपादसु । सं०-हे द्विपात् इत्यादि ॥

थकारान्त “अग्निमथ्” शब्द । जैसे:-

- १-अग्निमत्, द्वा । अग्निमथौ । अग्निमथः । २-अग्निमथम् । अग्निमथौ । अग्निमथः ।
३-अग्निमथा । अग्निमद्भ्याम् । अग्निमद्भिः । ४-अग्निमथे । अग्निमद्भ्याम् ।
अग्निमद्भ्यः । इत्यादि ॥

चकारान्त “प्रत्यच्” शब्द । जैसे:-

- १-प्रत्यङ् । प्रत्यञ्चौ । प्रत्यञ्चः । २-प्रत्यञ्चम् । प्रत्यञ्चौ । प्रतीचः ।
३-प्रतीचा । प्रत्यञ्चाम् । प्रत्यञ्चिः । ४-प्रतीचे । प्रत्यञ्चाम् । प्रत्यञ्च्यः ।
५-प्रतीचः । प्रत्यञ्चाम् । प्रत्यञ्च्यः । ६-प्रतीचः । प्रतीचोः । प्रतीचाम् ।
७-प्रतीचि । प्रतीचोः । प्रत्यक्षु । सं०-हे प्रत्यङ् इत्यादि ॥

“उदच्” शब्द के रूप । जैसे:-

- १-उदङ् । उदञ्चौ । उदञ्चः । २-उदञ्चम् । उदञ्चौ । उदीचः ।
३-उदीचा । उदञ्चाम् । उदञ्चिः । ४-उदीचे । उदञ्चाम् । उदञ्च्यः ।
५-उदीचः । उदञ्चाम् । उदञ्च्यः । इत्यादि ॥

- १-सम्यङ् । सम्यञ्चौ । सम्यञ्चः । २-सम्यञ्चम् । सम्यञ्चौ । समीचः ।
३-समीचा । सम्यञ्चाम् । सम्यञ्चिः । ४-समीचे । इत्यादि ॥

- १-सध्र्यङ् । सध्र्यञ्चौ । सध्र्यञ्चः । २-सध्र्यञ्चम् । सध्र्यञ्चौ । सध्रीचः ।
३-सध्रीचा । सध्र्यञ्चाम् । सध्र्यञ्चिः । ४-सध्रीचे । इत्यादि ॥

- १-तिर्यङ् । तिर्यञ्चौ । तिर्यञ्चः । २-तिर्यञ्चम् । तिर्यञ्चौ । तिरश्चः ।
३-तिरश्चा । तिर्यञ्चाम् । तिर्यञ्चिः । ४-तिरश्चे । तिर्यञ्चाम् । तिर्यञ्च्यः । इत्यादि ॥

- १-पयोमुग्, क्। पयोमुचौ। पयोमुचः। २-पयोमुचम्। पयोमुचौ। पयोमुचः।
 ३-पयोमुचा। पयोमुग्भ्याम्। पयोमुग्भिः। ४-पयोमुचे। इत्यादि।
 ७-ग्रहवचने-पयोमुक्षु ॥

उदाहरण-

द्विपाद् मनुष्यः चतुष्पाद्भ्यो बुद्धिमान् भवति=दुपाया मनुष्य चौपायों से बुद्धिमान् है। अग्निमथाग्निः उन्मथितः=अग्निमथ् ने अग्नि मथा। प्रत्यङ्चं पश्य=पीछे चलते को देख। उदीचा कुत्र विश्रामः कृतः=उत्तर को चलने वाले ने कहां विश्राम किया। समीचे नमः=सीधा चलने वाले के लिये नमस्कार। समीचः पन्थाः=सीधा चलने वाले का मार्ग। समीचि प्रसीदति लोकः=सीधा चलने वाले पर प्रसन्न-होता है संसार। हे अग्निमत् क्व यासि=हे अग्निमथ् कहां जाता है (तू)। शृणु तिरश्चां कीदृशः शब्दः=सुन तिरछा चलने वालों (सर्पादि) का कैसा शब्द है। पयोमुचः प्रावृषि वर्षन्ति=बादल वर्षा में बरसते हैं। पयोमुचां गर्जनं शृणु=बादलों के गर्जने को सुन ॥

तकारान्त “महत्” शब्द ॥

- १-महान्। महान्ती। महान्तः। २-महान्तम्। महान्ती। महतः।
 ३-महता। महद्भ्याम्। महद्भिः। ४-महते। महद्भ्याम्। महद्भ्यः।
 ५-महतः। महद्भ्याम्। महद्भ्यः। ६-महतः। महतोः। महताम्।
 ७-महति। महतोः। महत्सु। सं०-हे महन्। हे महान्ती। हे महान्तः॥
 १-भवान्। भवन्ती। भवन्तः। २-भवन्तम्। भवन्ती। भवतः।
 ३-भवता। भवद्भ्याम्। इत्यादि आगे महत् शब्द के सदृश जानो ॥

“ददत्” शब्द (ददत् के ऋकार का लोप हुवा है) ॥

- १-ददन्। ददती। ददतः। २-ददन्तम्। ददती। ददतः।
 ३-ददता। ददद्भ्याम्। आगे “महत्” के सदृश है ॥

इसी “ददत्” के तुल्य “जक्षत्” “जाग्रत्” “दरिद्रत्” “शासत्” और “चकासत्” के रूप भी जानो। जैसे:-

महागयं तरुः=यह बड़ा वृक्ष है। भवते नमस्करोमि=आप को नमस्कार करता हूं। धनं ददाता क्रोधः कृतः=धन देते हुए ने क्रोध किया। जक्षते ब्राह्म-
 णायाऽन्नं परिवेषय=खाते हुए ब्राह्मण के लिये अन्न परोस। जाग्रतश्चोरा बि-

भ्यति=जागते हुए से चोर डरते हैं । दरिद्रतः हास्यं सर्वं कुर्वन्ति—दरिद्र होते की हंसी सब करते हैं । शासति रामे प्रजाः प्रसीदन्ति स्म=राज्य करते हुए रामचन्द्र जी पर प्रजा प्रसन्न होती थीं । चकामसम् रविं पश्य=चमकते हुए सूर्य को देख । हे सहन् गर्वं मा कुरु=बड़े ! गर्व मत कर ॥

पकारान्त “गुप्” शब्द ॥

१-गुप्, गुब् । गुपौ । गुपः । २-गुपम् । गुपौ । गुपः । ३-गुपा । गुब्भ्याम् । गुब्भिः । ४-गुपे । गुब्भ्याम् । गुब्भ्यः । ५-गुपः । गुब्भ्याम् । गुब्भ्यः । ६-गुपः । गुपौः । गुपाम् । ७-गुपि । गुपौः । गुप्सु । सं०-हे गुप्, ब् । हे गुपौ । हे गुपः ॥ इसी प्रकार “असुवृप्” “दृप्” आदि के रूप हैं ॥

शकारान्त “तादृश्” शब्दः—

१-तादृक्, तादृग् । तादृशौ । तादृशः । २-तादृशम् । तादृशौ । तादृशः । ३-तादृशा । तादृभ्याम् । तादृभिः । ४-तादृशे । तादृभ्याम् । तादृभ्यः । ५-तादृशः । तादृभ्याम् । तादृभ्यः । ६-तादृशः । तादृशोः । तादृशाम् । ७-तादृश । तादृशोः । तादृशु । हे तादृक्, ग् । हे तादृशौ । हे तादृशः ॥ इसी प्रकार “यादृश्” “वैदृश्” “कीदृश्” “दिश्” आदि जानो ॥

५८-“विश्” शब्द में भेद इतना है कि—

१-विट्, ड् । विशौ । विशः । २-विशम् । विशौ । विशः । ३-विशा । विड्भ्याम् । विड्भिः । ४-विशे । इत्यादि । ७-विट्सु ॥

५९-“शत्रुनश्” शब्द में अधिक भेद है । जैसे—

१-शत्रुनट्, ह्, ग्, क् । शत्रुनशौ । शत्रुनशः । इत्यादि । ३-द्विव० शत्रुनड्भ्याम्, शत्रुनभ्याम् । इत्यादि ॥

“सर्मस्पृश्” शब्द “तादृश्” के तुल्य है । जैसे—

अयं सर्मस्पृक् शरोऽस्ति=यह सर्म—(मुलायम जगह) भेदी वाण है । धनगु-पम् उत्थापय=धनरक्षक को उठा । “असुवृपो” राक्षसा भवन्ति=“केवल अपना ही प्राण पालने वाले” (असुवृप्) राक्षस होते हैं । दूरे मा देहि=अहङ्कारी के लिये मत दे । तादृशस्तु वैदृक् एव साधु=वैसे से तो ऐसा ही अच्छा । यादृशः पार्श्वे तिष्ठति तादृक् स्वयं भवति=जैसे के पास बैठता है वैसे स्वयं होजाता है । कीदृशि पुरुषे विश्वसितव्यम्=कैसे पुरुष में विश्वास करना चाहिये ? हे विट्

घृतं विक्रीणीये=हे वैश्य घृत बेचता है (तू) । विशो राज्ञो हितं कुर्युः=प्रजापं राजा का हित करें । शत्रुनट् अयं योद्धा=शत्रुनाशक है यह सिपाही ॥

६०-“दृष्ट्” शब्द षकारान्त है पर “तादृश्” के तुल्य रूप हैं ॥

१-रत्नमुट्, ड् । रत्नमुषौ । रत्नमुषः । २-रत्नमुषम् । रत्नमुषौ । रत्नमुषः ।

३-रत्नमुषा । रत्नमुष्टभ्याम् । इत्यादि ॥

“ष” शब्द केवल बहुवचनान्त है । जैसे:-

१-षट्, ड् । २-षट्, ड् । ३-षड्भिः । ४-षड्भ्यः । ५-षड्भ्यः । ६-षट्सु । ७-षट्सु ॥

“पिपटिष्” शब्द ।

१-पिपटीः । पिपटिषौ । पिपटिषः । २-पिपटिषम् । पिपटिषौ । पिपटिषः ।

३-पिपटिषा । पिपटिष्याम् । पिपटिभिः । ४-पिपटिषे । पिपटिष्याम् । पिपटिष्यः ।

५-पिपटिषः । पिपटिष्याम् । पिपटिष्यः । ६-पिपटिषः । पिपटिषोः । पिपटिषाम् ।

७-पिपटिषि । पिपटिषोः । पिपटिषु । सम्बोध प्रथमा के तुल्य है ॥

“चिकीर्ष” शब्द ।

१-चिकीः । चिकीर्षौ । चिकीर्षः । २-चिकीर्षम् । चिकीर्षौ । चिकीर्षः ।

३-चिकीर्षा । चिकीर्ष्याम् । चिकीर्भिः । ४-चिकीर्षे । चिकीर्ष्याम् । चिकीर्ष्यः ।

५-चिकीर्षः । चिकीर्ष्याम् । चिकीर्ष्यः । ६-चिकीर्षः । चिकीर्षोः । चिकीर्षाम् ।

७-चिकीर्षि । चिकीर्षोः । चिकीर्षु । हे चिकीः । हे चिकीर्षौ । हे चिकीर्षः ॥

“विद्वस्” शब्द (विद्वसु के उकार का लोप हुआ है)

१-विद्वान् । विद्वंसौ । विद्वंसः । २-विद्वंसम् । विद्वंसौ । विदुषः ।

३-विदुषा । विद्वद्भ्याम् । विद्वद्भिः । ४-विदुषे । विद्वद्भ्याम् । विद्वद्भ्यः ।

५-विदुषः । विद्वद्भ्याम् । विद्वद्भ्यः । ६-विदुषः । विदुषोः । विदुषाम् ।

७-विदुषि । विदुषोः । विद्वत्सु । सं०-हे विद्वन् । हे विद्वंसौ । हे विद्वंसः ॥

“पुंस” शब्द के रूप—

१-पुनान् । पुमांसौ । पुमांसः । २-पुमांसम् । पुमांसौ । पुंसः ।

३-पुंसा । पुंभ्याम् । पुंभिः । ४-पुंसे । पुंभ्याम् । पुंभ्यः ।

५-पुंसः । पुंभ्याम् । पुंभ्यः । सं०-६-पुंसः । पुंसोः । पुंसाम् ।

७-पुंसि । पुंसोः । पुंसु । हे पुनान् । हे पुमांसौ । हे पुमांसः ॥

“उशनस्” शब्द—

- १-उशना । उशनसौ । उशनसः । २-उशनसम् । उशनसौ । उशनसः ।
 ३-उशनसा । उशनोभ्याम् । उशनोभिः । ४-उशनसे । उशनोभ्याम् । उशनोभ्यः ।
 ५-उशनसः । उशनोभ्याम् । उशनोभ्यः । ६-उशनसः । उशनसोः । उशनसाम् ।
 ७-उशनसि । उशनसोः । उशनस्सु । सं०-हे उशनः, हे उशन, हे उशनन् । हे उशनसौ । हे उशनसः ॥

६१-इसी प्रकार “पुरुदंशस्” और “अनेहस्” शब्द के रूप हैं परन्तु सम्बोधन में केवल एक ही रूप होता है । जैसे—हे पुरुदंशः । हे अनेहः ॥

६२-“वेधस्” शब्द भी “उशनस्” के तुल्य है परन्तु प्रथमा के एकवचन में-वेधाः । ऐसा विसर्गान्त रूप होता है ॥

६३-और “चन्द्रमस्” “सुयशस्” “सृष्टृश्रवस्” आदि सकारान्त शब्द “वेधस्” के ही तुल्य हैं ॥

६४-“अदस्” शब्द सर्वनाम में भेद है । जैसे—

- १-असौ । अस् । अमी । २-अमुस् । अस् । अतून् ।
 ३-अमुना । अमूभ्याम् । अमीभिः । ४-अमुस्मै । अमूभ्याम् । अमीभ्यः ।
 ५-अमुस्मात् । अमूभ्याम् । अमीभ्यः । ६-अमुष्य । अमुयोः । अमीषाम् ।
 ७-अमुष्मिन् । अमुयोः । अमीषु ॥

६५-साधारण (अमुक) अर्थ में “अदस्” शब्द के रूप इस प्रकार होते हैं । जैसे—
 १-अमुकः । अमुकौ । अमुके । २-अमुकम् । अमुकौ । अमुकान् ।
 ३-अमुकेन । अमुकाभ्याम् । अमुकैः । ४-अमुकस्मै । अमुकाभ्याम् । अमुकेभ्यः ।
 ५-अमुकस्मात् । आगे “सर्व” शब्द के तुल्य जानो ॥

यह अकारादि क्रम से प्रायः सब शब्दों की प्रक्रिया (जो पुल्लिङ्ग हैं) दिखाई ॥

उदाहरण—

रत्नमुट् नरकं याति=रत्नघोर नरक को जाता है । षट्सु ऋतुषु वसन्त आनन्दः=उहाँ ऋतुओं में वसन्त आनन्ददायक है । पिपठिषं पाठय=पढ़ना चाहने वाले को पढ़ाव । चिकीर्षः कार्याणि सिद्ध्यन्त्येव=करना चाहने वाले के काम सिद्ध ही होते हैं । विदुषां भूषणं विद्या=विद्वानों का भूषण विद्या है । पुं-

सु धैर्यं भवति=पुरुषों में धीरज होता है । उशनसः दैत्याः शिक्षां गृह्णन्तिस्म=शुक्राचार्य से दैत्यों ने शिक्षा को ग्रहण किया था । अनेहा पुनर्नाऽऽयाति=समय फिर नहीं आता । वेधाः देवानां मध्ये प्रथमः=ब्रह्मा देवतों के बीच में पहिला है । चन्द्रमसः कराः शीतलाः सन्ति=चन्द्रमा की किरणें ठण्डी हैं । सुयशसां यश एव धनम्=नेकनामों की कीर्ति ही धन है । वृद्धश्रवाः स्वर्गराजोऽस्ति=वृन् स्वर्ग का राजा है । अमुं देवदारुं पुरः पश्य=इस देवदारु (वृक्षविशेष) को आगे देख । अमुकस्मै दीयताम्-फलाने के लिये दीजिये ॥

इति पुल्लिङ्ग स्वरूपम्

अथ स्त्रीलिङ्गस्वरूपनिरूपणम्—

आप् प्रत्ययान्त “गङ्गा” शब्दः—

- १-गङ्गा । गङ्गे । गङ्गाः । २-गङ्गाम् । गङ्गे । गङ्गाः ।
- ३-गङ्गया । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभिः । ४-गङ्गायै । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभ्यः ।
- ५-गङ्गायाः । गङ्गाभ्याम् । गङ्गाभ्यः । ६-गङ्गायाः । गङ्गयोः । गङ्गानाम् ।
- ७-गङ्गायाम् । गङ्गयोः । गङ्गासु । हे गङ्गे । हे गङ्गे । हे गङ्गाः ।

इसी प्रकार दुर्गा, अम्बिका, रमा, शिवा, सीता, आदि के रूप जानो ॥

“सर्वा” शब्द सर्वनाम—

- १-सर्वा । सर्वे । सर्वाः । २-सर्वाम् । सर्वे । सर्वाः ।
- ३-सर्वया । सर्वाभ्याम् । सर्वाभिः । ४-सर्वस्यै । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः ।
- ५-सर्वस्याः । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः । ६-सर्वस्याः । सर्वयोः । सर्वासाम् ।
- ७-सर्वस्याम् । सर्वयोः । सर्वासु । सम्बोधन—गङ्गावत् ॥

इसी प्रकार विश्वा, उभा, अन्या, अन्यतरा, इतरा आदि के रूप जानो (जो शब्द पुल्लिङ्ग सर्वनाम में गिनाये हैं “एका”पर्यन्त)

६६-जब दूसरे शब्द से मिलकर सर्वनाम आता है तो कहीं २ गङ्गा के तुल्य भी रूप, स्त्रीलिङ्ग में होते हैं और पुल्लिङ्ग में राम शब्द के तुल्य । जैसे—उत्तरपूर्वस्यै, उत्तरपूर्वायै । इत्यादि ॥

द्वितीया, तृतीया में भी ऐसे ही दो २ रूप होते हैं ॥

६७-“जरा” शब्द को गङ्गा से भेद है । जैसे—

१-जरा । जरसी, जरे । जरसः, जराः । २-जरसम्, जराम् । जरसी, जरे । जरसः, जराः । ३-जरसा, जरया । जराभ्याम् । जराभिः । ४-जरसे, जरयै । जराभ्याम् जराभ्यः । ५-जरसः, जरायाः । जराभ्याम् । जराभ्यः । ६-जरसः, जरायाः । जरसी, जरयोः । जरसाम्, जराणाम् । ७-जरसि, जरायाम् । जरसी, जरयोः । जरासु । सं० हे जरे । हे जरसी, हे जरे । हे जरसः, हे जराः ॥

गोपा, विश्वपा, निधिपा, आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द भी "पुलिङ्ग विश्वपा" शब्द के ही तुल्य हैं ॥

इकारान्त "मति" शब्द । जैसे:—

१-मतिः । मती । मतयः । २-मतिम् । मती । मतीः । ३-मत्या । मतिभ्याम् । मतिभिः । ४-मत्यै, मतये । मतिभ्याम् । मतिभ्यः । ५-मत्याः, मतेः । मतिभ्याम् । मतिभ्यः । ६-मत्याः, मतेः । मत्योः । मतीनाम् । ७-मत्याम्, मती । मत्योः । मतिषु । सं०-हे मते । हे मती । हे मतयः ॥

इसी प्रकार गति, धृति, बुद्धि, रुचि, कृति, भूति, रति, शुद्धि, भक्ति, पक्कि, मूर्त्ति, कीर्त्ति, ख्याति आदि शब्दों को भी जानो ॥

उदाहरण—

हिमवतो गङ्गाऽवतरति=हिमवान् (पर्वत) से गङ्गा उतरती है । सर्वा गृहस्यसामग्रीं कः संस्करोति=सब, गृहस्यसामग्री को कौन संस्कारकरता है । विश्वया रुच्या ईश्वरं चिन्तय=सारी रुचि से ईश्वर को यादकर । उभे कृती कस्य स्तः=दोनों का कृत कौनकी हैं । अन्यस्यै कन्यायै दीयताम्=और कन्या के लिये दीजिये । अष्टासु अन्यतरा रुक्मिणी भवति=आठों में कोई एक रुक्मिणी है । सर्वाभ्य इतरा यशोदा प्रतीयते=सब से निराली यशोदा प्रतीतहोती है । एकस्याः ललनायाः भाषणं साधुतममस्ति=एक स्त्री का बयान बहुत अच्छा है । उत्तरपूर्वस्यां दिशि धूमकेतुरुदेति=उत्तरऔरपूर्व (दिशा) में पूंछलतारा उगता है । उत्तरपूर्वायां उषेष्टे मासे सूर्य्य उदेति=उत्तरपूर्व (दिशा) में उषेष्ट मास में सूर्य्य उगता है । द्वितीयस्यां तृतीयायां वा कक्षायां रक्षको जागर्त्ति=दूसरी या तीसरी कक्षा में चौकीदार जागता है । जरया पलितो देवदत्तः=बुढ़ापे से देवदत्त पलित (जिस के शिरके बाल पकगये) है । जरसि पितृन् सेवस्व=बुढ़ापे में पितरों की सेवाकर । गोपे जलं देहि=गौपालनेवाली के लिये जल दे । ईश्वरस्य शक्ति-

विश्वपाञ्चस्ति=ईश्वर की शक्ति सयकीरक्षिका है । क्वचिद् गृहस्थे स्त्रियो निधिपाः भवन्ति=किसी २ गृहस्थ में स्त्रियां धनरक्षिका होती हैं । वृद्धस्वे मतिः प्रायः नश्यति=बुढ़ापे में बुद्धि बहुधा नष्टहोजाती है । गतिरपि शिथिला जायते=चाल भी ढीली होजाती है । धृतिं धर्मस्य लक्षणं जानीहि=धैर्य को धर्म का लक्षण जान । बुद्ध्या विचारय=बुद्धि से विचार । रुचिरधिकं न भक्षणीयम्=रुचि से अधिक न खाना चाहिये । साधोः कृतिं पश्य=साधु की करनी को देख । भूत्यै यतस्व=ऐश्वर्य के लिये यत्नकर । रतेर्विरम=रति से विरामकर । ख्यात्यै लोको मिषते=यश के लिये संसार मरता है । इत्यादि और भी ॥

६८—“त्रि” शब्द बहुवचनान्त है और यहां स्त्रीलिङ्ग में उस के रूप ऐसे होते हैं । जैसे:-

१-तिस्रः । २-तिस्रः । ३-तिस्रभिः । ४-तिस्रभ्यः । ५-तिस्रभ्यः । ६-तिस्रणाम् । ७-तिस्रषु ॥

उदाहरण—

तिस्रः कन्याः क्रीडन्ति=तीन कन्या खेलती हैं । तिस्रषु कन्यासु नास्ति दोषः=तीनों कन्याओं में दोष नहीं है । इत्यादि ॥

६९—“चतुर्” शब्द रेफान्त है पर रूप “त्रि” शब्द के तुल्य हैं । जैसे—
१-चतस्रः । २-चतस्रः । ३-चतस्रभिः । ४-चतस्रभ्यः । ५-चतस्रभ्यः । ६-चतस्रणाम् । ७-चतस्रषु ॥

“द्वि” शब्दः—

१-द्वे । २-द्वे । ३-द्वाभ्याम् । ४-द्वाभ्याम् । ५-द्वाभ्याम् । ६-द्वयोः । ७-द्वयोः ॥

(ईप्) ईकारान्त “गौरी” शब्दः—

१-गौरी । गौर्यै । गौर्यः । २-गौरीम् । गौर्यै । गौरीः । ३-गौर्या । गौरीभ्याम् । गौरीभिः । ४-गौर्यै । गौरीभ्याम् । गौरीभ्यः । ५-गौर्याः । गौरीभ्याम् । गौरीभ्यः । ६-गौर्याः । गौर्याः । गौरीणाम् । ७-गौर्याम् । गौर्याः । गौरीषु । सम्बोध—हे गौरि । हे गौर्यै । हेगौर्यः ॥

इसी प्रकार नदी, गोमती, देवी, काली आदि के रूप जानो ॥

७०—“लक्ष्मी” “तरी” “तन्त्री” आदि में इतना भेद है कि प्रथमा के एकवचन में विसर्गान्त रहता है । जैसे—१-लक्ष्मीः । १-तरीः । १-तन्त्रीः । इत्यादि । शेष रूप “गौरी” के तुल्य हैं ॥

७१-“स्त्री” शब्द की लक्ष्मी शब्द से भेद है । जैसे—

- १-स्त्री । स्त्रियौ । स्त्रियः । २-स्त्रियम्, स्त्रीम् । स्त्रियौ । स्त्रियः, स्त्रीः ।
 ३-स्त्रिया । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभिः । ४-स्त्रियै । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभ्यः ।
 ५-स्त्रियाः । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभ्यः । ६-स्त्रियाः । स्त्रियोः । स्त्रीणाम् ।
 ७-स्त्रियाम् । स्त्रियोः । स्त्रीषु । सम्बोधन-हे स्त्रि । हे स्त्रियौ । हे स्त्रियः ॥

७२-“श्री” शब्द को स्त्री से भी भेद है । जैसे—

- १-श्रीः । श्रियौ । श्रियः । २-श्रियम् । श्रियौ । श्रियः ।
 ३-श्रिया । श्रीभ्याम् । श्रीभिः । ४-श्रियै, श्रिये । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः ।
 ५-श्रियाः, श्रियः । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः । ६-श्रियाः, श्रियः । श्रियोः । श्रीणाम् ।
 ७-श्रियि, श्रियाम् । श्रियोः । श्रीषु । सम्बोधन-हे श्रीः । हे श्रियौ । हे श्रियः ॥

उकारान्त “धेनु” शब्दः—

- १-धेनुः । धेनू । धेनवः । २-धेनुम् । धेनू । धेनूः ।
 ३-धेन्वा । धेनुभ्याम् । धेनुभिः । ४-धेन्वै, धेनवे । धेनुभ्याम् । धेनुभ्यः ।
 ५-धेन्वाः, धेनोः । धेनुभ्याम् । धेनुभ्यः । ६-धेन्वाः, धेनोः । धेन्वोः ।
 धेनूनाम् । ७-धेन्वाम्, धेनी । धेन्वोः । धेनुषु । हे धेनो । हे धेनू । हे धेनवः ॥

“क्रोष्ट्री” शब्द “गौरी” शब्द के सदृश है ॥

“भ्रू” शब्द “श्री” के तुल्य है ॥

“स्वयम्भू” शब्द जैसे पुंलिङ्ग में लिखा है वैसे ही यहां भी जानो ॥

७३-“स्वसृ” शब्द पुंलिङ्ग “घातृ” के तुल्य है केवल द्वितीया बहुवचन में इतना भेद है कि-स्वसृः ॥

७४-“मातृ” शब्द पितृ के तुल्य है केवल द्वितीया बहुवचन में इतना भेद है । जैसे-मातृः ॥

“द्यौ” शब्द “गो” के तुल्य है । “रै” शब्द पुंलिङ्ग के तुल्य है ॥

“नी” शब्द “लौ” के तुल्य है तथा और शब्द भी जो पुंलिङ्ग श्रीकारान्त हैं स्त्रीलिङ्ग में भी उसी प्रकार हैं ॥

हकारान्त “उपानह” शब्द—

- १-उपानत्, उपानद् । उपानहौ । उपानहः । २-उपानहम् । उपानहौ । उपानहः ।
 ३-उपानहा । उपानद्भ्याम् । उपानद्भिः । ४-उपानहे । उपानद्भ्याम् । उपानद्भ्यः ।

५-उपानहः । उपानद्भ्याम् । उपानद्भ्यः । ६-उपानहः । उपानहोः । उपानहाम् ।

७-उपानहि । उपानहोः । उपानत्सु । सं०-हे उपानत्, इ ॥

१-उष्णिग्, क् । उष्णिही । उष्णिहः । इत्यादि । ३-उष्णिग्भ्याम् । उष्णिग्भिः ।

४-उष्णिग्भ्यः । ७-उष्णिस्तु । शेष बीच २ के रूप उपानह् के सदृश हैं ॥

“दिव्” शब्द—

१-द्यौः । दिवौ । दिवः । २-दिवम् । दिवौ । दिवः ।

३-दिवा । द्युभ्याम् । द्युभिः । ४-दिवे । द्युभ्याम् । द्युभ्यः ।

५-दिवः । द्युभ्याम् । द्युभ्यः । ६-दिवः । दिवोः । दिवाम् ।

७-दिवि । दिवोः । द्युषु । सं०-हे द्यौः । हे दिवौ । हे दिवः ॥

“गिर्” शब्दः—१-गीः । गिरी । गिरः । २-गिरम् । गिरी । गिरः ।

३-गिरा । गीर्भ्याम् । गीर्भिः । ४-गिरे । गीर्भ्याम् । इत्यादि । ७-गीर्षु ॥

“पुर्” शब्दः—

१-पूः । पुरौ । पुरः । ३, ४, ५-पूर्याम् । ७-पूर्यु । इत्यादि ॥

उदाहरण—

चतसृणां दिशां मध्ये तमो व्याप्तम्=चारों दिशाओं के बीच में अन्धकार व्याप्त है । द्वे गती स्तो मनस्विनाम्=दो गतियां हैं धीरों की । गौर्या शिवः आयाति=गौरी के साथ शिव आता है । नद्याः कूलं विघटयति पूरः=नदी के किनारे को तोड़ना है बाढ़ । गोतम्यै देहि=गोतमी के लिये दे । हे देवि किमहं करवाणि=देवि मैं क्या करूँ । कालीं पश्य=काली को देख । व्यापारे लक्ष्मीर्निवसति=व्यापार में लक्ष्मी रहती है । तरयामुपविश्य पारं गच्छ=नाव में बैठकर पार को चल । तन्त्रीं वादय=सितार को बजा । स्त्रियो भीरवः सन्ति=स्त्रियां डरपोक हैं । अग्रे यतस्व=नक्षत्री के लिये यत्नकर । धेनूनां पयो मधुरमस्ति=गौबों का दुग्ध मीठा है । क्रोष्टूयाः खरतरः शब्दः=गिद्धों का कड़ा शब्द है । स्त्रीणाम् धुषी प्रशस्यते=स्त्रियों की भौंहें प्रशंसाकी जाती हैं । स्वयम्भुवः प्रकृत्याः कार्यं जगत्=अनादि प्रकृति का कार्य जगत् है । स्वसुः पुत्रोऽयम्=यह बहिन का बेटा है । मातुः, मातरं स्मर=माता को स्मरणकर । दिवि चन्द्रः प्रकाशते=आकाश में चन्द्र प्रकाशता है । नावमारुह=नाव को चढ़ । उपानहं प्रहारः=जूतों की चोट । उष्णिहाधीते=उष्णिग् (छन्द) के साथ

पड़ता है । शरदि द्यौः* स्वच्छा भवति=शरद् में आकाश स्वच्छ होता है ॥

पक्षिणां गिरः शृणु=पक्षियों की वाणियों की सुन । आसु पूर्ण के निवसन्ति=इन पुरियों में कौन बसते हैं ॥

“किम्” शब्द सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग में “सर्वा” के तुल्य है । जैसे :-

- १-का । के । काः । २-काम् । के । काः । ३-कया । काभ्याम् । काभिः ।
४-कस्यै । काभ्याम् । काभ्यः । ५-कस्याः । इत्यादि ॥

“इदम्” शब्द सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग :-

- १-इयम् । इमे । इमाः । २-इमाम् । इमे । इमाः ।
३-अनया । आभ्याम् । आभिः । ४-अस्यै । आभ्याम् । आभ्यः ।
५-अस्याः । आभ्याम् । आभ्यः । ६-अनयोः । आसाम् ।
७-अस्याम् । अनयोः । आसु ॥

त्यद्, तद्, यद्, एतद्, ये सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग में:-

- १-स्या । त्ये । त्याः । २-त्याम् । त्ये । त्याः । आगे सर्वा के तुल्य ॥
१-सा । ते । ताः । २-ताम् । ते । ताः । आगे सर्वा के तुल्य ॥
१-या । ये । याः । २-याम् । ये । याः । इत्यादि ॥
१-एषा । एते । एताः । २-एनाम्, एताम् । एते, एने । एताः । एनाः ।
३-एतया, एनया । ६, ७-एतयोः, एनयोः । शेष सर्वा के तुल्य ॥

चकारान्त “वाच्” शब्द:-

- १-वाक्, ग् । वाचौ । वाचः । २-वाचम् । वाचौ । वाचः । ३-वाचा । वाभ्याम् ।
वाभिः । ४-वाचे । वाभ्याम् । वाभ्यः । ५-वाचः । वाभ्याम् । वाभ्यः ।
६-वाचः । वाचोः । वाचाम् । ७-वाचि । वाचोः । वास्तु । हे वाक्, ग् ।
इसी प्रकार “त्वच्” शब्द भी जानो ॥

पकारान्त “अप्” शब्द केवल बहुवचन में आता है (जल का नाम है)

- १-आपः । २-अपः । ३-अद्भिः । ४-अद्भ्यः । ५-अद्भ्यः । ६-अपाम् । ७-अप्सु ॥

शकारान्त “दिश्” शब्द “वाच्” के तुल्य है । जैसे:-

- १-दिक्, दिग् । दिशी । दिशः । २-दिशम् । दिशी । इत्यादि ॥

इसी प्रकार “दृश्” शब्द भी जानो ॥

पकारान्त “त्विष्” शब्दः—१-त्विट्, त्विड् । त्विषी । त्विषः । आगे “रत्तमुष्” (देखो पृष्ठ ३०) के तुल्य जानो ॥

“ सजुष्” और “आशिष्” शब्दों के रूप “पिपठिष्” के तुल्य (देखो पृष्ठ ३०) जानो ॥

सकारान्त “अदस्” शब्द सर्वनामः—

१-असी । अमू । अमूः । २-अमूम् । अमू । अमूः । ३-अमुया । अमूभ्याम् । अमूभिः ।

४-अमुष्यै । अमूभ्याम् । अमूभ्यः । ५-अमुष्याः । अमूभ्याम् । अमूभ्यः ।

६-अमुष्याः । अमुयोः । असपायम् । ७-अमुष्याम् । अमुयोः । अमूषु ॥

उदाहरण=

सुपुत्रोऽयं कस्याः कुक्षौ जातः=यह सुपुत्र किम की कुक्षि में उत्पन्न हुआ है ? । अस्याः साख्याः=इस माध्वी (पतिव्रता) की । यस्याः देव्याः कन्येऽयं सा क्वाऽस्ति? =जिस देवी की यह कन्या है वह कहां है ? । एषा अस्ति=यह है । तथा किं प्राप्तम्=उस ने क्या पाया ? । एताः कन्याः=ये कन्यायें । वाच्यार्था नियताः सर्वे=वाणी में अर्थ, नियत हैं सब । वृक्षस्य त्वचमुत्पाटय=वृक्ष की त्वचा (चक्रण) को उधेड़ । अद्भिर्गात्राणि शुद्भरन्ति=जल से शरीर शुद्ध होते हैं । पूर्व-स्यां दिशि सूर्य उदेति=पूर्वदिशा में सूर्य उगता है । दृशं वर्धय=दृष्टि को बढ़ा । त्विषो विभ्यति=तेज से डरते हैं । आशिषां पात्रम्=असीसों का पात्र । अमूपां महिषीणां अहोभाग्यम्=इन रानियों का अहोभाग्य । अमुष्यै पुत्रमीश्वरो ददा-तु=इस के लिये पुत्र ईश्वर देवे ॥

इति सङ्क्षेपतः स्त्रीलिङ्गशब्दनिरूपणम् ॥

अथ नपुंसकलिङ्गशब्दनिरूपणम् ॥

अकारान्त “ज्ञान” शब्दः—१-ज्ञानम् । ज्ञाने । ज्ञानानि । आगे गृहशब्द (देखो प्रथमपुस्तक) के तुल्य और समस्त अकारान्त नपुंसक इसी के तुल्य हैं । जैसे-वनम् । धनम् । फलम् । पुष्पम् । मन्दिरम् । इत्यादि ॥

७५-केवल इतरप्रत्ययवाले, इतमप्रत्ययवाले, अन्य, अन्यतर और इतर इन ५ सर्वनामों में प्रथमा के एकवचन में इतना भेद हैः—

१-कतरत् । कतमत् । अन्यत् । अन्यतरत् । इतरत् । आगे गृहशब्द के तुल्य हैं ॥

श्रीपा, मधुपा, विश्वपा आदि आकारान्त भी नपुंसक में ह्रस्वान्तहोकर—

१-श्रीपम् । श्रीपे । श्रीपानि । १-मधुपम् । मधुपे । मधुपानि । इत्यादि गृह-
शब्द के तुल्य ही होजाते हैं ॥

इकारान्त «वारि» (जल) शब्द:-१-वारि । वारिणी । वारीणि । २-वारि ।
वारिणी । वारीणि । ३-वारिणा । वारिभ्याम् । वारिभिः । ४-वारिणे । वारिभ्याम् ।
वारिभ्यः । ५-वारिणः । वारिभ्याम् । वारिभ्यः । ६-वारिणः । वारिणोः । वारीणाम् ।
७-वारिणि । वारिणोः । वारिणु । हे वारे, हे वारि । हे वारिणी । हे वारीणि ॥

७६-इसी प्रकार «सुधी» शब्द भी ह्रस्व होकर जानना चाहिये परन्तु
तृतीयादि विभक्तियों में पुल्लिङ्ग (देखो पृष्ठ १७ पं० २०) तुल्य ही होता है ॥

७७-इकारान्तों में केवल अस्थि, दधि, सक्थि और अक्षि इन चार शब्दों
का तृतीयादि विभक्तियों में भेद है । जैसे-३-अस्थ्ना । दध्ना । सक्थ्ना । अक्ष्णा ।
४-अस्थने । दधने । सक्थने । अक्षणे । ५वर्द-अस्थुः । दधुः । सक्थुः । अक्षुः ।
६ । ७-अस्थि, अस्थनि । अस्थोः । दधि, दधनि । दधोः । सक्थि, सक्थनि ।
सक्थोः । अक्षि, अक्षणि । अक्षोः । शेष सब रूप वारि शब्द के तुल्य जानो ॥

उकारान्त «मधु» शब्द वारि शब्द के तुल्य है ॥

७८-«सुलु» शब्द ह्रस्व होकर सुधी के तुल्य हो जाता है ॥

ऋकारान्त «धातृ» शब्द:-१-धातृ । धातृणी । धातृणि । २-धातृ । धातृणी ।
धातृणि । ३-धातृणा । इत्यादि वारि शब्द के तुल्य जानो । ऐसे ही «ज्ञातृ» आदि भी ।

७९-«प्रद्यु» और «सुनु» आदि भी ह्रस्व होकर मधु के तुल्य हैं ॥

८०-ऐकारान्त «प्ररे» को ह्रस्व होकर-प्ररि होजाता है और वारि के तुल्य
होता है केवल ३-४-५-प्रराभ्याम् । ३-प्रराभिः । ४-५-प्रराभ्यः । ७-प्ररासु ।
इतना भेद है ॥

उदाहरण-ऋते ज्ञानात् मुक्तिः=सिवाय ज्ञान से मुक्ति नहीं । धनानि के
न सेवन्ते=धनों को कौन नहीं सेवा करते । वनानि दहन्त्यग्निः=वनों को फूँकता
है अग्नि । द्वे फले गृहाण=दो फल ले । कतरत् कुलं सुशीलम्=कौनसा कुल
सुशील है । कर्मणोऽन्यदेव फलम्=कर्म का अन्य ही फल है । द्वयोरन्यतरत् फलं
गृहाण=दो में किसी एक फल को लेले । अहमितरदेव ग्रहीष्यामि=मैं और ही
लूंगा । विश्वपदैशतं किमस्ति=विश्वरक्षक दैवत कौन है । ब्रह्मैव=ब्रह्म ही है ।
मधुपानि अमरकुलानि रुवन्ति=मधु पीने वाले भौरों के-भुल्ल बोलते हैं । वारी-
णि वर्षन्ति=जल वर्षते हैं । वारिभिरापूरितं नभः=जलों से भरगया आकाश ।

एषां कुलमेव सुधि=इन का कुल ही सुबुद्धि है । अस्ण्यां संयोगः=हड्डियों का जोड़ । दधि पित्र=दही पी । अक्षिणी चन्मालय=२ आखें खोल । अस्मिन् आ-
घातो जातः=हड्डी में चोट लगी है । सर्पिः दुग्धं भैरेयं वा मधु वदन्ति=घी,
दूध वा मदिरा को मधु करते हैं । सुलु भृत्यकुलम्=अच्छा काटने वाला नौकरों
का झुण्ड । एकं ब्रह्म जगतो धातृ वसन्ते=एक ब्रह्म जगत् का धर्ता है । तदेव
सर्वस्य ज्ञातृ=वही सब का जानने वाला ॥

हकारान्त "स्वनडुह्" शब्दः—१=स्वनडुत्, स्वनडुह् । स्वनडुही । स्वनडुहि ।
इसी प्रकार द्वितीया में । और तृतीया से लेके पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो (देखो पृष्ठ २२)

रेफान्त "वार" शब्दः—१=वाः । वारी । वारि । इसी प्रकार द्वितीयावि-
भक्ति भी । ३=वारा । वार्याम् । वारिभिः । ४=वारे । वार्याम् । वार्यः ।
५=वारः । वार्याम् । इत्यादि ॥

"चतुर्" शब्द बहुवचन में ही होता है—१=चत्वारि । २=चत्वारि । आगे
पुल्लिङ्ग के तुल्य (देखो पृष्ठ २२) हैं ॥

मकारान्त "किम्" शब्द सर्वनाम—१=किम् । के । कानि । २=किम् । के ।
कानि । आगे पुल्लिङ्ग सर्वशब्द के तुल्य (देखो पृष्ठ २२) है ॥

१=इदम् । इमे । इमानि । २=इदम्, एनत् । इमे, एने । इमानि, एनानि ।
आगे पुल्लिङ्ग (देखो पृष्ठ २३) के तुल्य है ॥

नकारान्त "अहन्" शब्द—१=अहः । अह्नी, अहनी । अहानि । २=अहः ।
अह्नी, अहनी । अहानि । ३=अह्ना । अहोभ्याम् । अहोभिः । ४=अह्ने । अहो-
भ्याम् । अहोभ्यः । ५=अहः । अहोभ्याम् । अहोभ्यः । ६=अहः । अहोः । अहाम् ।
७=अह्नि, अहनि । अहोः । अहस्सु । सम्बन्ध ० प्रथमा तुल्य है ॥

"दशिडन्" शब्दः—१=दशिड । दशिडनी । दशिडिनि । २=दशिड । दशिडनी ।
दशिडिनि । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है ॥

"सुपथिन्" शब्दः—१=सुपथि । सुपथी । सुपथानि । २=सुपथि । सुपथी ।
सुपथानि । आगे पुल्लिङ्ग पथिन् शब्द (देखो पृष्ठ २४) के तुल्य जानो ॥

दकारान्त "तद्" शब्द सर्वनाम—१=तद् । ते । तानि । २=तद् । ते ।
तानि । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है । इसी प्रकार त्यद्, यद्, एतद्, भी जानो ॥

तकारान्त "शकृत्" शब्द—१=शकृत् । शकृती । शकृन्ति । २=शकृत् । शकृती ।
शकृन्ति । आगे महत् शब्द (देखो पृष्ठ २८) के तुल्य जानो ॥

"ददत्" शब्दः—१=ददत् । ददती । ददति, ददन्ति । २=ददत् । ददती ।
ददति, ददन्ति । आगे पुल्लिङ्ग के तुल्य है इसी प्रकार शासत्, चकासत्, जायत्
जसत् और दरिद्रत् के रूप भी जानो ॥

सकारान्त-“धनुष्” शब्दः-१-धनुः । धनुषी । धनूषि । २-धनुः । धनुषी । धनूषि । ३-धनुषा । धनुभ्याम् । धनुभिः । ४-धनुषे । धनुभ्याम् । धनुभ्यः । ५-धनुषः । धनुभ्याम् । धनुभ्यः । ६-धनुषः । धनुषी । धनुषाम् । ७-धनुषि । धनुषोः । धनुषु ॥

स्वनहुत् यानं गच्छति-अच्छे बैल वाला यान (रथ) जाता है । वारि निम-
ग्नो बालः=जल में डूब गया बालक । चत्वारि वेदपुस्तकानि सन्ति=वेद पुस्तकें
चार हैं । कानि २ ?=कौन २ ? । ऋग्यजुःसामाथर्वनामकानि=ऋग् १ यजुः २
साम ३ अथर्व ४ नामक । इमानि धर्मपुस्तकानि सन्ति=ये धर्म-पुस्तक हैं ।
अह्नी व्यतीते=दो दिन व्यतीतगये । दण्डीनि यातिकुनानि शोभन्ते=दण्ड वाले
न्यासियों के झुण्ड सुहाते हैं । वनान्यपि सुपन्थानि जातानि=वन भी सुमा-
वाले होगये । तादृशं व्यर्थम्=यह दिन व्यर्थ है । एतान्यहानि उष्णानि=ये दिन
गर्म हैं । यानि दिनानि गतानि तानि पुनर्नाऽऽगमिष्यन्ति=जो दिन गये वे फिर
न आवेंगे । तस्य शकत् अवरुद्धम्=उस का दस्त (पाखाना) रुक गया । अमर्यं
महत् पापम्=भूँठ बड़ा पाप है । गृहं हर्षं ददत् प्रतीयते=घर हर्ष देता प्रतीत
होता है । राजकुलं शासत् महीयते=हुकूमत करता हुआ राजकुल सहसा पाता
है । नकामत् रुक्मनयं हर्म्यं पश्य=चमकते हुए सुनहरे महल को देख । जायत्
उयोतिः पश्य=जागती उयोति को देख । जक्षत् वानरकुलं त्वरयति=खाते हुए
वानरों का झुंड जल्दी करता है । सम्प्रति गृहाणि दरिद्रान्ति सन्ति=आज कल
घर गरीब होते हुए हैं । ऐन्द्रं धनुः पश्य=इन्द्र के धनुष (अर्थात् सूर्य का प्रकाश
जलकणों पर पड़ के उत्पन्न हुए) को देख । धनुषि वाणः सन्धीयते=धनुष में
वाण (तीर) लगाया जाता है ।

सकारान्त “पयस्” शब्द ।

१=पयः । पयसी । पयांसि २-पयः । पयसी पयांसि । ३-पयोभ्याम् आगे
पुंलिङ्ग “वेधस्” के तुल्य है । (देखो पृष्ठ ३१) ॥

“अदस्” शब्दः-१-अदः । अमू । अमूनि । २-अदः । अमू । अमूनि ।
आगे पुंलिङ्ग के तुल्य है । (देखो पृष्ठ ३१) ॥

पयो वर्धन्ति जलदाः=बादल जल वर्धते हैं । पयसा कमलानि शोभन्ते=जल
से कमल सुहाते हैं । निर्मलमदः पयः=यह जल निर्मल है । अमूनि वनानि शु-
ष्कानि=ये वन सूख गये । अमू सरसी स्वच्छे स्तः=ये दो तालाब स्वच्छ हैं इत्यादि ॥

इति नपुंसकलिङ्गस्वरूपनिरूपणम् समाप्तोऽयं

तृतीयश्च भागः ॥

नीचे लिखे पुस्तकादि

पं० छुट्टनलाल स्वामी परीक्षितगढ जि० मेरठ से मिलेंगे ॥

अगादिभाष्यभूमिकेन्द्रपरागे प्रथमोऽंशः -) ॥	तारीखदुनियां (नागरी) =)
तथा द्वितीयोऽंशः -) ॥	यज्ञोपवीतशङ्कासमाधि -)
भजनेन्दु -)	सात उपनिषद् भाषा और संस्कृत भाष्य ३)
भजनप्रकाश)।	पृथक् २ ईश ३) केन १) कठ ॥) प्रश्न ॥=)
संस्कृत भाषा प्रथमं पु० ॥	मुण्डक ॥) माण्डूक्य ३) तैत्तिरीय ॥)
तथा द्वितीयं पु० -)।	सात शिक्षा ॥=)
वेश्यानाटक उर्दू =) ॥	कामिनीकल्पद्रुम ॥)
रामायण का आखड़ा पहली मार)।	कुमारीभूषण -)
किराणाशास्त्रार्थ =)	बिबुरनीति मूल ३)
रामचन्द्रदर्शन)१२॥	दशोपनिषद् मूल १-)
कलियुग लीला)१२॥	चाणक्यसारमूल ॥)
दमयन्तीस्वयंवर नाटक ३)	जीवनयात्रा ३)
अष्टाध्यायी मूल ३)	सीताचरित्र नावल (नागरी) प्र० भाग ॥)
भर्तृहरिनीतिशतक भाषा टीकासहित ३)	तथा उर्दू चारों भाग १॥) प्रति भाग ॥)
गणरात्रमहोदधि १॥) कोष+	आयुर्वेदशब्दार्णव १) (वैद्यकोष)

कमीशन—

बुकट्टे लेने वालों को ४) में ५) का, ७) में १०) का, और २०) में ३०) का माल दिया जावेगा ॥ हाकव्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है ॥

विधिपूर्वक बने हुए यज्ञोपवीत ॥

रेशम के अखल दर्जे के २० का मूल्य ५)	
” दूसरे ” ” २)	
मूत के अखल दर्जे ” १)	
” दूसरे ” ॥)	
” तीसरे ” १-)	

